जनजाति गौरव दिवस पर राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा-हिंसा छोड़कर मुख्य धारा से जुड़ रहे नक्सली
- 14

आरबीआई गवर्नर मल्होत्रा बोले- केंद्रीय बैंक के पास विदेशी मुद्रा का अच्छा भंडार
- 14

जेसीएम न्यायसंगत जलवायु कार्रवाई के लिए बना सबसे महत्वपूर्ण साधन
- 15

गिल गुवाहाटी टेस्ट नहीं खेल पाएंगे पंत करेंगे कप्तानी
- 16

6th वार्षिकोत्सव विशेषांक
मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

मुरादाबाद

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण
लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा 02:47 उपरांत द्वितीया विक्रम संवत 2082

शुक्रवार, 21 नवंबर 2025, वर्ष 6, अंक 234, पृष्ठ 16 ■ मूल्य 6 रुपये

बिहार में 10वीं बार नीतीश सरकार

मुख्यमंत्री पद की ली शपथ, कैबिनेट में 26 मंत्री शामिल, इनमें से 3 महिलाएं

- मंत्रिमंडल में भाजपा के 14, जदयू के 8, लोजपा के 2 मंत्री शामिल
- शपथ में प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री अमित शाह भी रहे मौजूद

पटना, एजेंसी

जनता दल (यूनाइटेड) के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार ने गुरुवार को एक भव्य समारोह में बिहार के मुख्यमंत्री पद की रिकॉर्ड 10वीं बार शपथ ली। शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सहित कई गणमान्य नेता उपस्थित रहे।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा और हाल ही में संपन्न हुए विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी के प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान भी इस अवसर पर मौजूद थे। राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने गांधी मैदान में आयोजित कार्यक्रम में कुमार और 26 सदस्यीय मंत्रिपरिषद को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। कुमार ने बुधवार को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देकर राज्यपाल से नयी सरकार बनाने का दावा पेश किया था।

मोदी ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, बिहार सरकार में मंत्रियों के रूप में शपथ लेने वाले सभी साथियों को हार्दिक बधाई। यह समर्पित नेताओं की शानदार टीम है, जो बिहार को नयी ऊंचाइयों पर ले जाएगी। सभी को मेरी शुभकामनाएं। समारोह के अंत में प्रधानमंत्री ने अपने चिरपरिचित अंदाज में 'गमछा' हवा में लहराकर उपस्थित जनसमूह का उत्साह बढ़ाया। शपथ ग्रहण समारोह के लिए गांधी मैदान में विशाल मंच तैयार किया गया था, जहां राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन(राजग) शासित कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भी शिरकत की।

इनमें आंध्र प्रदेश के एन चंद्रबाबू नायडू, उत्तर प्रदेश के योगी आदित्यनाथ, महाराष्ट्र के देवेंद्र फडणवीस, असम के हिमंत विश्व शर्मा और दिल्ली की रेखा गुप्ता शामिल थीं। शपथ लेने वालों में भाजपा विधायक दल के नेता सम्राट चौधरी और उपनेता विजय कुमार सिन्हा शामिल थे, जो पिछली राजग सरकार में उपमुख्यमंत्री थे। मंत्रिमंडल में कम से कम तीन मंत्री विधान परिषद के सदस्य हैं जिनमें जदयू के राष्ट्रीय महासचिव और मुख्यमंत्री के विश्वस्त अशोक चौधरी, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल और हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा के प्रमुख संतोष कुमार सुमन शामिल हैं। जमुई से लगातार दूसरी बार निर्वाचित पुरस्कार विजेता निशानेबाज श्रेयसी सिंह को पहली बार मंत्रिमंडल में जगह मिली है। मुजफ्फरपुर के पूर्व सांसद अजय निषाद की पत्नी और औराई से नवनिर्वाचित भाजपा विधायक रमा निषाद को भी मंत्रिपरिषद में शामिल किया गया है। जदयू के नौ बार के विधायक बिजेंद्र प्रसाद यादव भी एक बार फिर मंत्रिमंडल में लौटे हैं।

पटना के गांधी मैदान में शपथ ग्रहण समारोह के दौरान गमछा लहराते हुए प्रधानमंत्री, साथ में हैं नवनियुक्त मुख्यमंत्री नीतीश कुमार।

शपथ ग्रहण समारोह में मोदी का 'गमछा' लहराना बना आकर्षण

पटना। नई सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 'गमछा' लहराना भीड़ के आकर्षण का केंद्र रहा। जैसे ही प्रधानमंत्री मोदी ने गमछा लहराया, गांधी मैदान में मौजूद करीब तीन लाख लोगों की भीड़ में उत्साह का माहौल बन गया। कार्यक्रम में कलाकारों ने लोकगीतों और लोकनृत्यों की प्रस्तुति देकर मंच पर मौजूद प्रधानमंत्री मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और उप्र, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, असम, ओडिशा, हरियाणा और दिल्ली के मुख्यमंत्रियों का मन मोह लिया।

विधेयकों की स्वत: स्वीकृति की अनुमति नहीं देता संविधान

नई दिल्ली, एजेंसी

उच्चतम न्यायालय ने गुरुवार को कहा कि निर्धारित समय सीमा की समाप्ति के बाद, विधेयकों पर राज्यपाल या राष्ट्रपति की 'स्वतः स्वीकृति' (डीम्ड एसेंट) कार्यपालिका के कार्यों को न्यायपालिका द्वारा अपने हाथों में लेने जैसा है, जो अस्वीकार्य है।

न्यायालय ने कहा कि अनुच्छेद 142 के तहत अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करते हुए न्यायालय द्वारा लंबित विधेयकों पर स्वतः स्वीकृति की अवधारणा वस्तुतः एक अलग संवैधानिक प्राधिकार की भूमिका और कार्य को अपने हाथ में लेने की तरह है। इस संबंध में राष्ट्रपति द्वारा राय मांगे जाने पर प्रधान न्यायाधीश बीआर गवई की अध्यक्षता वाली पांच न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने सर्वसम्मति से कहा कि अनुच्छेद 200 और 201 के संदर्भ में 'स्वतः स्वीकृति' की अवधारणा यह कहती है कि एक संवैधानिक प्राधिकार, यानी न्यायालय, किसी अन्य संवैधानिक पदाधिकारी, अर्थात राज्यपाल या राष्ट्रपति की भूमिका नहीं निभा सकता है। पीठ ने कहा, राज्यपाल के कार्य और इसी प्रकार राष्ट्रपति के कार्यों को इस तरह से हड़पना न केवल संविधान की भावना के प्रतिकूल है, बल्कि विशेष रूप से 'शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत' के भी प्रतिकूल है - जो भारतीय संविधान के मूल ढांचे का एक हिस्सा है। न्यायालय ने कहा कि अनुच्छेद 142 पर निर्भरता संवैधानिक प्रावधानों का अतिक्रमण नहीं है। अनुच्छेद 142 शीर्ष अदालत को अपने समक्ष लंबित किसी भी मामले में पूर्ण न्याय करने के लिए आवश्यक कोई भी आदेश या डिग्री पारित करने का अधिकार देता है। पीठ ने कहा, हमें इस निष्कर्ष पर पहुंचने में कोई हिचकिचाहट नहीं है कि समय सीमा की समाप्ति पर अनुच्छेद 200 या 201 के तहत राज्यपाल या राष्ट्रपति की मंजूरी, न्यायिक घोषणा के माध्यम से कोर्ट द्वारा कार्यपालिका के कार्यों को अपने हाथ में लेने जैसा है, जो हमारे संविधान के तहत अस्वीकार्य है।

- शीर्ष कोर्ट ने कहा- राज्यपाल एवं राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए समय सीमा तय नहीं की जा सकती
- राज्यपाल अनुच्छेद 200 के तहत प्रदत्त अधिकारों से परे जाकर विधेयकों को लंबित नहीं रख सकते

विधेयक रोक कर रखने की अनियंत्रित शक्तियां नहीं

एक महत्वपूर्ण फैसले में, शीर्ष अदालत ने कहा कि राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों को मंजूरी देने के लिए राज्यपालों और राष्ट्रपति पर कोई समय-सीमा नहीं थोपी जा सकती है, तथा राज्यपालों के पास उन विधेयकों को हमेशा के लिए रोक कर रखने की अनियंत्रित शक्तियां नहीं हैं। न्यायालय ने कहा कि राज्यपालों के पास केवल तीन विकल्प हैं - या तो वे विधेयक को मंजूरी दें या उसे राष्ट्रपति के पास भेजें या फिर मंजूरी रोककर अनुच्छेद 200 के तहत पुनर्विचार के लिए उसे विधानमंडल को वापस भेजें। पीठ ने यह भी कहा कि विधेयकों को मंजूरी देने, रोक कर रखने या सुरक्षित रखने के राज्यपालों और राष्ट्रपति के निर्णय न्यायिक समीक्षा के दायरे में नहीं आते हैं। हमें इस अदालत के बाध्यकारी निर्णयों का अनुसरण नहीं करने का कोई कारण नहीं मिलता है...हमारा मानना है कि अनुच्छेद 200 और 201 के तहत राज्यपाल या राष्ट्रपति के कार्यों पर अदालत विचार नहीं कर सकती।

ब्रीफ न्यूज

रॉबर्ट वाद्रा के खिलाफ एक और आरोप पत्र

नई दिल्ली। ईडी ने कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा के पति और कारोबारी रॉबर्ट वाड्रा के खिलाफ ब्रिटेन स्थित हथियार कारोबारी संजय भंडारी से जुड़े धन शोधन मामले में आरोप पत्र दाखिल किया। अभियोजन की शिकायत यहां विशेष धन शोधन रोकथाम कानून (पीएमएलए) अदालत में दायर की गई है। वाड्रा के खिलाफ धनशोधन के मामले में यह दूसरा आरोप पत्र है। जुलाई में, ईडी ने हरियाणा के शिकोहपुर में एक ज़मीन सौदे में कथित गड़बड़ियों से जुड़े धनशोध मामले में उनके खिलाफ आरोप पत्र दायर किया था।

कई स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी के कई स्कूलों को गुरुवार सुबह बम से उड़ाने की धमकी वाले ईमेल मिले, जिन्हें बाद में फर्जी घोषित कर दिया गया। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इन स्कूलों में चाणक्यपुरी स्थित ब्रिटिश स्कूल और संस्कृति स्कूल, बाराखंभा स्थित मॉडर्न स्कूल, पश्चिम विहार स्थित दून पब्लिक स्कूल और श्री अरबिंदो मार्ग स्थित मदर्स इंटरनेशनल स्कूल (एमआईएस) शामिल हैं। कई स्कूलों को भेजे गए ईमेल में कहा गया, मैं आपको एक अत्यंत गंभीर और जरूरी चेतावनी के साथ लिख रहा हूं। आपकी इमारत में कई बहुत शक्तिशाली बम रखे गए हैं जो किसी भी समय फट सकते हैं।

कमरे में अंगीठी जलाकर सोये चार दोस्तों की मौत

अमित बर्नवाल, राहुल सिंह, संजू सिंह, दाऊद अंसारी।

- ऑयल सीड्स कंपनी में काम करते थे, सुबह काम के लिए जगाने पर मौतों का पता चला
- कमरे में वेंटीलेशन न होने से दम घुटने से मौत होने की आशंका, फॉरेंसिक टीम ने की जांच

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार: पनकी औद्योगिक क्षेत्र डी-58 में निर्माणाधीन ऑयल सीड्स कंपनी में बुधवार रात कमरे में कोयले की अंगीठी जलाकर सोये चार दोस्तों की दम घुटने से नींद में ही मौत हो गई। सुबह मौत का पता चलने पर हड़कंप मच गया। दरवाजा तोड़कर शव बाहर निकाले गए।

पुलिस कमिश्नर, जेसीपी, फील्ड यूनिट और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंची। जांच-पड़ताल कर साक्ष्य एकत्र किए। चारों एक ही कमरे में सोये थे, जिसके एक कोने में अंगीठी में कोयला जलता मिला। फॉरेंसिक के अनुसार अंगीठी से निकली कार्बन मोनो ऑक्साइड गैस से दम घुटने की आशंका जताई जा रही है। सभी युवक एक ही गांव देवरिया के तवकलपुर के रहने वाले थे।

गोविंदनगर इलाके के रहने वाले वरुण कटारिया की पनकी इंडस्ट्रियल एरिया साइड दो स्थित डी-58 में निर्माणाधीन कटारिया एडिबल्स एलएलपी ऑयल सीड्स कंपनी है। जिसके निर्माण का जिम्मा इंदौर की आदित्य एंटरप्राइजेज कंपनी को सौंपा गया है। कंपनी में ज्यादातर फैब्रिकेटर (कुशल पेशेवर) देवरिया के रहने वाले हैं। जिसमें चारों दोस्त संजू सिंह (22), राहुल सिंह (23), अमित वर्मा (32) और दाऊद अंसारी (25) एक ही गांव देवरिया के तवकलपुर मुसहती तरकुलवा के थे। ये चारों एक कमरे में सोये थे। उनके तीन साथी दूसरे कमरे में सोये थे। गांव का ही नागेंद्र गुरुवार सुबह करीब छह बजे चारों को काम के लिए जगाने पहुंचा तब उसे घटना का पता चला। इस पर ठेकेदार के साथ पनकी पुलिस को सूचना दी गई। दरवाजा तोड़कर लोग अंदर पहुंचे तो चारों को मृत पाया।

उनके मुंह से सफेद झाग निकला था। सूचना पर पुलिस कमिश्नर रघुवीर लाल, जेसीपी लॉ एंड आर्डर आशुतोष कुमार और एसडीएम सदर, फील्ड यूनिट, पनकी का फोर्स और फॉरेंसिक टीम पहुंची।

अल-फलाह का पूर्व छात्र बेग देश में कर चुका कई धमाके

नई दिल्ली, एजेंसी

- आजमगढ़ का रहने वाला है बेग, 2008 में राजस्थान और गुजरात में किए कई विस्फोट, जांच में सामने आया सच

दिल्ली कार विस्फोट की जांच का दायरा बढ़ने के साथ दिल्ली पुलिस की विशेष शाखा को इंडियन मुजाहिदीन के भगोड़े आतंकवादी और अल फलाह विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र मिर्जा शादाब बेग के बारे में एक नया सुराग मिला है।

दिल्ली पुलिस की विशेष शाखा के सूत्रों ने गुरुवार को बताया कि बेग 2007 में अल फलाह विश्वविद्यालय में छात्र था, जब यह एक इंजीनियरिंग कॉलेज हुआ करता था। उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ का मूल निवासी बेग 2008 में राजस्थान और गुजरात में किए गए कई विस्फोटों के लिए वांछित है। दिल्ली पुलिस की विशेष शाखा के दस्तावेजों के अनुसार बेग ने 2007 में अल फलाह से बीटेक की पढ़ाई पूरी की थी, उसी साल उसने गोरखपुर विस्फोट को अंजाम दिया था। सूत्र ने यह भी बताया कि बेग 2008 के हमलों के तुरंत बाद भारत से भाग गया था। उसके खिलाफ इंटरपोल रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया गया है। इसके अतिरिक्त डॉ. मुजम्मिल शकील विश्वविद्यालय में काम करता था।

दिल्ली धमाके के 4 आरोपी 10 दिन की एनआईए हिरासत में

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने गुरुवार को लालकिला विस्फोट मामले में चार आरोपियों को 10 दिन की एनआईए हिरासत में भेज दिया। इन लोगों को 10 नवंबर को लाल किले के निकट हुए कार विस्फोट के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था। इस विस्फोट में 15 लोग मारे गए थे। विस्फोट के बाद जम्मू-कश्मीर पुलिस ने मुजम्मिल गनई, अदील राथर और शाहीना सईद के साथ-साथ मौलवी इरफान अहमद वागे को गिरफ्तार कर लिया था। इससे पहले दिन में एनआईए ने उन्हें श्रीनगर में हिरासत में लिया और पटियाला हाउस अदालत में पेश किया। एनआईए ने चारों आरोपियों से पूछताछ के लिए अदालत से 15 दिन की हिरासत का अनुरोध किया था।

- डॉ. मुजम्मिल, डॉ. अदील, मुफ्ती इरफान और डॉ. शाहीन सईद को दिल्ली कोर्ट में किया गया पेश

पुलिस ने कश्मीर टाइम्स के जम्मू कार्यालय पर छापा मारा

जम्मू। राज्य जांच एजेंसी (एसआईए) ने देश के खिलाफ गतिविधियों को बढ़ावा देने के आरोप में गुरुवार को यहां कश्मीर टाइम्स के कार्यालय पर छापा मारा। अखबार के खिलाफ देश के हितों के प्रतिकूल गतिविधियों का महिमामंडन करने के आरोप में मामला दर्ज किया गया है। एसआईए के अधिकारियों ने अखबार के परिसरों और कंप्यूटरों की गहन जांच की। प्रकाशन और उसके प्रवर्तकों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है और उनसे पूछताछ किए जाने की संभावना है।

सपा विधायक सुधाकर सिंह का निधन

लखनऊ। मऊ जिले की घोसी विधानसभा सीट से समाजवादी पार्टी के विधायक सुधाकर सिंह का गुरुवार सुबह लखनऊ के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। उनके परिवार ने यह जानकारी दी। वह 67 वर्ष के थे।

सिंह के बेटे सुजीत सिंह ने बताया, वह (सुधाकर सिंह) मंगलवार को दिल्ली से विमान से वाराणसी आए थे। दिल्ली हवाई अड्डे पर वह ठीक थे लेकिन वाराणसी हवाई अड्डे पर उन्हें सांस लेने में दिक्कत हो रही थी। उन्हें इलाज के लिए वाराणसी में भर्ती कराया गया था और फिर बेहतर उपचार के लिए उन्हें लखनऊ ले जाया गया। पिता को देर रात लखनऊ के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां गुरुवार सुबह करीब सात बजे उनका निधन हो गया। उन्होंने चिकित्सकों के हवाले से बताया कि उनके पिता को हृदय संबंधी समस्याएं थीं। तीन बार विधायक रहे सुधाकर सिंह के परिवार में उनकी पत्नी, दो बेटे और एक बेटी हैं।

अंबानी की 1452 करोड़ की संपत्ति कुर्क

- ईडी ने गुरुवार को रिलायंस ग्रुप के खिलाफ धनशोधन मामले के तहत की कार्रवाई

नई दिल्ली। ईडी ने गुरुवार को अनिल अंबानी के रिलायंस ग्रुप के खिलाफ धनशोधन मामले की जांच के तहत 1,452 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्तियां कुर्क कीं।

एजेंसी ने पीएमएलए के तहत एक अस्थायी आदेश जारी किया, जिसके तहत मुंबई के धीरूभाई अंबानी नॉलेज सिटीऔर मिलेनियम बिजनेस पार्क, नवी मुंबई में स्थित कई इमारतों के साथ-साथ पुणे, चेन्नई और भुवनेश्वर में स्थित भूखंडों और इमारतों को कुर्क किया गया। एजेंसी ने बताया कि ये संपत्तियां 1,452.51 करोड़ रुपये मूल्य की हैं और आरकॉम तथा कुछ अन्य कंपनियों की हैं। एजेंसी ने कथित बैंक ऋण धोखाधड़ी और अन्य वित्तीय अनियमितताओं से संबंधितप मामले में इससे पहले 7,500 करोड़ की संपत्तियां कुर्क की थीं। रिलायंस ग्रुप समूह के सूत्रों ने पहले कहा था कि डीएकेसी आरकॉम की परिसंपत्ति है जो पिछले छह वर्ष से दिवालियापन का सामना कर रही है।

भारत को एक्सकैलिबर प्रोजेक्टाइल और जेवलिन मिसाइल सिस्टम देगा अमेरिका

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन, एजेंसी

- टारगेट की गर्मी पहचानकर हमला करती है यह मिसाइल
- नौ करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक का हुआ सौदा

अमेरिका ने भारत के लिए 'एक्सकैलिबर प्रोजेक्टाइल', 'जेवलिन मिसाइल सिस्टम' और संबंधित उपकरणों की कुल नौ करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की बिक्री को मंजूरी दे दी है। अमेरिका ने भारत को हिंद-प्रशांत और दक्षिण एशिया क्षेत्रों में राजनीतिक स्थिरता एवं शांति के लिए एक महत्वपूर्ण शक्ति बताया है। अमेरिका ने यह भी कहा कि इस बिक्री से एक प्रमुख रक्षा साझेदार की सुरक्षा मजबूत होगी। यह मिसाइल टारगेट की गर्मी पहचानकर हमला करती है।

रक्षा सहयोग एजेंसी ने कहा कि विदेश मंत्रालय ने भारत को अनुमानित लागत चार करोड़ 71 लाख अमेरिकी डॉलर पर 'एक्सकैलिबर प्रोजेक्टाइल' और संबंधित उपकरणों की और अनुमानित लागत चार करोड़ 57 लाख अमेरिकी डॉलर पर 'जैवलिन मिसाइल सिस्टम' एवं संबंधित उपकरणों की संभावित विदेशी सैन्य बिक्री को मंजूरी देने का निर्णय लिया है। रक्षा सहयोग एजेंसी ने संसद को बिक्री की जानकारी देते हुए आवश्यक प्रमाणीकरण प्रदान किया। एजेंसी ने कहा, यह प्रस्तावित बिक्री अमेरिका-भारतीय सामरिक संबंधों को मजबूत करने और एक ऐसे प्रमुख रक्षा साझेदार की सुरक्षा में सुधार करने में मदद करके अमेरिका की विदेश नीति एवं राष्ट्रीय सुरक्षा उद्देश्यों का समर्थन करेगी जो हिंद-प्रशांत एवं दक्षिण एशिया क्षेत्रों में राजनीतिक स्थिरता, शांति और आर्थिक प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण शक्ति बना हुआ है। एजेंसी ने कहा, सटीक क्षमता वाले उपकरणों की उपलब्धता से वर्तमान और भविष्य के खतरों से निपटने की भारत की क्षमता में सुधार होगा।

चिंतनीय | देश में पिछले पांच साल में रोगियों की संख्या में हुई बढ़ोतरी, 2020 में जहां 18,05, 670 थी वहीं 2024 में 26,17, 923 हो गई

डेढ़ गुना बढ़े टीबी रोगी, 2025 तक था खत्म करने का लक्ष्य

नई दिल्ली, एजेंसी

- सूचना के अधिकार के तहत मांगी गई जानकारी में हुआ खुलासा

केंद्र सरकार ने साल 2025 तक तपेदिक (टीबी) रोग को खत्म करने का लक्ष्य रखा था लेकिन देश में पिछले पांच साल में इसके रोगियों की संख्या में डेढ़ गुना वृद्धि दर्ज की गयी है।

2020 में जहां टीबी रोगियों की संख्या 18,05, 670 थी वहीं 2024 में इस संक्रामक रोग का शिकार होने वाले मरीजों की संख्या बढ़कर 26,17, 923 हो गयी। सूचना के अधिकार (आरटीआई) के तहत समाचार एजेंसी भाषा द्वारा दायर एक आवेदन के जवाब में भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के केंद्रीय क्षय रोग प्रभाग ने यह जानकारी उपलब्ध कराई है। टीबी एक संक्रामक बीमारी है, जो 'माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस' नाम के बैक्टीरिया के कारण होती है। यह रोग मुख्य रूप से रोगी के फेफड़ों को प्रभावित करता है लेकिन शरीर के अन्य अंग जैसे गुर्दे, मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी भी इसकी चपेट में आ सकते हैं। केंद्रीय क्षय रोग प्रभाग से मिली जानकारी के मुताबिक, टीबी के कुल मामलों की संख्या इस साल अक्टूबर तक 20,77,591 हो चुकी है। आरटीआई के मुताबिक, 2020 में टीबी के18,05,670, 2021 में 21,35,830, 2022 में 24,22,121, 2023 में 25,52,257 और 2024 में 26,17,923 मामले सामने आए थे।

ये आंकड़ें टीबी के मामलों में वृद्धि के परिचायक हैं। प्रति एक लाख आबादी पर टीबी के मामलों की दर की बात की जाए तो यह 2020 में 131, 2021 में 153, 2022 में 172, 2023 में 179, 2024 में 183 और 2025 में 195 पर पहुंच गई। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर स्थित 'पल्मनोलॉजी रीजेंसी हॉस्पिटल'के कंसल्टेंट डॉ. आमिर नदीम ने बताया, टीबी की अगर समय पर पहचान न हो और उपचार न मिले तो यह जानलेवा साबित हो सकता है। यह फेफड़ों के अलावा शरीर के अन्य अंगों को भी प्रभावित कर सकता है।

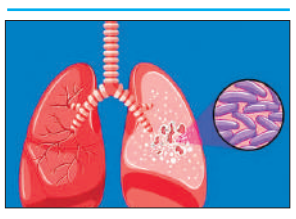

उत्तर प्रदेश टीबी से सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य

आरटीआई के तहत केंद्रीय क्षय रोग प्रभाग से मिली जानकारी के मुताबिक, उत्तर प्रदेश टीबी से सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य है, जहां जून 2025 तक 3,83,987 मामले सामने आ चुके हैं जबकि 2024 में यहां 6,81,779, 2023 में 6,32,872, 2022 में 5,22,850, 2021 में 4,53,712 और 2020 में 3,66,641 मामले सामने आए थे। आरटीआई से प्राप्त जानकारी के अनुसार राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में जून 2025 तक 62,342 मामले, सामने आ चुके हैं जबकि पिछले चार वर्ष में यह आंकड़ा एक लाख को पार कर गया था। दिल्ली में 2024 में 1,05,343, 2023 में 1,00,523, 2022 में 1,06,731, 2021 में 1,03,038 और 2020 में 86,842 मामले सामने आए थे। टीबी से सबसे कम प्रभावित राज्यों की गिनती में लक्षद्वीप सबसे आगे हैं, जहां जून 2025 तक सिर्फ नौ मामले सामने आए हैं।

अमृत विचार

मुरादाबाद , शुक्रवार, 21 नवंबर 2025

उत्तराखण्ड शासन

उत्तराखण्ड 25 रजत जयंती वर्ष

देवभूमि रजत उत्सव

विकसित भारत सशक्त उत्तराखण्ड

"माननीय प्रधानमंत्री जी ने 21वीं सदी के तीसरे दशक को उत्तराखण्ड का दशक कहा है। हम प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरुप राज्य को हर क्षेत्र में आदर्श राज्य बनाने के लिये विकल्प रहित संकल्प के साथ काम कर रहे हैं।"

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड रजत जयंती उत्सव

"21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। पहला, अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा, विकास के लिए हर संभव प्रयास। आज उत्तराखण्ड, इन दोनों ही स्तंभों को लगातार मजबूत कर रहा है। ये दशक उत्तराखण्ड का दशक होगा।"

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

संकल्प नये उत्तराखण्ड का

- समान नागरिक संहिता लागू करने वाला देश में प्रथम राज्य बना उत्तराखण्ड।
- राज्य में सशक्त भू कानून, सख्त धर्मान्तरण विरोधी कानून, सख्त नकल विरोधी कानून, एवं दंगारोधी कानून हुआ लागू।
- राज्य में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर समिट में ₹3.56 लाख करोड़ के एम.ओ.यू. हुए साईन। अब तक ₹01 लाख करोड़ से अधिक के निवेश की हो चुकी ग्राउंडिंग।
- राज्य के इतिहास में पहली बार पेश हुआ 1 लाख करोड़ से ज्यादा का बजट।
- शहीद सैनिकों के आश्रितों को मिलने वाली अनुग्रह राशि को 10 लाख से बढ़ाकर किया 50 लाख रुपए। परमवीर चक्र विजेताओं की अनुग्रह राशि 50 लाख से बढ़ाकर की गई डेढ़ करोड़।
- राज्य की अर्थव्यवस्था का आकार 26 गुना बढ़ा है। प्रति व्यक्ति आय 17 गुना बढ़ी है। राज्य गठन के समय वर्ष 2000 में अर्थव्यवस्था का आकार ₹14501 करोड़ था, जो 2024-25 में बढ़कर ₹378240 करोड़ रुपये होने का अनुमान है।
- केदारनाथ पुनर्निमाण और बदरीनाथ धाम में मास्टर प्लान के तहत कार्य गतिमान। बद्रीनाथ धाम को स्मार्ट आध्यात्मिक पहाड़ी कस्बे के रूप में विकसित करने हेतु ₹255.00 करोड़ की विकास योजनाओं का कार्य गतिमान।
- कुमाऊं क्षेत्र में मानसखण्ड मंदिर माला मिशन के अन्तर्गत 48 मन्दिरों को सर्किट के रूप में जोड़ने का कार्य गतिमान।
- दिल्ली - देहरादून के बीच एलिवेटेड रोड के बनने से 2 से 2.5 घंटे में सफर होगा पूरा।
- राज्य में ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल लाइन का कार्य तेज गति से गतिमान। अब तक 70 प्रतिशत कार्य हुआ पूर्ण।
- राज्य में स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिये ₹200 करोड के वेंचर फण्ड की स्थापना।
- वृद्धावस्था पेंशन को बढाकर ₹1500 किया गया है। अब दोनों बुजुर्ग दंपत्ति को मिल रहा वृद्धावस्था पेंशन का लाभ। वृद्धावस्था, विधवा, तथा दिव्यांग पेंशन का भुगतान 3 माह की जगह अब प्रत्येक माह होगा।
- वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के अन्तर्गत सीमांत के 51 गांवों का चयन कर किया जा रहा सुनियोजित विकास।
- मुख्यमंत्री अंत्योदय निःशुल्क गैस रिफिल योजना के तहत राज्य के करीब पौने दो लाख गरीब परिवारों को साल में 3 सिलेंडर मुफ्त रिफिल।

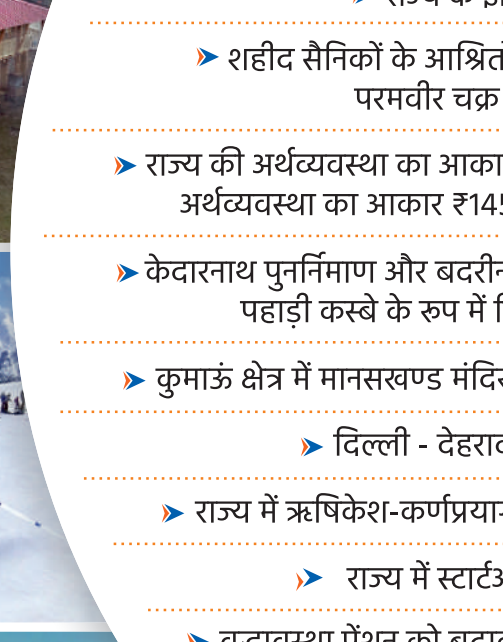

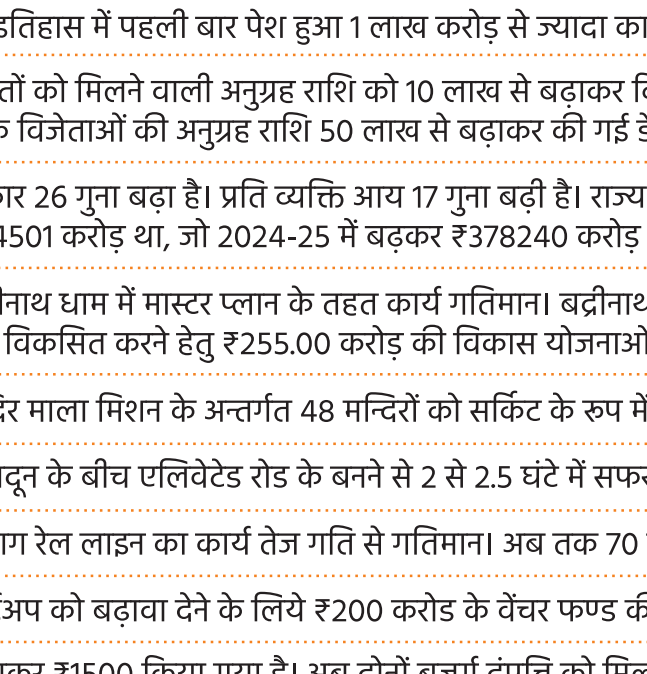

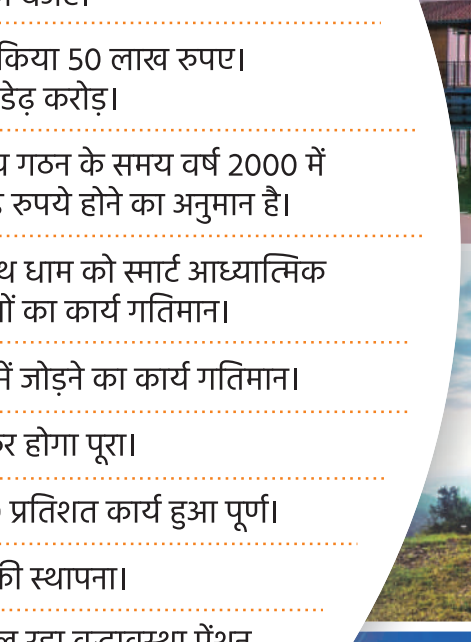

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी www.uttarainformation.gov.in uttarakhandDIPR DIPR_UK uttarakhand DIPR

आज का मौसम

22.0° अधिकतम तापमान

13.0° न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 06.39

सूर्यास्त 05.16

न्यूज ब्रीफ

दो तस्कर पकड़े, 1.205 किलो चरस बरामद

पाकबड़ा, अमृत विचार : 6 लाख मूल्य की चरस के साथ अलग अलग जगह से दो युवकों को पुलिस ने पकड़ लिया। उनके खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर दोनों को कोर्ट में पेश किया गया। जहां से दोनों जेल भेज दिए गए। जनपद संभल के थाना क्षेत्र असमोली के गांव शाहबाज कला के निवासी हारिश पुत्र जाबिर हुसैन एवं मन्नान पुत्र मुख्तियार अलग अलग जगह नगला बनवीर रोड पर स्कूल के पास एवं दूसरा टीएमयू के पास खडे होकर छात्रों को चरस बेचते हैं। पुलिस को सूचना मिलने पर पुलिस ने दोनों को दौड़ाकर पकड़ लिया। तलाशी लेने पर एक के पास से 1.105 एवं दूसरे के पास से 1.205 किलोग्राम चरस मिली है। जिसकी कीमत लगभग 6 लाख रुपये बताई जा रही है। पुलिस ने दोनों के खिलाफ रिपोर्ट पंजीकृत कर कोर्ट में पेश किया। जहां से जेल भेज दिया गया है।

दो पासपोर्ट मामले में 26 को होगी सुनवाई

रामपुर, अमृत विचार : दो पासपोर्ट बनवाने का मामला भाजपा विधायक आकाश सक्सेना ने दर्ज कराया था। उनकी ओर से सिविल लाइंस कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराई थी, जिसमें अब्दुल्ला पर अलग-अलग जन्मतिथि से दो पासपोर्ट बनवाने का आरोप लगा था, जिसमें कहा था कि असत्य एवं कूटरचित दस्तावेजों के आधार पर पासपोर्ट बनवाया गया। उसे उपयोग में भी लाया गया। इस मामले की सुनवाई एमपी-एमएलए मजिस्ट्रेट कोर्ट में रही। गुरुवार को अभियोजन की ओर से बहस हुई। इलाहाबाद से एएजे अनिल प्रताप सिंह भी आए। अब इस मामले में 26 को सुनवाई होगी।

गैंगरेप के आरोपी गिरफ्तार, जेल भेजा

भोजपुर, अमृत विचार : प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार ने गांव मौहब्बतपुर भगवंतपुर निवासी रवि पुत्र कल्लूदत्त शर्मा एवं शिवम पुत्र जयसिंह कश्यप को गिरफ्तार कर चालान कर दिया। आरोपियों के खिलाफ एक गांव निवासी महिला ने 11 वर्षीया बेटी को अगवा कर पशुशाला में ले जाकर दुष्कर्म करने के आरोप में मुकदमा लिखाया था। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर किशोरी का चिकित्सीय परीक्षण कराकर बुधवार को अदालत में कलमबंद बयान दर्ज कराने के बाद आरोपियों को गिरफ्तार कर पूछताछ करने के बाद चालान कर दिया। अदालत ने आरोपियों को जेल भेज दिया।

दुकान में नकब लगाकर चार लाख की नकदी चोरी

संवाददाता, चंदौसी,

- चोर सीसीटीवी में कैद, पुलिस कर रही तलाश

अमृत विचार: चंदौसी में रुपयों की माला की दुकान में बुधवार की देर रात नकब लगाकर चोर चार लाख की नगदी चुराकर ले गए । सीओ और कोतवाल जांच के लिए पहुंचे और आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज को देखा। सीसीटीवी में चोरी का सामान ले जाते हुए युवक नजर आए । पुलिस चोर की तलाश कर रही है।

मोहल्ला साहूकारा निवासी गौरव अग्रवाल पुत्र महेश अग्रवाल की खूबचंद बाजार में नोटों के माला की दुकान है। वह बुधवार को रात 11:00 बजे दुकान बंद करके गए थे। गुरुवार की सुबह पड़ोस में निर्माणाधीन दुकान पर काम करने पहुंचे मजदूर ने दुकान में नकब लगा देखा तो सूचना दुकान मालिक को दी। दुकान मालिक ने गौरव को दुकान में चोरी की सूचना दी। गौरव ने देखा कि दुकान से 500 और 50 के नोट की डेढ़ लाख की माला और गल्ले में रखी लगभग ढाई लाख की नगदी गायब थी। सूचना पर पहुंचे पर सीओ मनोज कुमार और कोतवाल मोहित चौधरी मौके पर पहुंचे और जानकारी ली। आसपास दुकानों पर लगे सीसीटीवी कैमरे चेक किये जिसमें गुरुवार की सुबह 4:45 बजे एक व्यक्ति बैग में सामान भरकर ले जाता हुआ नजर दिखाई दिया । प्रभारी निरीक्षक मोहित चौधरी ने बताया कि तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी की तलाश की जा रही है।

मरीज बोले- अस्पताल में नहीं दवा, बाहर की लिखी दवा खरीदना मजबूरी

आदेश हवा में... बाहर की दवा लिख रहे चिकित्सक

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : प्रदेश के डिप्टी सीएम और स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक का आदेश जिला अस्पताल के डॉक्टरों के लिए कोई मायने नहीं। आज भी पर्चे पर बाहर की दवा लिखी जा रही है। चिकित्सक मेडिकल स्टोर संचालकों से साठ-गांठ कर मरीजों को इलाज देने के बजाय कारोबार कर रहे हैं।

सरकारी अस्पताल में कई बार चिकित्सकों की ओर से बाहर की दवा लिखने के मामले सामने आ चुके हैं। शासन इस पर सख्त भी है। खुद डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ऐसे मामलों में न केवल चेतावनी देते रहे हैं बल्कि कार्रवाई भी कर चुके हैं। इसके बाद भी डॉक्टरों को न तो डिप्टी सीएम का खौफ है और न ही सरकार का। यहां सरकार के आदेश नहीं बल्कि उनका राज चलता है। यही कारण है कि वे खुलेआम सरकारी पर्चे पर बाहर की दवा लिख रहे हैं। गुरुवार को जिला अस्पताल में पड़ताल के दौरान हर तीसरे-चौथे पर्चे पर बाहर की दवा लिखे जाने की बात सामने आई। मरीजों ने बताया कि चिकित्सक ने उनसे कहा था कि यह दवा वह बाहर से ले लें। उन्होंने सरकारी पर्चे पर ही कुछ सरकारी अस्पताल की दवाएं लिखीं और उन्हीं के बीच दो बाहर की दवाएं। मरीजों से यह भी कह दिया कि अस्पताल की दवाएं असरदार नहीं होती हैं वह बाहर से दवाएं खरीद लें। मरीज भी डॉक्टर की बातों में आकर निजी मेडिकल स्टोर पर दवाएं लेने जा पहुंचे।

जिला अस्पताल के पर्चे पर लिखी गई बाहर की दवा।

करूला निवासी गुलशन जोड़ों में दर्द की शिकायत लेकर हड्डी रोग विभाग की ओपीडी पहुंची थीं। उन्होंने **केस 1** कमरा नंबर 17 में दवा लिखवाई। चिकित्सक ने अस्पताल की दवा लिखने के बाद एक निजी कंपनी द्वारा बनाई जाने वाली रेनटेक दवा बाहर की लिखी।

केस - 2 : ताजपुर माफी निवासी गुड्डी सिर में लगातार हो रहे दर्द की समस्या लेकर जिला अस्पताल पहुंची थीं। उन्होंने कमरा **केस 2** नंबर 10 में चिकित्सक को दिखाया। डॉक्टर ने सरकारी पर्चे पर दवा लिख दी। जब वह दवा लेने काउंटर पर पहुंची तो पता चला कि उन्हें भी एल्कासोल सिरप लिखा गया है, जो बाहर से ही निजी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध है।

डॉक्टरों को बाहर की दवाएं न लिखने के आदेश दिए गए हैं। अगर कोई गड़बड़ी कर रहा है तो जांच कर कार्रवाई की जाएगी। कई बार आदेश जारी करने के साथ ही बैठक में भी निर्देश दिए जा चुके हैं। सुधार न होने पर कार्रवाई की जाएगी।

-डॉ. संगीता गुप्ता, अपर निदेशक एवं प्रमुख अधीक्षक, जिला अस्पताल

जन औषधि केंद्र पर नहीं भेजते पर्चा

जिला अस्पताल के परिसर में ही जन औषधि केंद्र बना हुआ है। लेकिन, यहां चिकित्सक दवा लेने के लिए किसी को नहीं भेजते। मरीज जब उनसे सवाल करते हैं कि बाहर की दवा कहां से लें तो वे अस्पताल के गेट के बाहर संचालित किसी मेडिकल स्टोर का नाम बता देते हैं। कई मरीज के हाथ पर ही मेडिकल स्टोर का नाम लिख देते हैं। यही कारण है कि यहां स्थित जन औषधि केंद्र पर पूरे दिन में भी एक हजार तो कभी 1500 रुपये की ही दवाएं बिकती हैं।

मानसरोवर कॉलोनी में फर्म स्वामी के घर लूट

चार लुटेरों ने चौकीदार से मारपीट के बाद बंधक बना दिया घटना को अंजाम, फॉरेंसिक टीम ने जुटाए साक्ष्य

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

- पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर शुरू की तलाश

अमृत विचार : महानगर की पॉश मानसरोवर कॉलोनी में फर्म स्वामी अरविंद बढ़ेरा की कोठी में बुधवार की रात करीब 3:00 बजे दीवार कूदकर आए चार बदमाशों ने धावा बोल दिया। अंदर मौजूद चौकीदार पर चाकू से हमला कर उन्हें गंभीर रूप से घायल कर बदमाशों ने बेसमेंट में बंद कर दिया और कोठी में लूटपाट कर फरार हो गए। घटना के समय निर्यातक और उनकी पत्नी दोनों घर से बाहर थे। उनके न होने पर नुकसान के बारे अभी सही पता नहीं चला सका ।

गुरुवार सुबह लगभग 9 बजे काम करने वाली नौकरानी जब गेट पर पहुंची तो काफी आवाज लगाने के बाद भी गेट नहीं खुला। पड़ोसी असमौली की विधायक पिंकी यादव और मदान परिवार को जानकारी दी। जिस पर कॉलोनी में हलचल मच गई। कॉलोनीवासियों ने मझोला पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने बेसमेंट का ताला खोलकर अंदर घायल चौकीदार कमलेश शाह को बाहर निकाला। उसकी एक उंगली कटी हुई थी और शरीर पर कई घाव थे। पुलिस ने उसे तत्काल निजी अस्पताल में भर्ती कराया। चौकीदार कमलेश शाह ने पुलिस को बताया कि वह रात में सो रहा था, तभी अचानक कोठी में हलचल महसूस हुई। इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, चार बदमाश उसके कमरे में घुस आए। बदमाशों ने चाकू से हमला कर उसे घायल किया, मुंह में कपड़ा ठूंसकर हाथ बांधे और बेसमेंट में बंद कर दिया। चौकीदार के अनुसार बदमाश उसके कमरे में रखे सामान को लेकर फरार हो गए।

घायल चौकीदार कमलेश।

घटनास्थल पर जांच करती पुलिस की टीम। ● अमृत विचार

प्रियंका गांधी के ससुराली बताए जा रहे पीड़ित

फर्म स्वामी प्रियंका गांधी के पति राबर्ट बढ़ेरा के रिश्तेदार बताए जा रहे हैं। स्थानीय लोगों में चर्चा थी कि फर्म स्वामी की कांग्रेस कमेटी की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा के पति रॉबर्ट वाड्रा के परिवार से रिश्तेदारी हैं। ऐसे में पुलिस मामले की गंभीरता को देखते हुए बदमाशों की तलाश में टीमें लगा दी गई हैं।

फर्म स्वामी शहर से बाहर, पत्नी बेटी के पास गई थीं

घटना स्थल पर खून देखकर लोग यह अंदेशा जताया कि वारदात और गंभीर हो सकती थी। पुलिस ने फॉरेंसिक टीम और डॉग स्क्वॉड को मौके पर बुलाया। करीब दो घंटे तक कोठी के हर हिस्से की तलाशी ली गई और साक्ष्य जुटाए गए। बताया गया कि घटना के समय फर्म स्वामी अरविंद बढ़ेरा शहर से बाहर थे और उनकी पत्नी बेटी के पास गई हुई थीं। कोठी में केवल चौकीदार ही मौजूद था। पुलिस के अनुसार बढ़ेरा के शुक्रवार को मुरादाबाद लौटने के बाद ही नुकसान का सही आकलन हो सकेगा। पुलिस ने फर्म स्वामी के ड्राइवर विनोद की तहरीर पर अज्ञात बदमाशों के खिलाफ लूट व अन्य गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। सीसीटीवी सहित अन्य तकनीकी पहलुओं की भी जांच की जा रही है।

कॉलोनी में दहशत

हाई-प्रोफाइल क्षेत्र में देर रात हुई इस वारदात से आसपास के इलाकों में दहशत फैली हुई है। रहवासियों ने कॉलोनी की सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवाल उठाए हैं। पुलिस हर एंगल से जांच कर रही है।

फर्म स्वामी अरविंद बढेरा के घर रात कुछ बदमाश घुस गए थे। जिन्होंने चौकीदार को घायल कर बेसमेंट में बंद कर दिया था। फर्म स्वामी के चालक की ओर से मिली तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर बदमाशों की तलाश की जा रही है। हालांकि फर्म स्वामी के न होने पर नुकसान कासही पता नहीं चला सका। जल्द ही आरोपी पकड़े जाएंगे। **-कुमार रणविजय सिंह,** एसपी सिटी

मुख्यमंत्री के दावों पर साधा निशाना

मुरादाबाद, अमृत विचार : लूट के बाद मामले ने राजनीतिक रंग भी पकड़ लिया है। घटना स्थल के पास ही रहने वाली संभल की असमोली विधानसभा की सपा विधायक पिंकी यादव ने प्रदेश की कानून-व्यवस्था पर सवाल खड़े किए हैं। विधायक का कहना है कि इस तरह की बड़ी घटनाएं यह साबित करती हैं कि पुलिस सुरक्षा व्यवस्था केवल कागजों में सुधरी दिखाई जाती है। पॉश कॉलोनी में चार बदमाशों का घुस आना सुरक्षा व्यवस्था की पोल खोल रहा है। कहा कि घटना ने एक बार फिर मुख्यमंत्री के दावों पर सवाल खड़े कर दिए हैं। उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के उस बयान पर तंज कसा कि बदमाश या तो यूपी छोड़ चुके हैं या जेल में हैं। कहा कि अगर बदमाश यूपी छोड़कर भाग गए हैं, तो फिर प्रदेश में लूट, हत्या, गैंगरेप, महिलाओं और बच्चियों से दुष्कर्म जैसी घटनाएं कैसे हो रही हैं, बदमाश आखिर आ कहां से आ रहे हैं। उन्होंने पुलिस प्रशासन से तत्काल कार्रवाई की मांग की।

सिंचाई और नलकूप के अधिशासी अभियंता बैठक से नदारद, वेतन रोका

कर- करेत्तर एवं राजस्व संग्रह की मासिक समीक्षा बैठक करते डीएम अनुज सिंह।

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

- डीएम की अध्यक्षता में कर-करेत्तर एवं राजस्व संग्रह की मासिक समीक्षा बैठक

अमृत विचार : डीएम अनुज सिंह की अध्यक्षता में गुरुवार को कलेक्ट्रेट सभागार में कर- करेत्तर एवं राजस्व संग्रह की मासिक समीक्षा बैठक हुई। इसमें अधिशासी अभियंता सिंचाई और अधिशासी अभियंता नलकूप स्वयं नहीं आए और अपने अधीनस्थ को भेज दिया। इस पर जिलाधिकारी ने सख्त नाराजगी जताकर दोनों अभियंताओं का वेतन रोकते का आदेश देते हुए स्पष्टीकरण नोटिस जारी करने का निर्देश अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व को दिया।

डीएम ने कहा कि विभागीय कार्यों में लापरवाही और समीक्षा बैठकों में बिना पूर्व सूचना के गैर हाजिर रहने वाले अधिकारियों के विरुद्ध कठोरतम कार्रवाई होगी। बैठक में जिलाधिकारी ने स्टांप, जीएसटी, मंडी, बाट माप, श्रम, परिवहन, एवं गन्ना सहित विभिन्न विभागों द्वारा किए गए कर संग्रह की प्रगति पूछी। उन्होंने एआईजी स्टांप से स्टांप शुल्क के रूप में कर संग्रह के बारे में जानकारी ली, जीएसटी विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया कि वह विभागीय नियमों का पालन कराने और ओवरलोडिंग के विरुद्ध कार्रवाई के लिए सघन चेकिंग अभियान को और प्रभावी बनाएं।

बाट माप विभाग की समीक्षा में विभागीय अधिकारी को बीते एक महीने में निरीक्षण के दौरान की गई कार्रवाई से रिपोर्ट भेजने के लिए कहा। सहायक श्रमायुक्त को निर्देश दिया कि किसी भी व्यक्ति का शोषण न हो।परिवहन विभाग के अधिकारियों को डग्गामार वाहनों का परमिट निरस्त करने का निर्देश दिया। बैठक में अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व ममता मालवीय, अपर जिलाधिकारी प्रशासन संगीता गौतम, अपर जिलाधिकारी नगर ज्योति सिंह के अलावा संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

एसओजी ने पकड़ा नशीले इंजेक्शन व सिरप का जखीरा

संवाददाता, ठाकुरद्वारा

- 5000 इंजेक्शन व 326 कोडीन सिरप के साथ थाना भगतपुर का आरोपी गिरफ्तार

अमृत विचार : वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर चलाए जा रहे नशा-विरोधी अभियान के तहत काशीपुर पुलिस व एसओजी टीम को बड़ी सफलता मिली है। संयुक्त कार्रवाई के दौरान पुलिस ने बिना लाइसेंस व बिना बिल के अवैध रूप से ले जाए जा रहे पांच हजार नशीले इंजेक्शन, कोडीन सिरप की 326 बोतलें बरामद की हैं। पुलिस ने एक आरोपी को मौके से गिरफ्तार कर लिया। पकड़े गए आरोपी ने नाम दीपक ठाकुर पुत्र कृष्ण पाल सिंह निवासी ग्राम शक्ति खेडा थाना भगतपुर बताया

गुरुवार को काशीपुर एसओजी टीम टांडा बागवाली रोड टांडा उज्जैन काशीपुर में चेकिंग कर रही थी। टीम को एक संदिग्ध सफेद स्कूटी दिखाई दी। रोककर जांच करने पर स्कूटी से दो गत्तों में भरे 200 बॉक्स, जिनमें कुल 5000 अवैध इंजेक्शन थे, जबकि अन्य तीन पेटियों से 326 नशीली सिरप की बोतलें बरामद हुईं। आरोपी इन सभी प्रतिबंधित मादक पदार्थों को अवैध रूप से ले जा रहा था। पुलिस ने बरामदगी के आधार पर कोतवाली काशीपुर में एफआईआर नंबर एनडीपीएस एक्ट के अंतर्गत मुकदमा दर्ज कर आरोपी को न्यायालय में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया।

काशीपुर पुलिस की गिरफ्त में आरोपी। ● अमृत विचार

पहले भी पकड़े जा चुके हैं क्षेत्र निवासी कई आरोपी

एक महीने पूर्व रुद्रपुर में नशीली गोलियां सिरप के साथ दो युवक पुलिस द्वारा पकड़े गए थे। पकड़े गए युवकों की निशान दही पर काशीपुर पुलिस ने रामपाल द्वारा स्थित एक मेडिकल स्टोर के संचालक को नशीली दवाइयों की बिक्री करने के आरोप में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। इससे पूर्व भी ठाकुरद्वारा के कई मेडिकल स्टोर संचालकों को काशीपुर पुलिस द्वारा पकड़ा गया था। टीम में उपनिरीक्षक हेमचंद तिवारी,उपनिरीक्षक सुनील सुतेड़ी एस ओ जी प्रभारी,उपनिरीक्षक मनोज सिंह धोनी, हेड कांस्टेबल प्रमोद कुमार, कांस्टेबल दीपक कुमार ,हरीश ,कैलाश आदि मौजूद रहे ।

पुलिस मुठभेड़ में एक गो तस्कर को लगी गोली, दो फरार

संवाददाता, सैदनगर

- भागते समय गिरने से एक पुलिसकर्मी हुआ घायल

अमृत विचार : अजीमनगर थाना पुलिस की तड़के 3 बजे गो-तस्करों से मुठभेड़ हो गई। मुठभेड़ के दौरान पुलिस की जवाबी फायरिंग में एक गो तस्कर को गोली लग गई, आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। वहीं दो आरोपी फरार हो गए हैं। इस दौरान गिरने से एक पुलिसकर्मी घायल भी हो गया। पुलिस ने तीनों गो तस्करों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

गुरुवार तड़के अजीमनगर थाना पुलिस ने गो तस्करों पर बड़ी कार्रवाई की है। अजीमनगर थानाध्यक्ष कर्म सिंह पाल ने बताया कि वह पुलिस बल के साथ जिठनिया चौराहे के पास चेकिंग कर रहे थे। इस दौरान संदिग्ध बाइक को पुलिस ने रोकना चाहा तो वह मौके से भागने लगा। पुलिस के पीछा करने पर आरोपी ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। पुलिस की जवाबी फायरिंग में बदमाश के पैर में गोली लगने से वह नीचे गिर गया। पुलिस ने पीछा करने के बाद उसे पकड़ लिया। पूछताछ करने पर मालूम हुआ आरोपी नगलिया आकिल निवासी हिस्ट्रीशीटर मुस्तकीम है। जिस पर अलग-अलग थानों में गोकशी से संबंधित करीब 14 मुकदमे दर्ज हैं। जबकि दो आरोपी बागड़खा निवासी शकील और देवरनिया निवासी दिलशाद भागने में कामयाब रहे।

पुलिस मुठभेड़ के दौरान पुलिसकर्मी दीपक गिरकर घायल हुआ है। पुलिस ने घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। गो तस्कर के पास से पुलिस ने बाइक तमंचा और गोकशी करने के कुछ औजार बरामद किए हैं। मुठभेड़ की सूचना मिलते ही सीओ टांडा कीर्ति निधि आनंद घटनास्थल पर पहुंच गए और जांच की। पुलिस ने तीनों आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर फरार आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

मुठभेड़ स्थल पर मौजूद सीओ टांडा व अन्य पुलिस कर्मी। ● अमृत विचार

सियासत

104 मुकदमों में 12 में आए फैसले, 5 में सुनाई गई सजा, सात केस में हुए बरी

आजम खां की परेशानियां नहीं होंगी कम, 2027 का चुनाव मुश्किल

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

- 2027 चुनाव परिणाम के बाद तय होगा आजम खां का भविष्य

अमृत विचार : आजम खां और उनके परिवार से जुड़े मामलों में एमपी-एमएलए कोर्ट लगातार सुनवाई कर रही है। आने वाले दिनों में आजम खां के लिए मुश्किलें कम नहीं होंगी, क्योंकि अन्य मुकदमों में सुनवाई चल रही है। ऐसे में 2027 के विधानसभा चुनाव पर सपाइयों की निगाहें टिकीं हैं। 2027 में बाजी सपा के हाथ लगी तो आजम खां और परिवार को राहत मिल सकती है, जबकि भाजपा फिर से सत्ता में आई तो मुश्किलें और बढ़ेंगी।

आजम खां।

सपा नेता आजम खां को अभी तक 50 माह की सजा जेल में काट चुके हैं, जबकि बेटे अब्दुल्ला के साथ फिर से जेल गए हैं। जबकि अब्दुल्ला व पत्नी डॉ. तजीन फात्मा भी कई महीने जेल काट चुकी हैं, पत्नी जमानत पर बाहर हैं। आजम खां को डूंगरपुर में 10 साल की सजा, जन्म प्रमाण पत्र और दो पैन कार्ड मामले में 7-7 साल की सजा हो चुकी है। अगर 2027 में भाजपा सरकार फिर से आती है तो आजम खां के आने वाले दिनों में मुश्किलें बढ़ सकती हैं, जबकि सत्ता में सपा आई तो राहत के आसार हैं। कभी सियासत की बुलंदियों को छूने वाले सपा नेता आजम खां भाजपा सरकार आने के बाद से बहुत बुरे दौर से गुजर रहे हैं। आजम खां पर मौजूदा समय में 111 मुकदमे दर्ज हैं, यह सभी मुकदमे भाजपा सरकार आने के बाद हुए। कभी सपा मुखिया मुलायम सिंह यादव इनके कार्य में हस्तक्षेप नहीं करते थे, लेकिन उनके निधन के बाद से उनका बुरा दौर शुरू हो गया है। चारों तरफ से हुई घेराबंदी के चलते अब सलाखों के पीछे समय काट रहे हैं।

दो जन्म प्रमाण पत्र मामले में जहां सात साल की सजा हुई, तो कुछ ही माह के बाद डूंगरपुर के मामले में 10 साल की सजा हो चुकी है। सोमवार को दो पैन कार्ड में फिर से पिता पुत्र को सात-सात साल की सजा हो चुकी है। जो कि मौजूद समय में रामपुर जिला कारागार में यानि घर से 200 कदम की दूरी पर बंद है। इन सजाओं के आधार पर अंदाजा लगाया जा सकता है कि 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव में आजम खां का चुनाव लड़ना मुश्किल है। क्योंकि इनका वोट डालने तक का अधिकार छीना जा चुका है। अब्दुल्ला आजम पर भी लगभग 45-50 मुकदमे हैं। डॉ. तजीन फात्मा पर लगभग 40 मुकदमे हैं। कोर्ट से सजा मिलने के बाद अब आजम खां और अब्दुल्ला आजम के साथ-साथ डॉ. तजीन फात्मा भी चुनाव नहीं लड़ पाएंगी। कई मुकदमे बड़े बेटे अदीब आजम भी दर्ज हैं, हालांकि अभी तक वह लंबित हैं।

इन मामलों में सुनाई जा चुकी सजा

27 अक्टूबर 2022 को मिलक कोतवाली में दर्ज भड़काऊ भाषण में एमपी-एमएलए मजिस्ट्रेट कोर्ट ने तीन साल की सजा सुनाई थी। जिसे सेशन कोर्ट ने निरस्त कर दिया था। 13 फरवरी 2023 को एमपी-एमएलए कोर्ट ने छजलैट में हाईवे जाम मामले में आजम और अब्दुल्ला को दो-दो साल की सजा सुनाई थी। इसमें अब्दुल्ला की विधायकी चली गई थी। 15 जुलाई 2023 के भड़काऊ भाषण के एक दूसरे मामले में आजम खां को दो साल की सजा सुनाई गई थी। जिसको सेशन कोर्ट ने खारिज कर दिया। दो जन्म प्रमाण पत्र मामले में 18 अक्टूबर 2023 में कोर्ट ने आजम खां,पत्नी डॉ. तजीन फात्मा और पूर्व विधायक अब्दुल्ला आजम खां को सात-सात साल की सजा सुनाई थी। 18 मार्च 2024 को कोर्ट ने डूंगरपुर मामले में सात साल की सजा सुनाई। इसके अलावा 30 मई 2024 को डूंगरपुर के दूसरे मामले में 10 साल की सजा और 14 लाख का जुर्माना लगाया है। यह अभी तक की सबसे बड़ी सजा है।

रामपुर में दर्ज 93 केस

आजम पर कुल 111 मुकदमे दर्ज हुए। जिसमें से रामपुर में 93 मुकदमे दर्ज हुए हैं। जमीनों के राजस्व केस 11, मजिस्ट्रेट कोर्ट में पेंडिंग 57 है। सेशन कोर्ट में 19 पेंडिंग हैं। अन्य जिलों में पेंडिंग 2 है।

20 आवेदनों की गलत जांच में एडीओ व चार सचिव दोषी

कार्यालय संवाददाता,मुरादाबाद

- मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह प्रोत्साहन योजना में गड़बड़ी की पुष्टि, निलंबन की संस्तुति

अमृत विचार : मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह प्रोत्साहन योजना के तहत वित्तीय लाभ दिलाने के लिए किए गए 20 गलत आवेदनों की जांच में गंभीर अनियमितताएं सामने आई हैं। मामले में एडीओ समाज कल्याण सहित चार पंचायत सचिवों की भूमिका संदिग्ध पाई गई है।

जिला समाज कल्याण अधिकारी ने विस्तृत जांच पूरी कर रिपोर्ट मुख्य विकास अधिकारी (सीडीओ) मृणाली अविनाश जोशी को भेज दी है। रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से संबंधित अधिकारियों की जिम्मेदारी तय की गई है। सीडीओ ने प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर डीएम अनुज सिंह को एडीओ समाज कल्याण के निलंबन की संस्तुति भेज दी है। साथ ही संबंधित पंचायत सचिवों के विरुद्ध भी विभागीय कार्रवाई की संभावना जताई गई है।

पिछले वर्ष मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के 20 आवेदन के मामलों में मिलीभगत से और फर्जीबाड़े की डीएम के आदेश पर कराई जांच में आरोप पुष्ट हो गए हैं। डीएम को जांच रिपोर्ट के आधार पर आरोपियों के निलंबन की संस्तुति भेजी गई है।

- पंखुड़ी जैन, जिला समाज कल्याण अधिकारी

अमृत विचार

मुरादाबाद , शुक्रवार,21 नवंबर 2025

मुरादाबाद

न्यूज ब्रीफ

रुस्तम नगर में पकड़ी बिजली चोरी, दी तहरीर

बिलारी, अमृत विचार : क्षेत्र के गांव रुस्तम नगर सहसपुर में अवर अभियंता ने बिजली चोरी के मामले में मुकदमा दर्ज कराया है। अवर अभियंता महेंद्र सिंह ने बताया कि गुरुवार को एसडीओ विद्युत राम मनोहर यादव ने बिजली चोरी की सूचना पर सर्वेश कुमार, संविदा कर्मी पंकज, संजीव कुमार के साथ रुस्तम नगर सहसपुर की प्रथमा बैंक वाली गली में छापेमारी की। जहां भोला पुत्र बदलू के घर स्मार्ट मीटर में इनकमिंग साइड पर काली डोरी डालकर बिजली चोरी की जा रही थी। मीटर के पीछे दीवार में छेद कर दिया गया था। रिपोर्ट तैयार कर केबिल जब्त की गई। तहरीर दी गई है।

मां-बेटे को पीटने में बाप-बेटों पर केस दर्ज

भोजपुर, अमृत विचार : गांव सिरसवां गोड़ निवासी प्रवेश देवी के खेत निकटवर्ती गांव सैलाथान में स्थित हैं। मंगलवार को वह बेटे अमित के साथ खेत देखने गई थी। महिला का आरोप है कि सैलाथान निवासी मलखान अपने बेटों सुरेन्द्र व गौरव को साथ लेकर आया और दोनों को लाठी डंडों से हमला कर घायल कर गया। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कृषि यंत्रों की ई-लाटरी प्रक्रिया से चुने किसान

मुरादाबाद, अमृत विचार : कृषि विभाग द्वारा सब मिशन ऑन एग्रीकल्चरल मैकेनाइजेशन तथा प्रमोशन ऑफ एग्रीकल्चरल मैकेनाइजेशन फॉर इन-सीटू मैनेजमेंट ऑफ क्रॉप रेजिड्यू योजनान्तर्गत अनुदान पर कृषि यंत्र उपलब्ध कराने के लिए ई-लाटरी प्रक्रिया शुक्रवार को कलेक्ट्रेट सभागार में हुई। डीएम अनुज सिंह की अध्यक्षता में गठित जिला स्तरीय कार्यकारी समिति (डीएलईसी) व आवेदन करने वाले कृषकों की उपस्थिति में दर्शन पोर्टल 2.0 पर पूरी पारदर्शिता के साथ चयन प्रक्रिया कराई गई। कार्यक्रम की शुरुआत में उप निदेशक कृषि संतोष कुमार द्विवेदी ने खंडवार कस्टम हायरिंग सेंटर, एकल यंत्रों एवं कृषि ड्रोन से संबंधित सभी श्रेणियों की लाटरी कराई। यदि कोई चयनित कृषक निर्धारित समय के भीतर यंत्र खरीदकर बिल अपलोड नहीं करता है, तो प्रतीक्षा सूची के प्रथम कृषक का टोकन स्वत: सक्रिय हो जाएगा। सत्यापन के बाद पात्र कृषकों को अनुदान राशि शीघ्र उपलब्ध करा दी जाएगी।

टीएमयू के तीर्थंकर महावीर कॉलेज ऑफ नर्सिंग में 17वीं लैंप लाइटिंग सेरेमनी

आंतरिक लौ प्रज्ज्वलित रखें नर्सिंग स्टूडेंट्स

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : टीएमयू के तीर्थंकर महावीर कॉलेज ऑफ नर्सिंग की ओर से गुरुवार को 17वीं लैंप लाइटिंग सेरेमनी आयोजित की गई। इसमें बीएससी नर्सिंग और एएनएम प्रथम वर्ष के 300 स्टूडेंट्स को डीन प्रो. एसपी सुभाषिनी ने स्टूडेंट्स को दिलाई नाइटिंगल की शपथ दिलाकर अपने अंदर हमेशा मरीजों की सेवा भावना की लौ जलाए रखने की सीख दी।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि टीएमयू के एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर अक्षत जैन ने कहा कि नर्सिंग स्टूडेंट्स ने आज यह लौ जो जलाई है, इसे अपने भीतर भी हमेशा जलाए रखना है। उन्होंने नवागत नर्सिंग स्टूडेंट्स से उम्मीद जताई कि कोर्स समाप्ति के बाद भी सेवा की यह लौ कभी नहीं बुझनी चाहिए। इससे पूर्व मुख्य अतिथि उत्तराखंड नर्सेज़ एंड मिडवाइव्स काउंसिल की रजिस्ट्रार एवं स्टेट कॉलेज ऑफ नर्सिंग देहरादून की प्रिंसिपल डॉ. मनीषा ध्यानी, डीन एकेडमिक्स प्रो. मंजुला जैन, डेंटल की डायरेक्टर गवर्नेंस डॉ. नीलिमा जैन, तीर्थंकर महावीर कॉलेज ऑफ नर्सिंग की डीन प्रो. एसपी सुभाषिनी, प्रिंसिपल डॉ. जसलीन एम., वाइस प्रिंसिपल प्रो. रामनिवास, एसएनए एडवाइज़र डॉ. रामकुमार गर्ग, प्रो. जितेन्द्र सिंह, प्रो. योगेश कुमार आदि ने फ्लोरेंस नाइटेंगल की प्रतिमा पर पुष्पांजलि और दीप प्रज्ज्वलित करके लैंप लाइटिंग एंड ऑथ सेरेमनी का रिद्धि-सिद्धि भवन में आरंभ किया।

डीन ने नर्सिंग के 300 स्टूडेंट्स को मोमबत्ती पर हाथ रखवाकर नाइटिंगेल की शपथ दिलाई। मुख्य अतिथि डॉ. मनीषा ध्यानी ने कहा, परिस्थितियां चाहे कैसी भी हों, हमें सदैव सत्य, ज्ञान, और मानवीय मूल्यों का प्रकाश फैलाना है। दीप ज्योति ही परम ब्रह्म है, दीप ज्योति ही जनार्दन है। लैंप लाइटिंग महज एक औपचारिकता नहीं, बल्कि यह नर्सिंग स्टूडेंट्स के पथ को उज्जवल बनाने का संकल्प है। डीन एकेडमिक्स प्रो. मंजुला जैन ने कहा कि लैंप लाइटिंग कोई रिचुअल नहीं, रिमाइंडर है। यह मानवता की लौ है। संचालन फैकल्टीज़ प्रो. अनुषी सिंह और रिया भारती ने किया। डॉ. सपना सिंह, डॉ. रामकुमार गर्ग, प्रो. लिंसी जोसेफ, प्रो. विजीमोल, एकजोत कौर, डॉ. रश्मि, सतीश प्रजापति सहित बीएससी नर्सिंग, एएनएम प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

शपथ लेतीं बीएससी नर्सिंग और एएनएम प्रथम वर्ष की विद्यार्थी। ● अमृत विचार

नेक्स्ट ने पारकर को हरा जीता फाइनल

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : बिशप पारकर मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला गुरुवार को नेक्स्ट जनरेशन क्रिकेट अकादमी और पारकर क्रिकेट अकादमी के बीच खेला गया। नेक्स्ट जेनरेशन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पारकर क्रिकेट अकादमी को हराकर खिताब अपने नाम किया। मुकाबला रोमांचक तो था, लेकिन नेक्स्ट जनरेशन की बल्लेबाजी ने इसे एकतरफा बना दिया।

फाइनल मैच में टॉस जीतकर पारकर क्रिकेट अकादमी के कप्तान काव्यांश ने पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। टीम ने निर्धारित ओवरों में 188 रनों का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया। पारकर टीम की ओर से देव ने बेहतरीन 56 रन बनाए, जबकि कप्तान काव्यांश ने 38 रनों की उपयोगी पारी खेली। नेक्स्ट जनरेशन की ओर से गेंदबाजी

ट्रॉफी के साथ खुशी मनाते विजेता टीम के खिलाड़ी। ● अमृत विचार

● बिशप पारकर मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट में हुआ रोमांचक मैच

में आयुष ने दो विकेट और नितिन ने एक विकेट लिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी नेक्स्ट जनरेशन की टीम ने आत्मविश्वास और सटीक बल्लेबाजी का शानदार नमूना पेश किया। टीम ने बिना कोई विकेट गंवाए लक्ष्य को हासिल कर लिया। सलामी बल्लेबाज अंश गौतम ने नाबाद 115 रनों की दमदार पारी खेली, जबकि उनके साथी अरीब कमाल ने 62 रन बनाकर जीत में अहम भूमिका निभाई। अंश गौतम को मैन ऑफ द मैच, पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करने वाले पारकर के कप्तान काव्यांश मैन ऑफ द सीरीज, बेस्ट बैट्समैन अरीब जबकि बेस्ट बॉलर का सम्मान अहम को दिया गया। कोच हिमांशु शर्मा, बदरुद्दीन सिद्दीकी, प्रधानाचार्य डेविड जेम्स और यूपी क्रिकेट के सचिव विजय गुप्ता विशेष अतिथि रहे। अतिथियों ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं की।

एसआईआर: समय बीतने के साथ मतदाताओं की बेचैनी बढ़ी

मतदाता सूची गहन पुनरीक्षण अभियान में अभी तक कई मोहल्लों में नहीं पहुंचे बीएलओ,2003 की सूची में नाम न मिलने से परेशान

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : 4 नवंबर से चल रहे विधानसभा चुनाव की मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) में तंत्र की सुस्ती मतदाताओं को सशंकित किए है। कई वार्डों में अभी भी बीएलओ के न पहुंचने से मतदाता अपने नाम को लेकर ऊहापोह में हैं। क्योंकि वह बिहार चुनाव से पहले मतदाता सूची के पुनरीक्षण प्रक्रिया में 65 लाख मतदाताओं के नाम वोटर लिस्ट से कटने से सशंकित हैं।

जिले में 4 नवंबर से मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण चल रहा है। इसकी शुरुआत से पहले जिला निर्वाचन अधिकारी अनुज सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से इसमें पूरा सहयोग करने की अपील की गई। राजनीतिक दलों के द्वारा अपनी ओर से बीएलए (बूथ लेवल एजेंट) नामित करने के लिए कहा गया। जो प्रशासन के द्वारा ड्यूटी में लगाए गए बीएलओ (बूथ लेवल आफिसर) से समन्वय कर इस कार्य को पारदर्शिता के साथ पूरा कराएं। लेकिन कई राजनीतिक दल इसको लेकर उतने गंभीर नहीं दिख रहे हैं। ऐसे में मतदाता बीएलओ के भरोसे ही अधिक हैं। हालांकि भाजपा की ओर से शिविर लगवाकर मतदाताओं को गणना प्रपत्र भरवाने में सहयोग किया जा रहा है। मगर अभी भी कई वार्डों के मोहल्ले व ग्रामीण क्षेत्र के गांवों में बीएलओ के न पहुंचने से समय बीतने को लेकर मतदाताओं की टेंशन बढ़ रही है।

कई मतदाता मीडिया कर्मियों से जानकारी लेकर संतुष्ट होने का प्रयास कर रहे हैं। सबसे अधिक चिंता मतदाताओं को 2003 के मतदाता सूची में नाम को लेकर है। ऐसा न होने पर उन्हें अपने माता-पिता का वोटर आईडी कार्ड का इपिक नंबर देना होगा। आनलाइन भी मतदाता सूची के डाउनलोडिंग में कई खामियां सामने आ रही हैं। कभी वोटर लिस्ट डाउनलोड नहीं हो रहा है तो कहीं की सूची में बीच के पेज न होने से मतदाता चकरा रहे हैं।

हालांकि जिला निर्वाचन से जुड़े अधिकारी मतदाताओं को किसी प्रकार की चिंता न करने की बात कर रहे हैं। अपर जिलाधिकारी-उप निर्वाचन अधिकारी संगीता गौतम का कहना है कि 2003 की मतदाता सूची में जिनका नाम नहीं है वह अपने माता-पिता या परिवार के अन्य बड़ों का नाम व उनका इपिक नंबर का विवरण दें, यदि यह भी नहीं है तो वोट डालने के लिए मिलने वाले 11 विकल्पों में से किसी एक दस्तावेज को देना होगा। निर्वाचन आयोग की वेबसाइट पर जाकर आनलाइन भी प्रक्रिया पूरी की जा सकती है।

आशियाना कॉलोनी में बी एल ओ को फॉर्म भरकर देते स्थानीय लोग।

दो या अधिक मतदेय स्थल/विधानसभाओं में प्रपत्र भरना दंडनीय अपराध

अपर जिलाधिकारी प्रशासन/उपजिला निर्वाचन अधिकारी संगीता गौतम ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश के अनुसार अर्हता 1 जनवरी 2026 के आधार पर विधानसभा निर्वाचक नामावलियों के प्रगाढ़ पुनरीक्षण की कार्यवाही चल रही है। जिसमें बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) द्वारा घर-घर जाकर मतदाता को गणना प्रपत्र उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ ही मतदाताओं द्वारा भरे हुए गणना प्रपत्र प्राप्त किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि ऐसे मतदाता जिनका नाम विधानसभा निर्वाचक नामावली 2025 में एक से अधिक मतदेय स्थल अथवा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में प्रविष्ट है, उनसे अपील है कि वह एक ही स्थान पर अपना गणना प्रपत्र भरकर बूथ लेवल अधिकारी को उपलब्ध कराएं। कहा कि यदि मतदाता द्वारा दो मतदेय स्थल अथवा विधानसभा क्षेत्रों में गणना प्रपत्र भरकर बीएलओ को जमा किया जाता है और यह सिद्ध हो जाता है कि उस मतदाता द्वारा दो जगह गणना प्रपत्र भरकर बीएलओ के पास जमा किया गया है, तो ऐसे मतदाताओं के विरुद्ध लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 (1950 क 43) की धारा 31 के अन्तर्गत कार्रवाई की जाएगी। जिसमें मतदाता को 01 वर्ष कारावास या जुर्माने या दोनों से दण्डित किया जाएगा। इसके लिए मतदाता स्वयं जिम्मेदार होगा।

सहायता कैंप में दी मतदाताओं को प्रपत्र भरने की जानकारी

मुरादाबाद, अमृत विचार : वार्ड 47 सागर सराय के मोहला मानपुर गली नंबर एक, 2 और 3 व गोयल नगर के मतदाताओं को एसआईआर में फॉर्म भरने में आ रही दिक्कतों के समाधान के लिए भाजपा मंडल महामंत्री आकाश भारद्वाज के नेतृत्व में राधा कृष्ण मंदिर पर विशेष सहायता कैंप लगाया गया। इसमें मुख्य अतिथि अल्पना रितेश गुप्ता जी रहीं। वार्ड 47 के भाजपा पार्षद डॉ. गौरव श्रीवास्तव ने शिविर में मतदाताओं का सहयोग किया। वार्ड 47 सागर सराय के मानपुर सेक्टर के अंतर्गत आने वाले बूथ संख्या 39, 41और 42 के बीएलओ व बूथ अध्यक्ष ने मतदाताओं को फार्म भरवाए। इस दौरान सेक्टर संयोजक वीरेंद्र शर्मा, बूथ अध्यक्ष कमल जैन, नितिन जैन, अंकित ठाकुर, दीपू सैनी, गौरव शर्मा आकाश भारद्वाज, दीपू छाबड़ा, रुबल सचदेवा, पारस भंडूला, नमन जैन के अलावा मंडल अध्यक्ष सूर्यमोहन भटनागर भी उपस्थित रहे।

हनुमान मंदिर पर किया भंडारा

प्रसाद वितरित करते बजरंग दल के प्रदेश अध्यक्ष रोहन सक्सेना व ग्रहण करते लोग।

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद राष्ट्रीय बजरंग दल के द्वारा मार्गशीर्ष अमावस्या तिथि के उपलक्ष्य में गुरुवार को भंडारे का आयोजन पीतल नगरी रोडवेज के निकट दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर के बाहर किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। वरदान नर्सिंग होम लाजपत नगर की डॉ. चंचल गुप्ता मुख्य अतिथि रहीं।

राष्ट्रीय बजरंग दल के प्रदेश अध्यक्ष रोहन सक्सेना ने बताया कि यह हमारा मासिक भंडारा संगठन की ओर से हर महीने की अमावस्या को दक्षिण मुखी हनुमान जी मंदिर के परिसर में आयोजित होता है। अगला भंडारा 20 दिसंबर को होगा। इस दौरान हिंदू परिषद के महानगर अध्यक्ष सुरेश कुमार गुप्ता, महानगर महामंत्री अमित अग्रवाल, विभाग अध्यक्ष राष्ट्रीय महिला परिषद पवित्रा शर्मा, जिला महामंत्री हिंदू परिषद आनंद प्रजापति, अर्पित सक्सेना, अनुज आर्य, देवीलाल प्रजापति, शिवम आदि मौजूद रहे।

सेमीफाइनल में भिड़ेंगे पारकर और रुक्मणी अकादमी

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : नेताजी सुभाष चंद्र बोस स्टेडियम में चल रही जूनियर बालक वर्ग की जिला स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता में गुरुवार को पहला मुकाबला कैलिबर क्रिकेट अकादमी और स्टेडियम सीनियर बॉयज के बीच खेला गया। स्टेडियम की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में 9 विकेट पर 113 रन बनाए। टीम की ओर से असित कुमार ने 35 और आकांक्षु ने 32 रन का योगदान दिया।

कैलिबर के गेंदबाज शाहनवाज ने 4 विकेट हासिल किए, जबकि जुनैद ने 2 और आरव और यूनिस ने 1-1 विकेट लिया। जवाब में कैलिबर की ओर से बल्लेबाज वीरप्पन ने सिर्फ 27 गेंदों में 65 रनों की आक्रामक पारी खेली और मोहम्मद शारिक ने 37 रन बनाए। टीम ने महज 8.3 ओवर में 3 विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। स्टेडियम की टीम से गेंदबाज आकांक्षु, प्रशांत और संकेत को 1-1 विकेट मिला। कैलिब ने यह मैच 7 विकेट से जीतकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। मैन ऑफ द मैच शाहनवाज रहे।

दूसरे मैच में नेक्स्ट जेनरेशन क्रिकेट अकादमी का मुकाबला एमपीएस क्रिकेट अकादमी के साथ हुआ। टॉस जीतकर एमपीएस की टीम ने पहले बल्लेबाजी की, लेकिन पूरी टीम 14.5 ओवरों में 85 रन पर सिमट गई। शिवा ने 18 और सैयद फज अली ने 17 रन बनाए। नेक्स्ट की ओर से यथार्थ ने तीन, जबकि गोविंद बोरा और अभिमन्यु ने दो-दो विकेट लिए। नेक्स्ट ने 15.1 ओवर में 3 विकेट खोकर आसानी से जीत दर्ज की।

क्रिकेट टूर्नामेंट में विजेता टीम कैलिबर क्रिकेट अकादमी के खिलाड़ी। ● अमृत विचार

● जिला स्तरीय जूनियर बालक क्रिकेट प्रतियोगिता में खेले गए दो रोमांचक मुकाबले

सेमीफाइनल मुकाबले आज

क्रीड़ाधिकारी सुनील कुमार सिंह ने बताया कि पहला सेमीफाइनल पारकर क्रिकेट अकादमी और रुक्मणी क्रिकेट अकादमी के बीच खेला जाएगा, जबकि दूसरा सेमीफाइनल नेक्स्ट जेनरेशन अकादमी और कैलिबर क्रिकेट अकादमी के मध्य होगा। दर्शकों में इन रोमांचक मुकाबलों को लेकर उत्सुकता बनी हुई है।

राजा ने 31, कृष्ण ने 19 और अब्दुल समद ने 13 रन बनाए। एमपीएस की ओर से अयान ने दो और सुजल ने एक विकेट लिया। नेक्स्ट ने 7 विकेट से सेमीफाइनल में जगह बनाई। यथार्थ व्यास को मैन ऑफ द मैच चुना गया।

सपा विधायक ने दिखाया यातायात नियमों को ठेंगा

कार्यालय संवाददाता,मुरादाबाद

अमृत विचार: एक ओर जिले में यातायात माह के अंतर्गत सड़क सुरक्षा जागरुकता अभियान चलाया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर सपा विधायक मोहम्मद फहीम इरफान का एक वीडियो वायरल हुआ है जिसमें वह बिना हेलमेट बाइक चला रहे युवक के पीछे बैठे दिखाई दे रहे हैं। हालांकि अमृत विचार किसी वायरल वीडियो की पुष्टि नहीं करता है।

गुरुवार को सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहे वीडियो में बिना हेलमेट के बाइक चला रहे युवक के पीछे बिलारी विधायक मोहम्मद फहीम दिख रहे हैं। जिस पर लोग यातायात नियमों के पालन पर सवाल खड़ा कर रहे हैं। हालांकि विधायक ने बताया कि वीडियो पुराना है और उन्होंने किसी प्रकार का नियम उल्लंघन नहीं किया है। यही नहीं महानगर व आसपास के चौराहों पर भी यातायात पुलिसकर्मी भी अभियान को लेकर गंभीर नहीं दिख रहे हैं। चौराहों पर खड़े यातायात पुलिस कर्मियों के सामने ही बिना हेलमेट के बाइक सवार लगातार गुजर रहे हैं, लेकिन उन्हें रोका नही जा रहा।

बिना हेलमेट बाइक चला रहे युवक के पीछे बैठे विधायक मोहम्मद फहीम इरफान।

● बिना हेलमेट बाइक पर निकले विधायक मोहम्मद फहीम इरफान

कार्यक्रम

एक साथ मंडप में बेटियों का मंत्रोच्चार व विधि विधान से कराया गया विवाह, मुख्य अतिथि मंत्री बलदेव सिंह औलख और अभिनेता मनीष बाधवा ने दिया आशीर्वाद

सामूहिक विवाह समारोह में परिणय सूत्र में बंधीं गरीब परिवार की 11 बेटियां

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : गुरुवार को चैरिटेबल ट्रस्ट आओ हाथ बढ़ाएं, एक पहल मदद की ओर से एमडीए के रामगंगा विहार स्थित एक शादी हॉल में आयोजित सामूहिक विवाह समारोह में आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की 11 बेटियों के हाथ पीले हुए। सूत्रधार बनीं आओ हाथ बढ़ाएं-एक पहल मदद की अध्यक्ष गीतांजलि पांडेय और उनके निष्ठ सहयोगी संस्थाओं के प्रतिनिधि।

समारोह के मुख्य अतिथि राज्य मंत्री बलदेव सिंह औलख और चाणक्य की भूमिका निभाने वाले अभिनेता मनीष बाधवा ने बेटियों को सुखमय वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद दिया। मुख्य पुरोहित पंडित केदार मुरारी व अन्य पुरोहितों ने अग्नि के समक्ष मंत्रोच्चार के बीच वैवाहिक कार्यक्रम कराया। राज्यमंत्री ने आयोजन की सराहना कर कहा कि अपनों के लिए तो सभी करते हैं, जो दूसरों की मदद के लिए आगे आए वह वास्तव में बधाई का पात्र है। इस दौरान करनवीर सिंह, वाईपी गुप्ता, डॉ. विशेष गुप्ता, राजेश रस्तोगी, प्रिया अग्रवाल, मारकंडेय मणि त्रिपाठी, गरिमा सिंह, रूबी किन्नर सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे। आयोजन में अध्यक्ष गीतांजली पांडेय के अलावा प्रबल पंत, राघव रस्तोगी, सोतेंद्र गुर्जर, प्रियंका भटनागर, रचित गुप्ता, अंकुर गुप्ता, अंकुर अग्रवाल, सुमित सैनी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। रूबी किन्नर ने जोड़ियों को शगुन भेंट किया। बेटियों को संवारने का कार्य ब्यूटीशियन रविता पाल ने किया। आयोजन की सफलता में अध्यक्ष गीतांजली पांडेय के अलावा प्रबल पंत, राघव रस्तोगी, सोतेंद्र गुर्जर, प्रियंका भटनागर, अनुज चौधरी, रचित गुप्ता, अंकुर गुप्ता ने सहयोग किया।

सामूहिक विवाह समारोह में वर-वधु के साथ मंत्री बलदेव सिंह औलख, अभिनेता मनीष बाजवा व संस्था के सदस्य। ● अमृत विचार

इन्हें किया गया सम्मानित

ज्योत्सना मुंजाल, अनीता गुप्ता, नीलम कोठीवाल, शिखा मित्तल, ऋतु नारंग, राजन अग्रवाल, मनोज आहूजा, प्रतीक आहूजा,नीरज एवं संजीव जैन, प्रदीप वार्ष्णेय, बॉबी उप्पल, ऐके गुप्ता एवं मधु गुप्ता, राकेश खन्ना, मन्नू अग्रवाल, यशपाल अरोड़ा, नीरज गुप्ता, राहुल गुप्ता, मनोज कुमार आरके कैटरर्स, नलिन गुप्ता, सीए अभिनव अग्रवाल, ब्यूटीशियन रविता पाल, ब्यूटीशियन सृष्टि अधिकारी, पुनीत जैन, दीपक मेंदीरत्ता को प्रतीक चिह्न व प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया।

मां-पिता को देख छलकीं बेटियों की आंखें

सामूहिक विवाह में खास यह रहा कि जिन बेटियों के लिए शादी समारोह आयोजित किया गया था उसमें से कई के माता-पिता इस दुनिया में नहीं थे। कुछ के पिता तो कुछ के सिर से मां का साया उठ चुका था। एक बेटी के परिजन कोरोना संक्रमण काल में काल कवलित हो गए थे। ऐसी बेटियों के लिए जब ट्रस्ट के सदस्यों ने मां-पिता, मामा-मामी, भाई-बहन और दादा-दादी के साथ ही बुआ और फूफा भूमिका निभाई तो वह फफक कर रो पड़ीं। सभी ने उन्हें अहसास नहीं होने दिया कि वह दुनिया में अकेली या कमजोर हैं।

गदर-2 के मेजर जनरल इकबाल के डॉयलाग को सभी ने सराहा

आयोजन में विशिष्ट अतिथि गदर-2 फिल्म में अंबरीश पुरी की जगह मेजर जनरल हामिद इकबाल के रूप में मुख्य खलनायक की भूमिका निभाने वाले अभिनेता मनीष वाधवा ने मंच से पसंदीदा अंदाज में डॉयलॉग बोलकर आयोजन को और खास बना दिया। लोगों की मांग पर उन्होंने गदर-2 का डॉयलॉग, -तारा सिंह, बड़े मौके पर आया है तू, आज मिलेगी मेरे कलेजे को ठंडक को सुनकर सभी ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनके अभिनय को सराहा। चाणक्य के किरदार को भी मंच पर संवाद के दौरान साझा किया। इसके अलावा गदर में सनी देओल का डॉयलॉग बुलंद आवाज में सुनाया, हिन्दुस्तान जिंदाबाद था, जिंदाबाद है और जिंदाबाद रहेगा। फिल्म अभिनेता मनीष वाधवा को अपने बीच पाकर बेटियां फूले नहीं समाईं। उनके साथ सेल्फी ली।

गोकुलदास में मनाई गई रानी लक्ष्मीबाई और इंदिरा गांधी की जयंती

मुरादाबाद, अमृत विचार: मिशन शक्ति फेज 5.0 के अंतर्गत गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज में राजनीति विज्ञान और इतिहास विभाग के संयुक्त आयोजन में गुरुवार को वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई और देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की जयंती मनाई गई।

प्राचार्या चारू मेहरोत्रा ने दोनों महान महिलाओं को भारतीय इतिहास और राजनीति की प्रेरक हस्तियां बताई।उनके साहस,नेतृत्व और योगदान को याद किया। छात्राओं ने दोनों के व्यक्तित्व पर विचार रखे। बीए पंचम सेमेस्टर की छात्रा सोनम ने रानी लक्ष्मीबाई पर प्रस्तुति देते हुए सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रसिद्ध कविता का वाचन किया। कार्यक्रम का संयोजन प्रो. मीनाक्षी शर्मा और प्रो. किरन त्रिपाठी ने किया। मुख्य अनुशासिका प्रो. किरन साहू सहित कॉलेज की कई अध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

न्यूज ब्रीफ

रसूलपुर रेलवे फाटक पर मरम्मत कार्य शुरू

कांठ, अमृत विचार : रसूलपुर रेलवे फाटक पर सफर करने वाले यात्रियों को अगले 2 दिन और मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। रसूलपुर रेलवे फाटक 432-बी गुरुवार को 22 नवंबर तक मरम्मत कार्य के चलते 3 दिन के लिए यह मार्ग पूरी तरह बंद रहेगा। इस दौरान वाहन चालकों को अन्य मार्ग से गुजरना होगा। सीनियर सेक्शन इंजीनियर ने बताया कि कांठ रसूलपुर फाटक 432-बी पर ट्रैक नीचे बैठ गया है। जिसे ऊपर उठाने और स्लीपरों को बदलने का कार्य किया जाना है। वाहनों का आवागमन 3 दिन के लिए बंद रहेगा। इस संबंध में एसडीएम कांठ संत दास पवार, कांठ थाना प्रभारी निरीक्षक सुदेश पाल सिंह, छजलैट प्रभारी प्रदीप कुमार, व सुरक्षा बल चौकी को पत्र भेज दिया गया है। यातायात को 433-सी व 434 से निकालने की मांग की गई है।

नहीं पहुंच रहे बकायेदार टीम कर रही वसूली

मुरादाबाद, अमृत विचार : बिजली विभाग द्वारा संचालित राजस्व वसूली कैंपों में उपभोक्ताओं की कम पहुंच के बाद विभाग ने अब बकायेदारों के घर-घर जाकर बिल जमा कराने की पहल की है। अधिकारियों के अनुसार शिविरों में अपेक्षित संख्या में लोग न आने पर टीमें सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचकर ऑनलाइन बिल जमा कराया जा रहा है। कई उपभोक्ताओं को ओटीएस योजना का लाभ लेने के लिए बिल समय पर जमा कराने की सलाह दी गई। मुख्य अभियंता अशोक कुमार चौरसिया ने बताया कि उन्होंने शिविरों का औचक निरीक्षण किया है जिसमे अधिकांश उपभोक्ताओं के लंबित बकाया ऑनलाइन ज्यादा जमा होने की बात सामने आई है। उन्होंने सभी श्रेणी के कर्मचारियों को निर्देश दिए कि उपभोक्ताओं को शिविरों के बारे में जानकारी व्यापक पर दें। इसके लिए मोबाइल फोन, मैसेज, सोशल मीडिया, तथा मंदिर-मस्जिद के लाउडस्पीकर से लगातार एनाउंसमेंट कराने पर विशेष जोर है।

खरीदारी करने आई युवती लापता

भोजपुर, अमृत विचार : थाना भगतपुर के गांव गांव मक्खन गंज से एक सप्ताह पहले भोजपुर में कपड़ों की खरीदारी करने निकली युवती लापता हो गई। उसका कोई सुराग नही लगने पर युवती के भाई मौहम्मद मौहम्मद कैफ ने अज्ञात के खिलाफ बहन को अगवा करने के आरोप में केस दर्ज कराया है।

केस वापस न लेने पर व्यापारी को जान से मारने की धमकी

संवाददाता, ठाकुरद्वारा

- दो आरोपियों पर मारपीट व धमकी देने का मुकदमा दर्ज

अमृत विचार : चेक से जुड़े मुकदमे को वापस न लेने पर दो लोगों द्वारा एक रद्दी व्यापारी के साथ मारपीट कर जान से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया है। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। उत्तराखंड काशीपुर के लक्ष्मीपुर पट्टी वार्ड 12 निवासी सुलेमान पुत्र रशीद ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उसका रद्दी का गोदाम मंडी समिति के पीछे स्थित है। बीते 4 नवंबर की शाम करीब 6 बजे ठाकुरद्वारा के मोहल्ला फतुल्लागंज स्थित कैलेंडर वाली मस्जिद के पास रहने वाले हाजी नासिर पुत्र अमीर हुसैन अपने एक साथी के साथ उसके गोदाम पर पहुंचे। आरोप है कि गोदाम में घुसते ही दोनों ने उसे पकड़कर मारपीट शुरू कर दी। विरोध करने पर गालियां देते हुए दोबारा हमला किया गया। व्यापारी के शोर मचाने पर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे, जिसके बाद दोनों आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए फरार हो गए। जाते-जाते उन्होंने चेतावनी दी कि अगर चेक का मुकदमा वापस नहीं लिया, तो जान से खत्म कर देंगे। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि मामले की गंभीरता को देखते हुए आरोपियों की तलाश तेज कर दी गई है और जल्द ही उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा।

लालापुर पीपलसाना में ग्रामीणों के प्रयास से वर्षों पुरानी समस्या खत्म

राहत : रामगंगा नदी पर अस्थायी पुल से शुरू हो गया आवागमन

संवाददाता, ठाकुरद्वारा

- गांव के वरिष्ठ व्यक्ति ने हवन-पूजन के साथ किया आरंभ
- किसानों को गन्ना मिल तक ले जाने में आ रही थीं दिक्कतें

अमृत विचार : सुरजननगर क्षेत्र के लालापुर पीपलसाना में किसानों की सुविधा के लिए रामगंगा नदी पर बनाया जा रहा अस्थायी पुल आखिरकार तैयार हो गया है। बुधवार को गांव के वरिष्ठ व्यक्ति बलराज सिंह भगत द्वारा विधि-विधान से हवन-पूजन कर पुल का शुभारंभ किया गया, जिसके बाद ग्रामीणों व किसानों का आवागमन औपचारिक रूप से शुरू हो गया। पुल तैयार होने से सैकड़ों किसानों को बड़ी राहत मिली है।

लालापुर पीपलसाना में बहने वाली रामगंगा नदी पर स्थायी पुल का निर्माण काफी समय से अधूरा पड़ा था। केवल लोहे के पिलर डालकर कार्य रोक दिया गया था, जिससे ग्रामीणों को खेतों तक पहुंचने में भारी परेशानी हो रही थी। कई महीनों से ग्रामीण या तो तीन किलोमीटर का लंबा रास्ता तय कर रहे थे, या फिर नदी पार करने के लिए नाव का सहारा लेना पड़ रहा था। बजट की कमी के कारण ठेकेदार भी काम से पीछे हटते दिखे, जिससे ग्रामीणों में नाराजगी बढ़ रही थी।

राय भूड के ग्राम प्रधान भानु प्रताप सिंह ने बताया कि अधिकारियों की उदासीनता की वजह से पुल का निर्माण अधर में लटक गया था। नदी के उस पार करीब 200 बीघा से अधिक जमीन स्थित है। इन दिनों गन्ना कटाई का दौर होने के कारण किसानों को खेतों से गन्ना निकालकर मिल तक ले जाने में भारी दिक्कतें आ रही थीं।

इन समस्याओं को देखते हुए गांव के लोगों ने खुद आगे आकर अस्थायी पुल का निर्माण तेजी से पूरा कराया। निर्माण कार्य पूर्ण होने पर बुधवार को विधिवत पूजन के बाद किसानों के लिए पुल को खोल दिया गया।

अब ट्रैक्टर, वाहन और पैदल यात्री आसानी से नदी पार कर सकेंगे। उद्घाटन कार्यक्रम में ओंकार सिंह पहलवान, फतेह सैनी, महिपाल, प्रदीप कुमार, डॉ. सिराज अंसारी, मनवीर विश्नोई, ओमवीर सिंह, देवराज सिंह, सोनू सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे। ग्रामीणों ने उम्मीद जताई कि जल्द ही स्थायी पुल का कार्य भी गति पकड़ेगा, ताकि भविष्य में उन्हें अस्थायी व्यवस्था पर निर्भर न रहना पड़े।

रामगंगा नदी पर अस्थायी पुल पर पूजा-अर्चना करते लोग। ● अमृत विचार

लौह पुरुष ने मजबूत की देश की एकता

सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती पर निकाली गई विशाल पदयात्रा

संवाददाता, कुंदरकी

एकता पदयात्रा के बाद सभा में मौजूद विधायक रामवीर सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष व अन्य। ● अमृत विचार

- लोगों को दिलाई एकता-अखंडता बनाए रखने और नशे से दूर रहने की शपथ

अमृत विचार : भारत रत्न लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर कुंदरकी विधायक ठाकुर रामवीर सिंह के नेतृत्व में यूनिटी मार्च निकाली गई। इस अवसर पर विधायक ठाकुर रामवीर सिंह ने उपस्थित नागरिकों और विद्यार्थियों को देश की एकता-अखंडता बनाए रखने तथा नशे से दूर रहने की शपथ दिलाई। एकता पदयात्रा कुंदरकी विधानसभा क्षेत्र के चारों मंडलों से होती हुई शिव मंदिर गोविंदपुर कलां चौराहा से प्रारंभ हुई और कल्याण सिंह पब्लिक स्कूल सैफपुर पल्ला में संपन्न हुई। जहां भारत माता और सरदार पटेल के चित्रों पर माल्यार्पण किया गया।

समापन कार्यक्रम पर आयोजित सभा में मुख्य अतिथि पिछड़ा वर्ग आयोग के उपाध्यक्ष सूर्य प्रकाश पाल ने कहा कि आजादी के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल ने अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए 500 से अधिक रियासतों का आजाद भारत में विलय कराया। उन्होंने देश की एकता और अखंडता को मजबूत किया।

कुंदरकी विधायक ने कहा कि पटेल के ' एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के सपने को आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पूरा कर रहे हैं। गुजरात के नर्मदा जिले में सरदार वल्लभ भाई पटेल की विशाल प्रतिमा स्थापित की गई है, जो देश की एकता और अखंडता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि पूरे देश में ऐसी एकता यात्राएं निकाली जा रही हैं, जो एकता और अखंडता का संदेश देती हैं। कार्यक्रम में एमएलसी जयपाल सिंह व्यस्त, जिला अध्यक्ष आकाश पाल, जिला महामंत्री कमल कुमार प्रजापति, ब्लॉक प्रमुख डॉ नवदीप यादव , मंडल अध्यक्ष महेंद्र सैनी, नीरज चंद्रा, संजय कश्यप , बबलू जाटव , जिला पंचायत सदस्य जेपी सैनी, रोहित सिंह, सोनू रस्तौगी, रविंद्र सिंह, नसीम खान, संजय दिवाकर, अरविन्द ठाकुर सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं, भाजपा पदाधिकारी एवं स्थानीय नागरिक उत्साहपूर्वक शामिल हुए।

पंखे पर साड़ी का फंदा लगा विवाहिता ने दी जान

बिलारी, अमृत विचार : मोहम्मद सादिकपुर गांव निवासी राजू सैनी हरियाणा में मजदूरी करता है। पत्नी मंजू(25) घर पर ही दो बेटियों के साथ रहती है। राजू 1 महीने पहले ही हरियाणा के गया था।

परिजनों के मुताबिक गुरुवार दोपहर 1:30 बजे सास कमरे में गई तो देखा कि मंजू पंखे से लटकी हुई थी। उन्होंने अन्य परिजनों को घटना की जानकारी दी इसके बाद पुलिस को भी घटना की जानकारी दी गई। तत्काल ही पुलिस क्षेत्र अधिकारी अशोक कुमार सिंह कोतवाली प्रभारी उदय प्रताप मलिक होकर पर पहुंचे इसके बाद फॉरेंसिक टीम को मौके पर बुलाकर साक्ष्य एकत्र कारण और शव को नीचे उतारकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम को भेज दिया। जानकारी मृतका के पति राजू सैनी और उसके मायके पक्ष को भी दी गई है। पति और मायके के पक्ष के लोग भी पोस्टमार्टम हाउस पहुंच गए। कोतवाली प्रभारी उदय प्रताप मलिक ने बताया कि प्रथम दृश्य हैंगिंग प्रतीत हो रहा है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही वजह स्पष्ट हो पाएगी। तहरीर नहीं मिली है।

इग्नू क्षेत्रीय केंद्र की डिजिटल पहल को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

- ई-ज्ञान संगम को मिला बेस्ट इनोवेटिव प्रैक्टिसेज अवॉर्ड-2025

अमृत विचार : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने डिजिटल नवाचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए क्षेत्रीय केंद्र नोएडा की पहल 'ई-ज्ञानसंगम : ज्ञान संसाधनों का एक डिजिटल संगम को बेस्ट इनोवेटिव प्रैक्टिसेज़ अवॉर्ड-2025 से सम्मानित किया है।

यह सम्मान इग्नू के 40वें स्थापना दिवस समारोह में 19 नवंबर को विश्वविद्यालय मुख्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम के दौरान दिया गया। इग्नू की कुलपति प्रो. उमा कांजीलाल तथा मुख्य अतिथि कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग, वैंकूवर (कनाडा) के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रो.पीटर स्कॉट ने टीम को प्रमाणपत्र एवं स्मृति-चिह्न प्रदान किए। ई-ज्ञानसंगम पहल का उद्देश्य शिक्षार्थियों, शिक्षकों और शोधार्थियों को विभिन्न डिजिटल ज्ञान संसाधनों को एक ही मंच पर सरलता से उपलब्ध कराना है। इससे डिजिटल शिक्षा की गुणवत्ता, पहुंच और प्रभावशीलता में वृद्धि होगी। इस नवाचार को विकसित करने वाली टीम में शामिल डॉ. सिरान मुखर्जी, वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अंजना, उप निदेशक सत्येन्द्र सिंह कुशवाहा, सहायक कार्यकारी टीम को विश्वविद्यालय की ओर से प्रमाणपत्र और स्मृति-चिह्न प्रदान किए गए।

हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद स्थित इग्नू अध्ययन केंद्र के समन्वयक प्रो. एके सिंह ने कहा कि ई-ज्ञानसंगम विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी प्लेटफॉर्म है। पोर्टल तक पहुंचने के लिए शिक्षार्थी इग्नू नोएडा क्षेत्रीय केंद्र की वेबसाइट पर जा सकते हैं या अधिक जानकारी के लिए हिन्दू कॉलेज स्थित इग्नू अध्ययन केंद्र से संपर्क कर सकते हैं।

गृह कर में भारी बढ़ोतरी पर फूटा गुस्सा

संवाददाता, ठाकुरद्वारा

गृह कर के विरोध में एसडीएम प्रीति सिंह को ज्ञापन सौंपते नगरवासी व व्यापारी।

- व्यापारियों व नगरवासियों ने नगर पालिका के खिलाफ एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

अमृत विचार : नगर पालिका परिषद ठाकुरद्वारा द्वारा इस वर्ष गृह कर में की गई भारी बढ़ोतरी के विरोध में व्यापारियों और नगरवासियों का आक्रोश बुधवार को उबाल पर आ गया। नगर के प्रमुख व्यापारिक संगठनों के नेतृत्व में बड़ी संख्या में लोग तहसील परिसर में एकत्र हुए और नगर पालिका के खिलाफ जमकर विरोध प्रदर्शन किया। बाद में उन्होंने मुख्यमंत्री को संबोधित एक ज्ञापन एसडीएम प्रीति सिंह को सौंपा।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के नगर अध्यक्ष संजीव सिंघल और उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के नगर अध्यक्ष लाइक आजाद के नेतृत्व में व्यापारी व स्थानीय लोग तहसील पहुंचे। नगर पालिका द्वारा बढ़ाए गए गृह कर नोटिस वापस लेने की मांग की। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि इस वर्ष गृह कर में 5 से 10 गुना तक वृद्धि कर दी गई है, जो न सिर्फ अनुचित है बल्कि आम लोगों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी डाल रही है।

व्यापारियों ने आरोप लगाया कि पालिका अध्यक्ष मनमाने ढंग से कर बढ़ा रहे हैं, जबकि पूर्व में गृह कर में केवल 10 से 20 प्रतिशत तक की सामान्य वृद्धि ही की जाती थी। वापस नहीं लेने पर आंदोलन की चेतावनी दी। प्रदर्शन में शामिल व्यक्तियों में जयप्रकाश शर्मा, शिवेंद्र गुप्ता, गुलाब सिंह वर्मा, आशुतोष अग्रवाल, अंशुल अग्रवाल, दीपक अग्रवाल, सत्यवीर सिंह, मोहम्मद हारुन, सचिन अग्रवाल, शाहिद हुसैन, जुल्फिकार, लियाकत, अमित कुमार, अंकित कुमार, दीपांशु अग्रवाल सहित बड़ी संख्या में व्यापारी मौजूद रहे।

शिक्षकों ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश के खिलाफ जुटने की जताई प्रतिबद्धता

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

- पदाधिकारियों ने कहा समय काफी कठिन, एकजुटता जरूरी

अमृत विचार : आरटीई अधिनियम लागू होने से पूर्व की नियुक्तियों पर टीईटी लागू किए जाने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले के विरोध में पूरे देश के शिक्षकों द्वारा आंदोलन चलाया जा रहा है। इसी क्रम में टीचर फेडरेशन आफ इंडिया के बैनर तले 5 दिसंबर को दिल्ली में होने वाली विशाल रैली की तैयारियों ओर एकजुटता प्रदर्शन करने के लिए उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ महानगर की बैठक गुरुवार को सिविल लाइन स्थित गांधी पार्क स्कूल में हुई। इसमें शिक्षकों ने प्रतिभाग कर आंदोलन के लिए सक्रिय सहयोग प्रदान करने की वचनबद्धता दोहराई।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए महानगर अध्यक्ष राकेश कौशिक ने कहा कि शिक्षकों के लिए यह समय काफी कठिन है। विभिन्न कार्यों को सफलता पूर्वक करने के दौरान ही टीईटी की अनिवार्यता के आदेश ने शिक्षकों को मानसिक रूप से परेशान किया हुआ है। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक टीचर फैडरेशन ऑफ इंडिया के साथ मिलकर लड़ाई को तैयार हो चुका है। 5 दिसंबर को एक बड़ी रैली का आयोजन दिल्ली में किया गया है। जिसमें देशभर के शिक्षक अपनी मांगो के लिए गरजेंगे। उन्होंने महानगर के सभी शिक्षकों से दिल्ली रैली में चलने की अपील भी की। महानगर मंत्री उस्मान आरिफ ने कहा कि 5 दिसंबर की सुबह 5:00 बजे सभी बसों के द्वारा दिल्ली पहुंचेंगे और सरकार को ताकत का एहसास करवाएंगे।

बैठक में राहुल शर्मा, सुगंध गुप्ता, शाकिर अली, प्रतिमा कुमारी, सीमा सिंह, रौशनी वर्मा, नीतू सिंह, पुष्पांजलि श्रीवास्तव, निशांत खान, प्रशांत कुमारी सहित काफी शिक्षक मौजूद रहे।

न्यूज डायरी

कबड्डी बालक में कंपोजिट अल्हदादपुर देवा की टीम जीती

बिलारी, अमृत विचार : बेसिक शिक्षा परिषदीय विद्यालयों की वार्षिक खेल प्रतियोगिताएं ब्लॉक संसाधन केंद्र बिलारी में आयोजित की जा रही हैं। 100, 200,400,800 मीटर दौड़ , कबड्डी, खो खो, ऊंची, लंबी कूद, भाला फेंक प्रतियोगिताओं का आरंभ खंड शिक्षा अधिकारी बिलारी विकास कुमार द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया। एस आर जी संजय विशाल नेगी, संकुल शिक्षक संतोष कुमार, फरहत अली, सुलेमान अंसारी, अशोक कुमार, अर्चना, हिमानी भटनागर आदि का सहयोग रहा। इस दौरान कबड्डी बालक में कंपोजिट स्कूल अल्हदादपुर देवा और बालिका में कंपोजिट स्कूल ग्वालखेड़ा की टीम जीती। खो खो बालिका में अल्हदापुर देवा जीती, 100 मीटर दौड़ में पुनीत कंपोजिट बिलारी, 200 मीटर में लोकेश अल्हदादपुर देवा, 400 मीटर लोकेश, कबड्डी में जूनियर हाई स्कूल अल्हदादपुर देवा विजयी रहे।

विद्यार्थियों को सामाजिक व नैतिक मूल्यों की महत्ता समझाई

ठाकुरद्वारा, अमृत विचार : सुरजननगर स्थित गांधी स्मारक महाविद्यालय में गुरुवार को ट्विनलेट डे (सौहार्द दिवस) के अवसर पर अंग्रेजी विभाग की ओर से जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में आपसी सौहार्द, सहयोग, टीमवर्क और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरुकता बढ़ाना था। महाविद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम का आरंभ विभागाध्यक्ष व वरिष्ठ प्राध्यापकों ने किया। डॉ. अरुण कुमार यादव, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. सुरमा सिंह, डॉ. अमरेश कुमार, डॉ. शन्जय सिंह, डॉ. रवि प्रकाश और डॉ. अनुज ने विद्यार्थियों को सौहार्द, व्यक्तित्व विकास, सकारात्मक संवाद, सामाजिक एकता व शिक्षा में नैतिक मूल्यों की महत्ता समझाई। कहा कि ट्विनलेट डे जैसे आयोजन विद्यार्थियों में सहयोग की भावना और सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देते हैं। विद्यार्थियों ने विचार व्यक्त किए। संचालन अंग्रेजी विभाग के सहयोगी सदस्यों ने किया।

नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर में 850 मरीजों का जांचा स्वास्थ्य, दवाइयां दी

बिलारी, अमृत विचार : क्षेत्र के स्योंडारा गांव में आयुष्मान हॉस्पिटल द्वारा गुरुवार को नि :शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें मरीज के स्वास्थ्य परीक्षण के बाद उन्हें दवाई वितरित की गई। शिविर का मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाकर आमजन को बुनियादी चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराना था। प्रबंधक अनुज यादव ने बताया कि कैंप में अनुभवी चिकित्सकों द्वारा मरीज को देखा गया। सुबह से ही बड़ी संख्या में महिलाएं , बुजुर्ग, बच्चे और युवा पहुंचे। टीम ने दिनभर लगभग 850 लोगों का उपचार कर दवाइयां दीं। शिविर में ब्लड प्रेशर, शुगर और सामान्य स्वास्थ्य जांच की गई। वहीं महिलाओं की स्वास्थ्य जांच व परामर्श दिया गया। साथ ही बुखार, दर्द, कमजोरी व मौसमी बीमारियों की जांच भी की गई। शिविर में अस्पताल की प्रबंधक अनुज यादव, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. मोहम्मद जुबैर, डॉ. मशकूर आलम, डॉ. अर्शी, डायरेक्टर मुन्ने इदरिससी, मेनेजिंग डायरेक्टरी डॉ देवेंद्र सैनी, धर्मवीर आदि मौजूद रहे।

किसानों की समस्याओं के समाधान की मांग

कांठ, अमृत विचार : भारतीय किसान यूनियन टिकैत के कार्यकर्ताओं ने तहसील में एसडीएम से मिलकर उन्हें 10 सूत्रीय ज्ञापन दिया और किसानों की समस्याओं के समाधान की मांग की। गुरुवार को पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने आयोजित बैठक में किसानों की समस्याओं को लेकर चर्चा की। बैठक में सुंदरकांड का आयोजन किया गया। तहसील कांठ क्षेत्र में मृदा परीक्षण केंद्र शीघ्र स्थापित करने की मांग उठी। गन्ना तौल पार्टी पर मिलों द्वारा गन्ना मूल्य अंकित न कर किसानों को लूटा जा रहा है। घटतौली पर सख्त नजर रखी जाए। मिलों की पर्चियां के वजन में असमानता दूर की जाए। किसानों के खेतों में तार नीचे तक लटके हैं, जिन्हें विभाग हटवाएं। इस दौरान पश्चिमी उत्तर प्रदेश के उपाध्यक्ष चौधरी ऋषिपाल सिंह, वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष हरदीप सिंह, हरकिशन शर्मा, विपिन कुमार, विमल कुमार, नरेंद्र कुमार, अनुज कुमार, अजय कुमार, रामकला सिंह, रामपाल सिंह, कल्याण सिंह, सतबीर सिंह मान, संजीव कुमार, हरचरण सिंह, पंकज कुमार, सियाराम विश्नोई समेत कई लोग मौजूद रहे।

फिश फीड फैक्ट्री में चोरी का खुलासा, दो आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता, ठाकुरद्वारा

- तीन मोटरें व अन्य पार्ट्स बरामद कोर्ट से भेजे गए जेल

अमृत विचार : सुरजननगर स्थित बंद फिश फीड फैक्ट्री में हुई चोरी का पुलिस ने खुलासा करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। उनकी निशानदेही पर तीन मोटरें और अन्य लोहे के पार्ट्स बरामद किए। दोनों आरोपियों को कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया गया।

गांव दुल्हापुर सबलपुर निवासी मोहम्मद अनस की सुरजननगर में फिश फीड फैक्ट्री लगभग 20 दिनों से बंद थी। इसी दौरान अज्ञात चोरों ने फैक्ट्री का ताला तोड़कर अंदर रखी मोटरें और लोहे के उपकरण चोरी कर लिए थे। फैक्ट्री स्वामी की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी थी। बुधवार देर रात चौकी प्रभारी ओंकार सिंह टीम के साथ गश्त पर थे, तभी मुखबिर से मिली सूचना पर दो संदिग्ध युवकों को हिरासत में लिया गया। पूछताछ के दौरान दोनों ने वारदात कबूल कर ली। पकड़े गए आरोपियों में निकिल उर्फ निखिल पुत्र विरेंद्र सिंह निवासी अमानतावाद और अमनदीप पुत्र चंद्र मोहन निवासी दुल्लापुर पट्टी जाट शामिल हैं। निशानदेही पर पुलिस ने चोरी की गई 10 एचपी, 5 एचपी और 2 एचपी की मोटरें, लोहे की कर-टाइप छेददार प्लेट तथा एक फुटर का लोहे का हेड बरामद किया। आरोपियों को गिरफ्तार कर आवश्यक कार्रवाई के बाद कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया। गिरफ्तारी टीम में उपनिरीक्षक सत्येंद्र बालियान, हेड कांस्टेबल राममोहन शर्मा, विपिन कुमार और कुलदीप कुमार शामिल रहे

बिना टिकट 58 रेल यात्री पकड़े

संवाददाता, कांठ

यात्रियों की चेकिंग करते रेलवे कर्मचारी। ● अमृत विचार

- न्यायाधीश रेलवे ने टीम और रेलवे पुलिस के साथ की छापेमार कार्रवाई

अमृत विचार : रेलवे स्टेशन कांठ पर न्यायाधीश रेलवे ने टीम व रेलवे पुलिस के साथ छापा मारकर एक पैसेंजर सहित दो एक्सप्रेस ट्रेन में बिना टिकट यात्रा कर रहे नाबालिक बच्चों सहित कुल 58 यात्रियों को पकड़ा। नाबालिग तीन बच्चों के टिकट की वसूली कर परिजनों को चेतावनी देकर छोड़ दिया।

रेलवे स्टेशन कांठ पर बिना टिकट यात्रियों की धर पकड़ के दिए रेलवे न्यायाधीश सर्वेश कुमार मिश्र ने रेलवे स्टाफ, आरपीएफ, एवं जीआरपी पुलिस बल के साथ आकस्मिक छापेमारी की। पुलिस स्टाफ ने ट्रेन से उतरने चढ़ने वाले यात्रियों को छोड़कर एकत्रित हो रही भीड़ को रेलवे बाउंड्री से दूर खदेड़ दिया। बिना टिकट यात्रियों ने ट्रेन की रफ्तार कम होने पर भागने का प्रयास किया। जिन्हें पुलिस बल ने धर दबोचा। टीम ने गुरुवार सुबह 64566 मेमो सहारनपुर मुरादाबाद पैसेंजर, 13152 डाउन सियालदह, 4674 अप शहीद एक्सप्रेस के कंपाउंडमेंट में घुसकर अभियान चलाया। पैसेंजर एवं दोनों एक्सप्रेस ट्रेन में बिना टिकट पकड़े गए। यात्रियों को प्रतीक्षालय कांठ में पुलिस बल की देखरेख में नजर बंद कर दिया। रेलवे न्यायाधीश ने बताया कि लगभग 2 घंटे तक चले धर पकड़ अभियान में लगभग 58 बिना टिकट यात्री पकड़े गए हैं। जिन्हें बस द्वारा मुरादाबाद न्यायालय में पेश किया गया।

अमृत विचार

मुरादाबाद , शुक्रवार, 21 नवंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

पुलिस ने गिरफ्तार किया दुष्कर्म का आरोपी

रामपुर, अमृत विचार : कोतवाली थाना क्षेत्र निवासी युवती ने 23 अक्टूबर को शादी का झांसा देकर दुष्कर्म के मामले में मोहल्ला बेरियान निवासी दानिश और उसकी मां के खिलाफ मुकदमा कराया था। जिसके बाद पुलिस ने दानिश को थाना सफदरजंग एन्क्लेव जनपद साऊथ वेस्ट नई दिल्ली को ग्रीन पार्क में स्थित गुरु प्रॉपर्टी से गिरफ्तार करने के बाद कोर्ट में पेश किया। वहां से कोर्ट ने उसको जेल भेज दिया।

पशुओं के मालिकों पर कार्रवाई की मांग की

मसवासी, अमृत विचार : क्षेत्र के करीमपुर मिलक नौखरीद के ग्रामीणों ने छुट्टा गोवंशीय पशुओं को ट्रैक्टर-ट्रॉली में भरकर मिर्जापुर गोशाला भेजा है। अपने पशुओं का छुट्टा छोड़ने वाले पशुपालकों के खिलाफ पुलिस से कार्रवाई की मांग की है। गुरुवार को करीमपुर के पूर्व प्रधान सुशील कुमार, मुकेश मौर्य, सुरेश पाल, मोहम्मद दानिश आदि ने करीमपुर और मिलक नौखरीद गांव में घूम रहे छुट्टा गोवंशीय पशुओं को पकड़कर नवाब नगर मिर्जापुर की पशु आश्रय स्थल में दाखिल कराया। किसानों का कहना है की छुट्टा घूम रहे पशु फसलों में नुकसान पहुंचाते हैं। रातभर फसलों की रखवाली करनी पड़ती है, मामले में किसानों ने चौकी इंचार्ज अजय कुमार शुक्ला को शिकायती पत्र दिया है। जिसमें पशुओं को छुट्टा छोड़ने वाले मालिकों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

मारपीट व छेड़छाड़ मामले में रिपोर्ट दर्ज

टांडा, अमृत विचार : क्षेत्र के गांव निवासी युवती ने आरोप लगाया है कि 14 नवंबर की सुबह 10 बजे बंटी हथियारों और लाठी-डंडों के साथ उसके घर में घुस आए। आरोपियों ने घर में घुसते ही उसकी मां और बहन के साथ मारपीट की। वह अपनी मां को बचाने आगे बढ़ी तो आरोपियों ने अश्लील हरकत शुरू कर दी। चीख-पुकार सुनकर पड़ोसी पहुंचे तो आरोपी जान से मारने और मुकदमे में फंसाने की धमकी देते हुए फरार हो गए। बताया कि आरोपी पहले भी उसकी मां पर जानलेवा हमला कर चुके हैं। युवती ने घायल मां को अस्पताल में भर्ती कराया है। युवती ने आरोपी बंटी, दीपू, सोनम और देवदत्त के खिलाफ कोतवाली में मामला दर्ज कराया है।

10 दिन के बाद नदी में मिला मजदूर का शव

रामपुर, अमृत विचार : 10 दिन बाद नदी में उतराता मजदूर का शव मिलने के बाद सनसनी फैल गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। थाना खजुरिया के गांव बलखेड़ा निवासी 28 साल का वीर सिंह 11 नवंबर को लापता हो गया था। 12 नवंबर को उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई थी। उसके बाद से परिजन उसको तलाश कर रहे थे। गुरुवार सुबह उसका शव कुछ लोगों ने बेगमाबाद नदी के पास देखा। उसके बाद मौके पर पुलिस आ गई। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजा। पुलिस मामले में जांच कर रही है।

भाइयों में मारपीट

ढकिया, अमृत विचार : क्षेत्र के परौता गांव निवासी रघुनाथ व श्याम सिंह सगे भाई हैं। जिनके बीच घरेलू विवाद को लेकर दो दिन पूर्व मारपीट हो गई। दोनों भाई एक दूसरे के खिलाफ मारपीट की रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए ढकिया चौकी पहुंचे और दोनों भाईयों ने एक दूसरे के खिलाफ तरह तरह के आरोप लगाते हुए रिपोर्ट दर्ज कराने को पुलिस को तहरीर दी है। लेकिन पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज नहीं की है।

चीनी मिलकर्मी सहित दो की मौत

हाईवे पर शहजादनगर क्षेत्र में हुआ हादसा, 22 दिन पहले हुई थी सौरभ की शादी

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : दिल्ली-लखनऊ नेशनल हाईवे पर गुरुवार को दो अलग-अलग सड़क हादसों में त्रिवेणी चीनी मिल के ऑपरेटर समेत दो लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने दोनों के शवों को पोस्टमार्टम कराने के बाद परिजनों के हवाले कर दिया। वहीं, धमोरा में अज्ञात वाहन की चपेट में आने से गार्ड की मौत हो गई।

मृतक सौरभ।

मिलक थाना क्षेत्र के गांव करिंगा निवासी 28 वर्षीय सौरभ कुमार टांडा स्थित त्रिवेणी चीनी मिल में ऑपरेटर के पद पर तैनात था। वह तड़के 5 बजे बाइक से ड्यूटी को जा रहा था कि दिल्ली-लखनऊ हाईवे के दुर्ग नगला जीरो प्वाइंट पर अज्ञात वाहन ने बाइक सवार को रौंद दिया। जहां उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जहां शाम को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों के हवाले कर दिया।

अस्पताल में मौजूद सौरभ के परिजन। ● अमृत विचार

जिला अस्पताल में बैठे मृतक के परिजन। ● अमृत विचार

22 दिन पहले मृत सौरभ की शादी: 29 अक्टूबर को मनीषा के साथ की गई थी। मायके और ससुराल वाले अभी तक दोनों की शादियों की खुशियों को भूल नहीं पाए थे कि गुरुवार को हुए हादसे में सौरभ की मौत हो गई। पति के मौत की जानकारी मिलने के बाद मनीषा के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। वह बेसुध होकर गिर गई। सौरभ के ससुराल वाले घर की ओर दौड़ पड़े। सौरभ तीन भाइयों और एक बहन में दूसरे नंबर का था। सौरभ की बहन की शादी हो चुकी है।

वाहन की चपेट में आने से गार्ड की मौत

सिविल लाइंस के बाबा दीप सिंह कालोनी निवासी 50 वर्षीय भजन सिंह फौज से रिटायर्ड होने के बाद गार्ड की नौकरी कर रहे थे। वह बुधवार शाम 7 बजे किसी काम से धमोरा गए थे। इस दौरान वह सड़क पार कर रहे थे। सामने से आए अज्ञात वाहन ने उनको चपेट में ले लिया। जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

पांच दिन में हादसों ने निगल ली पर पांच की जान

रविवार को दो ममेरे-फुफेरे भाइयों की भोट थाना क्षेत्र में मौत हो गई थी। इसके अलावा सोमवार को अजीमनगर में हुए हादसे में महिला की मौत हो गई थी। 18 नवंबर को खजुरिया में महिला की मौत हो गई। 19 तारीख को बिलासपुर और शहजादनगर में दो लोगों की हादसे में मौत हो गई थी। जबकि गुरुवार तड़के एक बाइक सवार युवक की मौत हो गई।

टीम ने 28 किलो सरसों के तेल को किया सीज

रामपुर, अमृत विचार : खाद्य एवं पेय पदार्थों में मिलावट पर प्रभावी रोकथाम के लिए अभिहीत अधिकारी सुनील कुमार शर्मा ने टीम के साथ मिलकर गुरुवार को अभियान चलाया। टांडा में खाद्य तेल के विक्रेता मजहर अली के यहां से 28 किग्रा. सरसों का तेल सीज किया, जिसकी कीमत 4480 रुपये है। वहीं दूध के सात नमूने लिए।

दुग्ध विक्रेता मुजाहिद अली से दूध का 1 नमूना लिया। लालपुर स्थित दुग्ध विक्रेता रियासत अली से दूध का 1 नमूना लिया। प्रानपुर रोड स्थित दुग्ध विक्रेता काशीराम से यहां से दूध का 1 नमूना लिया। जालिफ नगला मिलक में स्थित अनवार डेयरी से दूध का 1 नमूना लिया। ग्राम भैसोड़ी मिलक स्थित बाबू डेयरी के बाबू पुत्र पीरू से दूध का 1 नमूना लिया। हरिओम स्वीट्स डेयरी के हरिओम सैनी से दूध का 1 नमूना लिया। इस प्रकार विभिन्न खाद्य पदार्थों के कुल 7 विधिक नमूने संग्रहित करके जांच के लिए प्रयोगशाला भेजे। जांच रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद कार्रवाई की जाएगी। सचल दल में मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी वीरेंद्र सिंह कुशवाहा, खाद्य सुरक्षा अधिकारी अशोक कुमार, शहाबुद्दीन दोस्त, धर्मपाल सिंह, देवकांत, अजरा बी मोहम्मद रहे।

पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के चित्र पर पुष्प अर्पित करते कांग्रेसी। ● अमृत विचार

इंदिरा गांधी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया नमन

● कांग्रेसियों ने मनाई पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की जयंती

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : पूर्व विधायक संजय कपूर के कार्यालय पर गुरुवार को कांग्रेसियों ने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की जयंती पर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। इंदिरा गांधी के राजनीतिक जीवन, उनके संघर्ष व देश के विकास में उनके अविस्मरणीय योगदान पर चर्चा हुई।

पूर्व विधायक संजय कपूर ने कहा कि इंदिरा गांधी का नेतृत्व असाधारण था। उन्होंने देश को मजबूती से संभाला और भारत को वैश्विक स्तर पर नई पहचान दिलाई। उनका जीवन प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए प्रेरणा का स्रोत है। जिलाध्यक्ष निक्कू पंडित ने कहा कि इंदिरा गांधी ने हमेशा देश के सबसे अंतिम व्यक्ति को प्राथमिकता दी। उनका 'गरीबी हटाओ का नारा और राष्ट्रहित के लिए दृढ़ निर्णय कांग्रेस की मूल आत्मा हैं। इस अवसर पर बाकर अली खां, साहिर रजा खां, मुति उर रहमान खां, एसके अग्रवाल, शारिब खां, नोमान मुमताज खां, अर्सलान खां, मोईन पठान, यासिर शाह खां, चितरंजन, हनी रजा खां, आरिज रजा खां, फरीद खां, रामगोपाल सैनी, अली रजा इमाम, राजेश लोधी, फहीम पहलवान, जीशान रहे। संचालन शारिब अली खां ने किया।

चीनी मिल में पूजा अर्चना करते राज्यमंत्री एवं डीएम। ● अमृत विचार

रुद्र बिलास चीनी मिल में गन्ना पेराई सत्र शुरू

संवाददाता, बिलासपुर

अमृत विचार : कृषि राज्यमंत्री बलदेव सिंह औलख एवं जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने बिलासपुर स्थित रुद्र-बिलास किसान सहकारी चीनी मिल के पेराई सत्र का आरंभ किया। राज्यमंत्री एवं जिलाधिकारी ने पेराई सत्र की शुरुआत की।

गन्ना लेकर पहुंचे किसानों नवीन व विजय को सम्मानित किया। दोनों किसानों द्वारा लाए गन्ने की कांटे पर तोल कराई गई। राज्यमंत्री व जिलाधिकारी ने मिल प्रबंधक तथा जिला गन्ना अधिकारी को निर्देश दिए कि गन्ना लाने वाले किसानों को किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए। गन्ना किसानों की सुविधा के लिए निर्मित किसान भवन का भी उद्घाटन राज्यमंत्री व जिलाधिकारी द्वारा संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी बिलासपुर, सचिव आरके जैन, मिल प्रशासन, जिला गन्ना अधिकारी मौजूद रहे।

ई-रिक्शा पलटने से मजदूर की मौत

ढकिया, अमृत विचार : क्षेत्र के मधुकर गांव निवासी मजदूर की ई रिक्शा पलट जाने से मौत हो गई।

ढकिया चौकी क्षेत्र के मधुकर गांव निवासी 40 वर्षीय रूपकिशोर मौर्य मजदूरी करके अपने परिवार का पालन पोषण करता था। सोमवार को वह ई-रिक्शा में बैठकर चंदौसी से अपनी दवा लेने जा रहा था। बताया जाता है कि शाहबाद आसफपुर मार्ग पर आसफपुर रेलवे स्टेशन के समीप स्थित पुल के पास अचानक ई-रिक्शा अनियंत्रित होकर पलट गया। ई-रिक्शा के सड़क किनारे पलट जाने से रूपकिशोर को चोट लग गई। परिजन उपचार के लिए चंदौसी ले गए। लेकिन डाक्टर ने उसके परिजनों को हायर सेंटर ले जाने की सलाह दी। जिसके बाद परिजन मंगलवार को उसे उपचार के लिए बरेली के अस्पताल में ले गए। जहां उसकी मंगलवार रात में मौत हो गई। जब मृतक का शव उसके घर पहुंचा तो घर में कोहराम मच गया।

डीएम ने एसआईआर का किया निरीक्षण

संवाददाता, बिलासपुर

अमृत विचार : जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण के दृष्टिगत तहसील बिलासपुर के बूथ 92 पर कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार निर्वाचन प्रक्रिया को बारीकी परखा।

निरीक्षण के दौरान उन्होंने बीएलओ से गणना पत्र विवरण की प्रगति एवं मतदाताओं की संख्या एवं प्रपत्रों की अद्यतन स्थिति की जानकारी प्राप्त की तथा निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने बीएलओ ऐप पर ऑनलाइन फीडिंग की प्रक्रिया का अवलोकन किया। निर्देशित किया कि सभी बीएलओ शत-प्रतिशत गणना प्रपत्रों का विवरण सुनिश्चित करते हुए प्रपत्रों के संग्रहण का कार्य भी समयबद्ध रूप से पूर्ण करें। इस दौरान उन्होंने बीएलओ ऐप से ऑनलाइन फीडिंग कर डिजिटाइजेशन भी किया। उन्होंने कहा कि निर्वाचक कार्यों से जुड़ी प्रत्येक प्रक्रिया में शत-प्रतिशत शुद्धता एवं पारदर्शिता सुनिश्चित की जाए ताकि किसी भी प्रकार की शिकायत की गुंजाइश न रहे। निरीक्षण के दौरान उपजिलाधिकारी बिलासपुर अरुण कुमार भी मौजूद रहे।

बिलासपुर में बीएलओ से जानकारी लेते डीएम। ● अमृत विचार

एक ही स्थान से गणना प्रपत्र भरें

रामपुर, अमृत विचार : उप जिला निर्वाचन अधिकारी संदीप कुमार वर्मा ने बताया कि विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण में यदि किसी मतदाता का एक से ज्यादा स्थानों पर वोट है तो एक ही स्थान से गणना प्रपत्र भरें। उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतदाताओं से अपील की है। मगर फार्म का पूरा विवरण नहीं है तो अपना नाम, मोबाइल नंबर या माता-पिता के नाम वाला कॉलम भर दें। मतदाता सूची के आलेख्य प्रकाशन के बाद ऐसे मतदाता आयोग द्वारा निर्धारित दस्तावेज देकर गणना प्रपत्र को पूरा कर सकते हैं। ऐसा न हो कि पूरा गणना फार्म भरने के इन्तजार में वह गणना प्रपत्र निर्धारित समय में जमा ही न कर पाएं।

सूची में नाम न मिलने पर असमंजस में मतदाता

रामपुर, अमृत विचार : वर्ष 2025 की सूची में नहीं देखकर मतदाता असमंजस में हैं। जबकि उनका नाम वर्ष 2003 की सूची में दर्ज है।

इस मामले में पूर्व सभासद नुसरत रहमान खां उर्फ बालम खां ने जिला निर्वाचन अधिकारी को भेजे पत्र में कहा है कि जिन मतदाताओं का नाम वर्ष 2003 की मतदाता सूची में है, लेकिन 2025 की सूची में नहीं है। वह अपना नाम वर्ष 2025 की सूची में कैसे दर्ज कराएं। जबकि, वर्ष 2003 की मतदाता सूची में भाग संख्या में जिस मतदाता का नाम है और वह जीवित है और उसी स्थान पर रह रहा है। उसका नाम 2025 की सूची में नहीं है और 2025 में नाम दर्ज करने के लिए उसको कोई फार्म भी नहीं दिया गया है। वर्ष 2025 की मतदाता सूची में नाम होने पर बीएलओ उसको संतोषजनक जवाब भी नहीं दे पा रहे हैं। मांग है कि लोगों को बताया जाए कि वह ऐसी स्थिति में अपना एसआईआर 2025 का फार्म कैसे भरें।

मंगेतर ने युवती का शारीरिक शोषण किया

स्वार, अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के गांव निवासी युवती ने पुलिस को तहरीर देकर आरोप लगाया है कि लगभग दो वर्ष पूर्व उसका रिश्ता थाना केमरी के गांव स्वार का मझरा निवासी सुहेल के साथ तय हुआ था। रिश्ता होने के बाद सुहेल घर पर आता था। युवती का आरोप है कि आरोपी उसे कई बार रामपुर के कई होटलों में भी ले गया। जब युवती के परिजनों ने शादी के लिए युवक के परिजनों से बात की तो उन्होंने दहेज पांच लाख रुपये नकद एवं कार की मांग शुरू कर दी। मांग पूरी न करने पर दहेज लोभियों ने शादी करने से इनकार कर दिया। रिश्ता टूटने के बाद सुहेल ने अश्लील फोटो एवं वीडियो वायरल की धमकी देकर दी। घर में घुसकर मारपीट की। पीड़िता ने मंगेतर सुहेल सहित मुर्शिद अली, गुलवेज, यासीन जहां, मुर्शिद अली, रेहान, मुरसलीन के खिलाफ तहरीर दी थी। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पटेल के सिद्धांतों को आत्मसात कर रहे पीएम

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : शाहबाद में गुरुवार को भाजपा जिलाध्यक्ष हरीश गंगवार ने रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम का आरंभ किया। जिलाध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री लगातार सरदार वल्लभ भाई पटेल के राष्ट्रवाद, एकता और संगठन के सिद्धांतों को आत्मसात करते हुए देश को मजबूत और सक्षम बना रहे हैं।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत आज तीव्र गति से विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है। कार्यक्रम में स्कूल, कॉलेज के बच्चों और भाजपा के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों के साथ चले। सभी ने राष्ट्रीय एकता और अखंडता के संदेश के साथ दौड़ लगाई। जिलाध्यक्ष हरीश गंगवार ने कहा कि आज का भारत एक भारत, श्रेष्ठ भारत के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने देश की 562 रियासतों को एक सूत्र में पिरोकर जिस मजबूत भारत की नींव रखी थी, उसी आदर्श को आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री मोदी राष्ट्र निर्माण में जुटे हैं। युवाओं से आह्वान किया कि वे सरदार पटेल के आदर्शों को जीवन में उतारें और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए समाज को एकजुट करने का कार्य करें। उनके अनुसार देश की प्रगति तभी संभव है, जब समाज के सभी वर्ग एक दिशा में आगे बढ़ें, राष्ट्रहित के लिए सक्रिय रहें। कार्यक्रम के दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं ने एकता, सद्भाव और राष्ट्रभक्ति का संदेश देते हुए विभिन्न नारे लगाए। इस अवसर पर सुभाष भटनागर, काशीराम दिवाकर, मुन्नी देवी, सुरेश गुप्ता, रविंद्र रवि, नरेंद्र ठाकुर, विवेक पांडेय, संजय यादव, विकास दीक्षित, महेश चंद्रवंशी, राजकुमार गुप्ता, सुमित भटनागर, अनुभव शर्मा, आशीष गुप्ता रहे।

कार्यक्रम को संबोधित करते जिलाध्यक्ष हरीश गंगवार। ● अमृत विचार

● शाहबाद में आयोजित रन फॉर यूनिटी में बोले भाजपा जिलाध्यक्ष

न्यूज डायरी

एसपी ने थाने का किया निरीक्षण

रामपुर, अमृत विचार : बुधवार रात को पुलिस अधीक्षक विद्या सागर मिश्र और एएसपी अनुराग सिंह द्वारा थाना सिविल लाइंस का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कार्यालय, मालखाना, भोजनालय, हवालात, कम्प्यूटर कक्ष, मिशन शक्ति केंद्र आदि निरीक्षण किया। थाना कार्यालयों पर बने अपराध, त्यौहार, मालखाना, विवेचना, फ्लाई शीट आदि एवं उनके रख रखाव, साफ-सफाई, उनमें अंकित की जाने वाली प्रविष्टियों को चेक किया।

कुएं में गिरी नीलगाय

मसवासी, अमृत विचार : क्षेत्र के गोलू टांडा में नीलगाय कुएं में गिर गई। काफी में मशक्कत के बाद वन विभाग की टीम ने जेसीबी की मदद से नीलगाय को जख्मी हालत में बाहर निकाला। क्षेत्र के आर्सल पार्सल के गोलू टांडा में जंगल से भटककर नीलगाय गुरुवार को गांव की तरफ भागी जो गांव के नजदीक कुएं में गिर गई। ग्रामीणों की काफी कोशिश के बाद भी नीलगाय को बाहर नहीं निकाला जा सका। तब ग्रामीणों ने मामले की सूचना वन विभाग को दी। सूचना पाकर वन दारोगा कुलबीर सिंह, लाल सिंह, श्रवण कुमार, हरीश कुमार आदि वनकर्मी मौके पर पहुंचे। जेसीबी मंगाकर उसकी मदद से नीलगाय को बाहर निकाला। नीलगाय जेसीबी से निकालते समय घायल हो चुकी थी। वनकर्मी नीलगाय को उपचार करने के बाद उसे जंगल में छोड़ गए।

सड़क पार करते समय जेब्रा क्रॉसिंग का करें पालन

मिलक, अमृत विचार : गुरुवार को थाना मिलक क्षेत्र में स्थित प्रेम पब्लिक जूनियर हाईस्कूल में यातायात पुलिस टीम द्वारा विद्यार्थियों को यातायात नियमों एवं सड़क सुरक्षा के विषय में जानकारी देकर जागरूक किया। सड़क पार करते समय जेब्रा क्रॉसिंग एवं ट्रैफिक सिग्नल का पालन करें। कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। पुलिसकर्मियों ने बताया सड़क पार करते समय जेब्रा क्रॉसिंग एवं ट्रैफिक सिग्नल का पालन करें। हेलमेट एवं सीट बेल्ट का उपयोग अनिवार्य है। ओवरस्पीडिंग एवं स्टंट ड्राइविंग से होने वाले खतरों की जानकारी दी। बताया कि मोबाइल फोन का वाहन चलाते समय प्रयोग न करें। पुलिस टीम ने विद्यार्थियों को बताया कि छोटी-सी लापरवाही भी बड़े हादसे का कारण बन सकती है।

डिग्री कॉलेज में छात्राओं को पढ़ाया कानून का पाठ

रामपुर, अमृत विचार : गुरुवार को पुलिस ने राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में छात्राओं को महत्वपूर्ण विषयों पर जागरूक किया गया। कार्यक्रम के दौरान यातायात सुरक्षा, साइबर अपराधों से बचाव, तथा मिशन शक्ति से संबंधित जानकारी दी। एएसपी अनुराग सिंह ने विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा के मूल नियमों, हेलमेट, सीट बेल्ट के अनिवार्य उपयोग, ओवरस्पीडिंग के दुष्परिणाम, गलत दिशा में वाहन चलाने की खतरनाक प्रवृत्ति तथा ट्रैफिक नियमों का पालन न करने से होने वाली दुर्घटनाओं के बारे में विस्तार से अवगत कराया। साइबर अपराधों की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए छात्रों को धोखाधड़ी, अपडेट ठगी, के बारे में जानकारी दी।

इकाई लगाने के लिए 50 प्रतिशत अनुदान देगा उद्यान विभाग

रामपुर, अमृत विचार : अधीक्षक राजकीय उद्यान अजय कुमार ने बताया कि जनपद में एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना के अंतर्गत प्री हार्वेस्ट कार्यक्रम के तहत संरक्षित खेती करने के लिए पॉलीहाउस लगाने के लिए उद्यान विभाग द्वारा इकाई लागत का 50 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है। बताया कि अभी तक जनपद में दो पॉलीहाउस का निर्माण किया गया तथा दो पॉलीहाउस का प्रस्ताव जोकि 60 लाख रुपये का है, मुख्यालय प्रेषित किए गए है। एक पॉलीहाउस के निर्माण में प्लाटिंग मैटेरियल के साथ 4000 स्क्वायर मीटर के पॉलीहाउस निर्माण में लगभग 50 लाख रुपये तक की लागत आती है, जिसका 50 प्रतिशत अनुदान देय है। जनपद में ब्लूबेरी व आर्किड की खेती हेतु पॉलीहाउस के निर्माण के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं।

26 को होगा छात्रवृत्ति का डाटा लॉक

रामपुर, अमृत विचार : जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी गौरव खड़ायत ने बताया कि अल्पसंख्यक वर्ग के वंचित रह गए छात्र-छात्राओं के लिए समय सारणी जारी कर दी गई है।

छात्र-छात्राओं के लिए वर्ष 2024-25 दशमोत्तर छात्रवृत्ति कक्षा 11-12 को छोड़कर योजना के तहत आवेदन करना है। 20 से 26 तक शिक्षण संस्थान द्वारा मास्टर डाटा लॉक किया जाएगा। विवि एफिलिएटिंग एजेंसी द्वारा फीस सत्यापन 1 दिसंबर तक होगा। छात्र-छात्राओं द्वारा पंजीकरण और आवेदन 20 से 26 तक कराया जा सकता है। 3 दिसंबर तक शिक्षण संस्थान द्वारा आवेदन पत्र ऑनलाइन सत्यापित एवं अग्रसारित किया जाना है। छात्र-छात्राओं द्वारा आवेदनों को सही करना, हार्ड कॉपी को शिक्षण संस्थान में जमा करना एवं शिक्षण संस्थान द्वारा आवेदन पत्र को 11 से 18 दिसंबर तक ऑनलाइन सत्यापित एवं अग्रसारित किया जा सकता है।

रात में न्यूनतम तापमान हुआ 13 डिग्री

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : सुबह सड़कों पर कोहरे की चादर के कारण दृश्यता घटने से सड़कों पर वाहन रेंगते रहे। जिले के विभिन्न हिस्सों में आधी रात से ही कोहरा छाया रहा। गुरुवार सुबह भी कोहरे की वजह से लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। गुरुवार को अधिकतम तापमान 22 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम तापमान 13 डिग्री सेल्सियस, आद्रता 57 प्रतिशत और वायु वेग 6 किमी. प्रतिघंटा रहा।

मौसम वैज्ञानिक डॉ. उदय प्रताप शाही ने रात्रि में सामान्य से कम तापमान रहने का अनुमान जताया है। कोहरे के कारण वाहनों की रफ्तार धीमी रही। सुबह ट्यूशन पढ़ने जाने वाले छात्र-छात्राओं, बाइक चालकों एवं यात्रियों को परेशानी हुई। धीरे-धीरे बढ़ती ठंड से देर सुबह तक लोग घर में दुबके रहे, सुबह 8 बजे के बाद तक कोहरा छाया रहा। जिसके कारण देर रात को सड़कों पर वाहन रेंग-रेंग के चले। सूरज चमकने के बाद कोहरा साफ हुआ और वाहनों ने फर्राटा भरा। कोहरा होने पर ट्रक चालकों ने ट्रक सड़क किनारे ढाबों पर खड़े कर दिए जबकि, कुछ ट्रक चालकों ने सड़क किनारे भारी वाहन खड़े कर कोहरा छटने का इंतजार किया। कोहरा छंटने के बाद ट्रक चालकों ने वाहन गंतव्य की ओर दौड़ा दिए। गुरुवार शाम आसमान में बादल उमड़ते-घुमड़ते रहे और मौसम साफ हो गया। मौसम वैज्ञानिक ने बताया कि अगले तीन दिन मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। दिन में तापमान में हल्की बढ़त जबकि, रात्रि में तापमान सामान्य से कम रहने के आसार हैं।

गुरुवार को दोपहर बाद साफ रहा मौसम। ● अमृत विचार

सीएम को पत्र भेजकर कार्रवाई की मांग

मिलक, अमृत विचार : भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला मंत्री प्रदीप कुमार जाटव का कहना है कि तहसील मिलक के ग्राम नवदिया में भूमि गाटा 87 से जुड़े फर्जीवाड़े और राजस्व अभिलेखों में अवैध परिवर्तन का गंभीर मामला सामने आया है।

उन्होंने बताया प्रकरण की शिकायत उपजिलाधिकारी, जिलाधिकारी, मंडलायुक्त और मुख्यमंत्री को भेजी है। शिकायत में कहा है गाटा 87 को उसके वास्तविक स्थान से हटाकर नक्शे में अवैध रूप से गाटा 84 में जोड़ दिया गया। वास्तविकता में गाटा 87, गाटा 84 और 85 के पीछे स्थित है। यह परिवर्तन बिना विधिक प्रक्रिया, सीमांकन, सर्वेक्षण या प्रशासनिक आदेश के किया गया। गाटा 84 का हिस्सा राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास से जुड़ा होने के कारण मूल्यवान है। कीमत 70 लाख रुपये बताई जाती है। इसी भूमि पर अवैध लाभ उठाने के उद्देश्य से यह फर्जी प्रविष्टि कराई गई।

न्यूज ब्रीफ

प्रशिक्षण के लिए 30 तक करें आवेदन

रामपुर, अमृत विचार : निदेशक आरसेटी देशराज मीणा ने बताया कि आरसेटी में 18 से 45 वर्ष के युवाओं को 30 दिवसीय एयर कंडीशनर एवं रेफ्रिजरेटर रिपेयरिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह से कराया जाना प्रस्तावित है। इच्छुक युवा 30 नवंबर तक प्रशिक्षण के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदन के लिए आधार कार्ड, राशन कार्ड जॉब कार्ड 5 फोटो, बैंक पासबुक की फोटोकॉपी लेकर आवेदक 10 से सायं 5 बजे तक संस्थान में आवेदन कर सकते हैं।

विधायक खेल स्पर्धा के विजेता पुरस्कृत

छजलैट, अमृत विचार : युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल विभाग मुरादाबाद के तत्वावधान में राजेंद्रा एकेडमी भीकनपुर में विधायक खेल स्पर्धा का आयोजन किया गया। युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल विभाग के तत्वावधान में एथलेटिक्स, वालीबाल, कबड्डी, कुश्ती, बैडमिंटन में सबजूनियर, जूनियर एवं सीनियर वर्ग में बालक/बालिका वर्ग की खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। जिनका आरंभ मुख्य अतिथि पूर्व विधायक राजेश कुमार सिंह द्वारा गुब्बारे उड़ाकर किया गया।

खो-खो, कबड्डी में खजुरिया स्कूल प्रथम

ग्राम मनकरा में ककरौआ न्याय पंचायत स्तरीय खेल प्रतियोगिता आयोजित

संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : गुरुवार को ककरौआ न्याय पंचायत स्तरीय के खेलों का आयोजन ग्राम मनकरा स्थित खेल मैदान में किया। प्रतियोगिता का उद्घाटन ग्राम प्रधान संगठन के जिला महासचिव काशिफ खां व एआरपी अरुण कुमार ने फीता काटकर किया। खो-खो व कबड्डी में खजुरिया प्राथमिक विद्यालय की टीम ने बाजी मारी।

सरस्वती मां की प्रतिमा के समक्ष नोडल शिक्षक संकुल प्रसन्न प्रकाश, चमन सिंह गौतम, अनिकेत प्रकाश सक्सेना समेत सभी शिक्षकों ने दीप प्रज्वलित कर पुष्प अर्पित किए। अतिथियों ने हरी झंडी दिखाकर दौड़ की शुरुआत की। न्याय पंचायत स्तरीय गेम्स के परिणाम में बालक वर्ग 50 मीटर दौड़ में दीपक कंपोजिट विद्यालय शंकरपुर, बालिका वर्ग 50 मीटर में प्रियांशी कंपोजिट विद्यालय भंडपूरा, बालक वर्ग 100 मीटर दौड़ में नैतिक मगरमऊ, बालिका वर्ग सुरभि खजुरिया, बालक वर्ग 200 मीटर दक्ष दीनपुर, बालिका वर्ग

छात्र को पुरस्कृत करते मुख्य अतिथि काशिफ खां व एआरपी अरुण कुमार।

- **100 मीटर दौड़ में नैतिक और सुरभि रही प्रथम**

200 मीटर दौड़ में अंजली यादव खजुरिया, बालक वर्ग 400 मीटर दौड़ में आदित्य कंपोजिट विद्यालय राजारामपुर, बालिका वर्ग 400 मीटर प्रियांशी भंडपुरा प्रथम स्थान पर रहे। उच्च प्राथमिक स्तर 100 मीटर बालक वर्ग दौड़ में दीपक कंपोजिट विद्यालय शंकरपुर, बालिका वर्ग 100 मीटर में वीना कंपोजिट विद्यालय शंकरपुर, 200 मीटर बालक वर्ग में कपिल शंकरपुर, बालिका वर्ग फरहीन भंडपुरा, 400 मीटर दौड़ बालक वर्ग में कपिल शंकरपुर से, बालिका वर्ग में वर्षा उच्च प्राथमिक विद्यालय हरियाल, 600 मीटर बालक वर्ग दीपक शंकरपुर, बालिका वर्ग में वीना कंपोजिट विद्यालय शंकरपुर से प्रथम स्थान पर रहे।

चक्का और गोला फेंक में अंश गौतम, वीना, कपिल प्रथम स्थान पर रहे। लंबी और ऊंची कूद उच्च प्राथमिक स्तर में शिवा, वीना, दीपक, राजमाला प्रथम स्थान पर रहे। खो खो एवं कबड्डी प्राथमिक स्तर में बालक एवं बालिका वर्ग प्राथमिक विद्यालय खजुरिया की टीम विजयी रही, खो खो उच्च प्राथमिक स्तर बालक एवं बालिका वर्ग में कंपोजिट विद्यालय शंकरपुर की टीम विजयी रही। पीटी टीम उच्च विद्यालय हरियाल ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। टीम एवं टीम लीडर शैलेंद्र कुमार राठौर को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया।

विजयी छात्र-छात्राओं को एआरपी अरुण व नोडल संकुल प्रसन्न प्रकाश, चमन सिंह गौतम, अनिकेत प्रकाश सक्सेना, खेल प्रेमी विशाखा, आरती, सौम्या पांडे ने कॉपी, पेन देकर सम्मानित किया। न्याय पंचायत खेलों में अस्मत खान, अशोक रावत, नरेश पाल सिंह, राफिया खानम, जकिया इरफाना, अंजली शर्मा, रफत जहां, गायत्री शर्मा, नेहा सक्सेना, दीपा सैनी, आरती, राजेश कुमार, राकेश कुमार, धर्मेंद्र कुमार आदि शिक्षक मौजूद रहे।

दो दिनी हड़ताल पर गए अधिवक्ता

टांडा, अमृत विचार : अधिवक्ताओं ने कार्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार, कार्यों में हो रही देरी को लेकर दो दिवसीय सांकेतिक हड़ताल की घोषणा की है। बार वेलफेयर एसोसिएशन टांडा ने उपजिलाधिकारी को पत्र देकर दो दिवसीय निर्धारित वादों में अन्य तिथि नियत करने का अनुरोध किया है।

बार एसोसिएशन द्वारा बैठक में अधिवक्ताओं ने तहसील के विभिन्न न्यायालयों और कार्यालयों में भ्रष्टाचार के चलते कार्य न होने पर गंभीर रोष व्यक्त किया। अधिवक्ताओं का कहना है कि आमजन की दाखिल-खारिज सहित अन्य कार्य लंबित पड़े हैं, जिसकी शिकायतें लगातार तहसील दिवस में भी की जा रही हैं। इसी स्थिति को देखते हुए दो दिन की सांकेतिक हड़ताल का निर्णय लिया। अधिवक्ताओं ने चेतावनी दी, कि यदि दो दिनों में स्थिति में सुधार नहीं होता है, तो इस संबंध में विस्तृत मांग पत्र अधिकारियों को भेजा जाएगा। हड़ताल के दौरान बार वेलफेयर एसोसिएशन से जुड़े सभी अधिवक्ता न्यायालयों में उपस्थित नहीं रहेंगे। इस दौरान अध्यक्ष कुंवर संजय सिंह, मुदस्सर अली, अनिल कुमार भारद्वाज, प्रताप सिंह चौहान, श्योराज सिंह, दिनेश कुमार, अनूप सिंह, प्रथी सैनी रहे।

ओवरऑल चैंपियन बना कंपोजिट विद्यालय मोहनपुरा

विजयी छात्रा को पुरस्कार देते जिला पंचायत अध्यक्ष व साथ में अन्य। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : गुरुवार को भोट बक्काल में न्याय पंचायत स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का उद्घाटन जिला पंचायत अध्यक्ष ख्याली राम लोधी ने फीता काटकर किया।

न्याय पंचायत क्षेत्र के विद्यालयों से बच्चों ने प्रतिभाग किया। जिसमें प्राथमिक स्तर पर 50 मीटर रेस बालिका वर्ग में मोहनपुरा की निधि प्रथम, द्वितीय लक्ष्मी हरदासपुर तथा तृतीय हिमांशी गम्मनपुरा रही। प्राथमिक स्तर पर बालक वर्ग में 50 मीटर रेस में अजय हरदासपुर प्रथम, अभय मोहनपुरा द्वितीय तथा जसीम गम्मनपुरा तृतीय रहे। प्राथमिक स्तर पर 100 मीटर बालक वर्ग रेस में अजय हरदासपुर प्रथम, जसीम गम्मनपुरा द्वितीय कपिल मजरा विराम तृतीय स्थान पर रहा। जूनियर स्तर में बालक वर्ग खो-खो एवं कबड्डी में मोहनपुरा प्रथम रहा। जूनियर स्तर में बालिका वर्ग में कबड्डी एवं खो-खो में मोहनपुरा प्रथम रहा। प्राथमिक स्तर में बालक वर्ग खो-खो में एवं कबड्डी में मोहनपुरा प्रथम रहा। कंपोजिट विद्यालय मोहनपुरा ओवरऑल चैंपियन रहा। जिला पंचायत अध्यक्ष ख्यालीराम लोधी ने सभी को पुरस्कृत किया। संचालन गुरप्रीत सिंह ने किया। इस दौरान सरफराज अहमद, राजकुमार वर्मा, विजय सिंह, जाहिद अली, गुरप्रीत सिंह, नरेश कुमार, अनिल कुमार, रमेश चंद्र, मोहित कौशिक, देशराज सिंह रहे।

लखनऊ जाने के लिए रामपुर रेलवे स्टेशन पर मौजूद स्काउट-गाइड। ● अमृत विचार

लखनऊ में प्रतिभाग करेंगे 101 स्काउट-गाइड

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : भारत स्काउट और गाइड की डायमंड जुबली एवं 19वी राष्ट्रीय जम्बूरी 23 से 29 नवंबर तक लखनऊ के डिफेंस एक्सपो मैदान में होगी। जिसमें देश-विदेशों से 30,000 से अधिक स्काउट और गाइड प्रतिभाग करेंगे। राष्ट्रीय जम्बूरी में प्रतिभाग करने के लिए रामपुर से 101 स्काउट-गाइड राज्यरानी एक्सप्रेस से लखनऊ के लिए रवाना हो गए।

उत्तर प्रदेश सरकार के तत्वावधान में भारत स्काउट और गाइड द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। रामपुर से 101 स्काउट और गाइड को जिला विद्यालय निरीक्षक अंजलि अग्रवाल एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कल्पना देवी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मुरादाबाद मंडल का ऐतिहासिक प्रदर्शन करने के लिए प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर जिला मुख्य आयुक्त बलराम सिंह, उपाध्यक्ष कपिल आर्य, अवतार सिंह, जिला सचिव ओम प्रकाश सैनी, कुलवंत कौर, योगेंद्र पाल सिंह, डॉ. रूपा अग्रवाल, प्रधानाचार्य आकांक्षा सक्सेना, डॉ. अनूप कुमार, अनिल कुमार शर्मा, निखत परवीन उपस्थित रहे।

जमाल फात्मा, तुषार शर्मा, जीतू कुमार, प्रेमपाल सिंह, रामबहादुर, कुशल राणा आदि स्काउट मास्टर और गाइड कैप्टन मुरादाबाद मंडल की संयुक्त टीम प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करेगी।

123 छात्र-छात्राओं ने करियर काउंसिलिंग में प्रतिभाग किया

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

- **छात्र-छात्राओं को विदेश में नौकरी के अवसरों के बारे में बताया गया**

अमृत विचार : जिला सेवायोजन कार्यालय के तत्वावधान में नीलावेणी कृष्णा स्कूल ऑफ नर्सिंग कॉलेज में कैरियर काउंसिलिंग कार्यशाला हुई। कार्यशाला में कुल 123 छात्र-छात्राओं ने उपस्थित रह कर कैरियर काउंसिलिंग में प्रतिभाग किया।

पीएचडी स्टेट ट्रेनर स्वास्थ्य विभाग डॉ. नूर अहमद ने छात्र-छात्राओं को सर्वप्रथम अपनी रूचि के विषय में पूरे मनोयोग से प्रशिक्षण प्राप्त करने की सलाह दी। विषय विशेषज्ञ के रूप में अनेक तरीके बताए। उन्हें उपचार के दौरान उपयोग कर किस प्रकार रोगी का सफल इलाज किया जा सकता है। मरीज से मधुर भाषा में वार्तालाप कर उसको जल्दी स्वस्थ होने में सहयोग करता है। प्रभारी जिला सेवायोजन अधिकारी मनोज कुमार ने बताया कि ने छात्र-छात्राओं को रोजगार संगम पोर्टल पर नर्सिंग की ओवरसीज जॉब के लिए पंजीयन कराने की जानकारी दी। ओवरसीज जॉब पर आवेदन करने का तरीका समझाया।

छात्र-छात्राओं को जर्मनी, जापान, इजराइल में 5500 नर्सिंग की जॉब के बारे में विस्तृत जानकारी दी। प्रदेश सरकार द्वारा मिशन रोजगार के माध्यम से प्रत्येक युवक-युवतियों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। इस दिशा में सेवायोजन विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी दी। कार्यशाला में कुल 123 छात्र-छात्राओं ने उपस्थित रह कर करियर काउंसिलिंग का लाभ प्राप्त किया।

कुश्ती में वंश और शमशेर ने मारी बाजी

संवाददाता, स्वार

स्वार में बच्चों को ट्रॉफी देते अतिथि। ● अमृत विचार

अमृत विचार : धनौरी न्याय पंचायत में आयोजित संकुल स्तरीय क्रीड़ा एवं कुश्ती प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता का आयोजन उच्च प्राथमिक विद्यालय लखीमपुर में किया। विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कुश्ती मुकाबले में उच्च प्राथमिक विद्यालय मधुपुरा के मोहम्मद शमशेर ने प्रथम स्थान हासिल कर बाजी मारी।

दूसरे स्थान पर लखीमपुर के वंश रहे। विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया गया। वहीं 50 मीटर दौड़ में प्राथमिक विद्यालय छपर्रा के अल्तमश प्रथम रुस्तम नगर के अंशु दूसरे स्थान पर रहे। 100 मीटर की रेस में अंशु ने पहला स्थान पाया और अल्तमश दूसरे स्थान पर रहे। बालिकाओं की दौड़ में लखीमपुर की इकरा ने पहला स्थान हासिल किया। जालफनगला की आयशा दूसरे स्थान पर रहीं। 100 मीटर में भी इकरा विजेता रहीं, जबकि दूसरा स्थान हर्षिका ने पाया। जूनियर स्तर की प्रतियोगिताओं में 100 मीटर बालक वर्ग में जूनियर हाई स्कूल लखीमपुर के वंश ने पहला स्थान प्राप्त किया। जूनियर वर्ग में जालफनगला के अल्फेज ने बाजी मारी।वंश दूसरे स्थान पर रहे। बालिकाओं में जालफनगला की आयशा प्रथम और लखीमपुर की छाया द्वितीय रहीं। बालक एवं बालिका वर्ग की खो-खो और कबड्डी प्रतियोगिता में उच्च प्राथमिक विद्यालय लखीमपुर की टीमों ने जीत दर्ज की। कार्यक्रम में राकेश कुमार, फरजंद अली, शेर सिंह, मोहम्मद आजम, राजपाल सिंह, शेर मोहम्मद, ऋषिपाल सिंह, मीना खान, मोहम्मद फारुख आदि मौजूद रहे।

पंजाब से आए रागी जत्थे ने गुरुद्वारा में किया शबद कीर्तन

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

शबद कीर्तन करता रागी जत्था।

अमृत विचार : श्री गुरु तेग बहादुर महाराज एवं भाई मति दास जी, भाई सती दास जी एवं भाई दयाला जी के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में गुरुद्वारा संत भाई जी बाबा में गुरुवार को पंजाब से आए रागी जत्था भाई बलविंदर सिंह रंगीला ने सुबह 9 से 10 बजे तक शबद- कीर्तन किया।

सिविल लाइंस स्थित गुरुद्वारा संत भाई जी बाबा में गुरुवार को सिंह सेवक जत्थे के तत्वावधान में कार्यक्रम हुए। रात्रि कार्यक्रम में 8 से 9 बजे तक सहज पाठ साहिब संगति रूप में हुए जिसकी समाप्ति 25 नवंबर को सुबह 8 बजे होगी। प्रति दिन दोपहर 3 से शाम 6 बजे तक समस्त स्त्री सत्संग सभाओं द्वारा श्री सुखमणि साहिब के पाठ एवं शबद कीर्तन किए। 23 नवंबर को नगर कीर्तन गुरुद्वारा साहिब से निकलेगा। कार्यक्रम में गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी एवं सिंह सेवक जत्थे के प्रधान दर्शन सिंह खुराना, सेक्रेटरी त्रिलोचन सिंह वाधवा, मीत प्रधान सुरेंद्र सिंह चावला, खजांची हरपाल सिंह, भूपेंद्र सिंह एवं मीत सेक्रेटरी महेंद्र सिंह होरा, पपिंदर सिंह, गुरजीत सिंह माटा, गुरदेव सिंह, मनदीप सिंह, तरन दीप सिंह ग्रोवर, संतोख सिंह खालसा, जसमीत सिंह आदि रहे।

जौहर विश्वविद्यालय के भ्रमण के दौरान धीमरखेड़ी संभल से आए छात्र-छात्राएं।

गणित से बढ़ती है तार्किक क्षमता : डॉ. तनवीर

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय में राजकीय इंटर कॉलेज धीमरखेड़ी संभल के 266 छात्र-छात्राओं ने भ्रमण किया। रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. तनवीर इरशाद ने कहा कि गणित का अध्ययन करने से तार्किक और विवेकपूर्ण सोच की क्षमता विकसित होती है।

हमारे जीवन के हर क्षेत्र, जैसे चिकित्सा, इंजीनियरिंग, वित्त, प्राकृतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि में इसका बहुत बड़ा दायरा है। एसोसिएट प्रोफेसर ने कहा कि हम सभी एक गणितीय दुनिया से घिरे हुए हैं। विज्ञान रोजमर्रा की समस्याओं का समाधान लाता है और ब्रह्मांड के सबसे बड़े रहस्यों का उत्तर प्रदान करता है। कहा कि उच्च शिक्षा मनुष्य को जीवन की विशिष्टता की ओर उन्मुख करती है। भारतीय लोकाचार में निहित एक शिक्षा प्रणाली जो सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके भारत को एक समतापूर्ण और जीवंत ज्ञान समाज में बदलने में सीधे योगदान देती है, जिससे भारत वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बन जाता है। खेल प्रभारी आलमगीर ने बच्चों को खेलों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर उजमा, राबिया खान, मोहम्मद मुश्ताक रहे।

न्यूज डायरी

छात्र-छात्राओं ने निकाली जागरुकता रैली

रामपुर,अमृत विचार : राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय अर्थशास्त्र विभाग के तत्वावधान में नारी स्वावलंबन विषय पर गुरुवार को कॉलेज से छात्र-छात्राओं ने जागरूकता रैली निकाली गई। प्राचार्य प्रो. जागृति मदान ढींगरा ने कहा कि अर्थशास्त्र विभाग द्वारा देश के आर्थिक विकास के लिए समय-समय पर नारी समृद्धि एवं जागरूकता कार्यक्रम होते हैं। विभाग द्वारा समाज के प्रत्येक स्तर पर व्यक्तिगत, पारिवारिक, शैक्षणिक एवं व्यावसायिक संतुलन और समरसता स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कहा कि रैली के माध्यम से वर्तमान परिवेश में नारी स्वयं के विकास के लिए समय के साथ परिवर्तित हो रही है जो देश के विकास का सशक्त माध्यम है। नोडल अधिकारी प्रो. मीनाक्षी गुप्ता ने महिला सशक्तिकरण के लिए संगोष्ठियों के महत्व पर जोर दिया। इस अवसर पर अर्थशास्त्र विभाग की डॉ. ललित कुमार, डॉ. मोनिका खन्ना, डॉ. वंदना शर्मा, डॉ. अमीनुद्दीन अंसारी आदि प्राध्यापक मौजूद रहे।

स्कूल में जागरुकता शिविर का आयोजन

रामपुर, अमृत विचार : मिशन शक्ति 5 की उप योजना सामर्थ के अंतर्गत संचालित संकल्प हब फॉर एंपावरमेंट ऑफ वूमेन योजना के तहत इंडियन पब्लिक जूनियर हाईस्कूल में जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में बताया कि बैंकिंग, स्वास्थ्य, खरीदारी सब कुछ ऑनलाइन हो गया है। प्रौद्योगिकी ने हमारा जीवन आसान बना दिया है। जैसे-जैसे तकनीकी बढ़ रही है वैसे-वैसे सुरक्षा की जिम्मेदारी भी बढ़ती जा रही है। अगर हम सावधान नहीं रहेंगे तो ऑनलाइन धोखाधड़ी डेटा चोरी या सोशल मीडिया पर गलत जानकारी से नुकसान हो रहा है। हम सबको सावधानी भी बरतनी चाहिए इसके साथ ही चाइल्ड हेल्पलाइन की टीम से सुपरवाइजर कविता सिंह द्वारा 1098 की कार्य प्रणाली के बारे में विस्तार से बताया।कार्यक्रम में विद्यालय की प्रधानाचार्य, विद्यालय की शिक्षिकाएं एवं बालिकाएं उपस्थिति रहीं।

घर को मंदिर बनाने को लेकर कार्यक्रम आज

रामपुर, अमृत विचार : ब्रह्मकुमारी गीता बहन ने बताया कि 21 नवंबर को अपराह्न 3 बजे राहे रजा स्थित होटल में प्रजापति ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के तत्वाधान में कार्यक्रम होगा। जिसमें घरों को मंदिर बनाए जाने की सीख दी जाएगी। इसमें बिना किसी शुल्क को अदा किए घरेलू शांति के नुस्खे सीखे जा सकते हैं।

रफीउद्दीन शाह बाबा के मजार पर हुआ कुल शरीफ

दढ़ियाल, अमृत विचार : नगर के मोहल्ले में रफीउद्दीन शाह बाबा के तीन दिवसीय उर्स के आखिरी दिन कुल शरीफ में बड़ी संख्या में जायरीन पहुंचे। मजार शरीफ पर चादरपोशी कर दुआएं मांगी, शिरनी तकसीम की। कुल शरीफ में मुल्क की खुशहाली, तरक्की और भाईचारे के लिए दुआ कराई गई। दुआ में हजारों हाथ अल्लाह की बारगाह में उठे। नगर के मोहल्ला भरतपुर में स्थित रफीउद्दीन शाह बाबा का तीन दिन से उर्स चल रहा था। गुरुवार को तीन दिवसीय उर्स के आखिरी दिन कुल शरीफ में बड़ी संख्या में जायरीनों ने पहुंचकर चादरपोशी पर दुआएं मांगी। कुल शरीफ में हाफिज अलाउद्दीन ने दुआ कराई। इस दौरान गद्दी नसीन खुसरू मियां, दानिश मियां, डॉ. मोहम्मद हुसैन, गफ्फार अली, जफर अली, मोहम्मद नाजिम, मोहम्मद यूनुस, अकबर अली, अख्तर अली, नसीम अहमद, समीर अली, यासीन अली, यामीन अली, राशिद मुल्ला, आजम खान, मुशाहिद अली, डॉ. जावेद अंसारी, शफीक अली, काजिम अली सहित सैकड़ों जायरीन मौजूद रहे।

कूड़ा घर को स्थानांतरित करने की मांग

रामपुर, अमृत विचार : हम एकता मंच की टीम राष्ट्रीय अध्यक्ष शादाब शफीक खां और राष्ट्रीय महासचिव मास्टर फिरोज खान के नेतृत्व में जिलाधिकारी कार्यालय पहुंची। युवा जिलाध्यक्ष मोहम्मद रेहान ने मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन अपर जिलाधिकारी को सौंपा। जिसमें नैनीताल रोड बिलासपुर गेट पर स्थित कूड़ा घर को अन्यत्र स्थानांतरित करने की मांग की है। कहा कि ये स्थान घनी आबादी के बीच नैनीताल हाईवे पर स्थित है। जिससे बिलासपुर गेट, चपटा, कॉलोनी, बमनपुरी, पंखेवालान आदि के लोगों को बहुत असुविधा होती है। कूड़ा घर को जनहित के किसी अन्य कार्य जैसे सार्वजनिक पार्क या जनता के रोजगार के लिए दुकानों का निर्माण कराया जाए। शासन प्रशासन जनहित में जैसा उचित समझे इस स्थान को प्रयोग में लाए। मुख्यमंत्री से जनहित में ज्ञापन को स्वीकार कर उचित समाधान कराने का आग्रह किया। ज्ञापन पर शादाब शफीक खां, मास्टर फिरोज खान, नादिर खां बबलू, मोहम्मद रेहान, मोहम्मद नाजिम, शैजी खां, चांद खां, अय्यूब मियां, मोहम्मद राशिद, सुमेर खां, तौसीफ अहमद, जमीर अहमद, नाजिम सिद्दीकी आदि के हस्ताक्षर हैं।

किला पूर्वी गेट पर टूटा स्लैब का पत्थर, लोग हो रहे परेशान

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

किला पूर्वी गेट पर स्लैब टूटने से खुला नाला। ● अमृत विचार

अमृत विचार : नगर पालिका परिषद के वार्ड 25 में किला पूर्वी गेट का स्लैब खुला हुआ है, जिसके कारण आए दिन हादसे हो रहे हैं। किले में रजा लाइब्रेरी, उद्यान विभाग, राजकीय महिला डिग्री कालेज, आईटीआई, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, एलआईयू कार्यालय और इमामबाड़े हैं। जहां दिनों रात लोगों की आवाजाही लगी रहती है।

बिजली नहीं होने पर रात के अंधेरे में लोगों के वाहन इसमें फंसकर गिर जाते हैं और वे घायल हो जाते हैं। पुलिसकर्मियों ने यहां बैरियर लगाया लेकिन, रास्ता जाम होने के कारण इसे किसी ने गिरा दिया है। किले में हजारों लोगों का आना-जाना होता है, लेकिन किला पूर्वी गेट में काफी दिन से स्लैब टूटा हुआ, लेकिन जिम्मेदारों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है। राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में पढ़ने जाने वाली छात्राओं को परेशानी होती है। क्योंकि आईटीआई, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज के छात्र-छात्राओं के अलावा दफ्तर जाने वालों की वजह से जाम की स्थिति हो जाती है। पुलिस कर्मियों ने एहतियात के तौर पर टूटे हुए स्लैब के निकट बैरियर लगा दिया था, लेकिन बैरियर लगने के बाद किले के गेट में रास्ता और तंग हो गया। संभवतः कुछ लोगों ने बैरियर को वहीं लिटा दिया, ताकि कुछ रास्ता खुल सके। इसके बावजूद सुबह और शाम को किला पूर्वी गेट में टूटे स्लैब के कारण जाम लग जाता है। जिसके कारण लोगों को आवाजाही में परेशानी हो रही है। रात में बिजली नहीं होने पर अंधेरे में लोग इसमें गिरकर घायल हो जाते हैं। देखना यह कि जिम्मेदार किला पूर्वी गेट पर स्लैब पर कब पत्थर रखवाते हैं।

किले में विश्व स्तरीय रजा लाइब्रेरी है जिसको देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं। इसके अलावा किले में कई कॉलेज और आईटीआई है। पत्थर टूटा होने के कारण सुबह को छात्र-छात्राओं को काफी परेशानी होती है।

– हारिस शम्सी

किले के पूर्वी गेट में काफी दिनों से पत्थर टूटा हुआ है। कोई नाले में नहीं गिरे इससे बचाव के लिए पुलिस वालों ने बैरियर लगा दिया था लेकिन, बैरियर लगने के बाद रास्ता और तंग हो गया था। जिसके कारण बैरियर को हटा दिया गया है।

– सैयद फरदीन मियां

किला पूर्वी गेट पर स्लैब टूटा होने के कारण लोगों को आवाजाही में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कई बार अधिकारियों से स्लैब पर पत्थर डलवाए जाने की मांग की है लेकिन, स्थिति जस की तस है।

– खरसान

किला पूर्वी गेट पर नाले पर स्लैब का पत्थर टूटे कई दिन बीत चुके है। किले में हर खासो आम की आवाजाही रहती है। लेकिन, किसी अधिकारी की नजर इस टूटे स्लैब पर नहीं पड़ी है। लोगों को आवाजाही में परेशानी हो रही है।

– सुहेल अख्तर

आध्यात्मिक व एकता की भूमि

6th वार्षिकोत्सव विशेष फीचर

बरेली: नाथ नगरी

मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

नाथ कॉरिडोर से पर्यटन नक्शे पर बरेली को मिलेगी आध्यात्मिक नगरी की पहचान

जहां अलख निरंजन की गूंज आज भी सुनाई देती है

- बरेली का नाम लेते ही बहुतों के मन में सबसे पहले "नाथ नगरी" की छवि उभरती है। कहा जाता है कि इस नगर की आत्मा शिव में बसती है। यहाँ की हवा में भभूती की महक है, और गलियों में हरदम किसी योगी के कदमों की आहट सुनाई देती है। वैदिक काल से चली आ रही परपंरा अलखनाथ मंदिर इसकी गवाही दे रहा है। बरेली का अलखनाथ मंदिर केवल एक ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि वैदिक युग की आस्था, योग-परंपरा और नागा साधुओं की साधना-भूमि का जीवंत प्रतीक है। मान्यता है कि यह 6500 वर्ष पुराना है। यदि इसे 6500 वर्ष पुराना माना जाए, तो यह काल लगभग 4475 ईसा पूर्व या विक्रम संवत 4532 के आसपास आता है। यह वही समय था जब प्रारंभिक वैदिक सभ्यता (सप्तसिंधु क्षेत्र) में यज्ञ, वेद पाठ और शिव-अग्नि-सूर्य उपासना का आरंभिक रूप प्रचलित था। उस युग में पूजा के केंद्र प्रकृति आधारित होते थे यानि बरगद, पीपल और यज्ञ कुंड के रूप में। अलखनाथ मंदिर का प्रमुख प्रतीक बड़ (बरगद) के नीचे स्थित शिवलिंग इसी वैदिक परंपरा की निरंतरता का संकेत देता है। इससे यह स्थल वैदिक युग की प्राकृतिक देव-उपासना परंपरा और आधुनिक मंदिर पूजा प्रणाली के बीच एक सेतु प्रतीत होता है।
- बरेली के पुराने हिस्से में जब आप अलखनाथ या त्रिवतीनाथ मंदिर की ओर बढ़ते हैं, तो लगता है मानो किसी सुरंग में प्रवेश कर रहे हैं जहाँ शोर नहीं, केवल अलख निरंजन की अनुगूंज है।
- अलखनाथ मंदिर — जिसे बरेली का आध्यात्मिक केंद्र कहा जाता है — नाथ संप्रदाय का सबसे प्रमुख स्थान है। इसका नाम ही बताता है कि यहाँ अलख निरंजन की उपासना होती है, यानी उस परम सत्ता की, जिसे देखा नहीं जा सकता पर महसूस किया जा सकता है।

अलखनाथ मंदिर का इतिहास: साधना की अनंत परंपरा

अलखनाथ मंदिर बरेली शहर के हृदय में स्थित है। मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही सबसे पहले विशाल नंदी की मूर्ति दिखाई देती है। चारों ओर साधुओं के छोटे-छोटे कुटीर हैं, जिनमें वर्षों से तप कर रहे नागा बाबा, सिद्ध योगी और गृहस्थ भक्त रहते हैं। मंदिर की दीवारों पर समय की परतें जमी हैं — जिनमें भक्ति, साधना और तप की कहानियाँ लिखी हैं। लोककथाओं के अनुसार, गुरु गोरखनाथ के शिष्य अलखनाथ ने यहाँ साधना की थी। उनके नाम पर ही यह स्थान प्रसिद्ध हुआ। हर वर्ष चैत्र मास में लगने वाला अलखनाथ मेला केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि आस्था और लोकसंस्कृति का उत्सव बन चुका है। नागा साधु यहाँ अपने अखाड़ों के साथ पहुँचते हैं, भभूती रमाते हैं और अलख पुकारते हैं अलख निरंजन

- महंत कालू गिरी कहते हैं कि यह स्थान केवल शिवभक्तों का नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति का है जो सत्य की तलाश में है। यही कारण है कि यहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख, जैन — सभी श्रद्धालु बिना भेदभाव के दर्शन करने आते हैं। बताते हैं कि आनंद अखाड़े के अध्यक्ष गुरुदेव देवगिरी, धर्मगिरी, बालकगिरी की समाधि भी मंदिर में ही है।

■ अलखनाथ मंदिर की सज्जा

मंदिर की वास्तुकला मंदिर पारंपरिक और आधुनिक वास्तुकला शैलियों का मिश्रण दर्शाता है। इसमें जटिल नक्काशी, सुंदर कलाकृति और एक विशाल प्रांगण है। गर्भगृह में मुख्य देवता, भगवान शिव, एक शिवलिंग के रूप में स्थित हैं। मंदिर महत्वपूर्ण हिंदू त्योहारों के दौरान बड़ी संख्या में भक्तों को आकर्षित करता है। खासकर श्रावण महीने (जुलाई-अगस्त) के दौरान जब भक्त प्रार्थना करते हैं और विशेष अनुष्ठान करते हैं। महाशिवरात्रि, सावन सोमवार और कार्तिक पूर्णिमा कुछ प्रमुख अवसर हैं जिन्हें मंदिर में भक्ति और उत्साह के साथ मनाया जाता है।

तपेश्वर नाथ मंदिर

- तपेश्वरनाथ मंदिर के पुजारी बिशन महाराज बताते हैं कि यह मंदिर साधु संतो की तपस्थली रहा है। यहां पहले वन हुआ करता था। इसी के पास रामगंगा नदी बहती थी। वन में एक बाबा ने कठोर तपस्या की थी। इसके अलावा हिमालय से लौटते समय महर्षि के शिष्य ने यहां सैकड़ो वर्ष तप किया। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव यहां स्वयं विराजमान हुए। तभी से इसका नाम तपेश्वर नाथ पड़ा। महाराज बताते हैं कि यह सिद्धपीठ मंदिर है।

मढ़ीनाथ

मढ़ीनाथ मंदिर शिवभक्तों के प्राचीन और अत्यंत आस्थावान धामों में गिना जाता है। यह स्थान अपनी शक्ति, सिद्धि और शांत आध्यात्मिक ऊर्जा के लिए प्रसिद्ध है। माना जाता है कि मढ़ीनाथ की भूमि सदियों से साधकों, संतों और श्रद्धालुओं की पूजा-साधना का केंद्र रही है।मढ़ीनाथ मंदिर को कई स्थानीय ग्रंथों और लोककथाओं में बहुत प्राचीन शिव-पर्वत स्थल बताया गया है।इसकी स्थापना का काल सटीक रूप से प्रमाणित नहीं है, लेकिन परंपरा के अनुसार यह स्थान कई सौ वर्षों से शिवभक्ति का प्रमुख केंद्र है। मढ़ीनाथ क्षेत्र में पहले तपस्वी साधु ध्यान और तपस्या करते थे। इन्हीं साधकों की साधना शक्ति से यहाँ शिव की चेतना प्रकट होने की मान्यता है। स्वयंभूत ऊर्जा का स्थानमढ़ीनाथ को "सिद्ध पीठ" भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ की ऊर्जा साधारण मंदिरों से अधिक प्रबल मानी जाती है। यहाँ रूद्राभिषेक और महामृत्युंजय जाप अत्यंत फलदायी माने जाते हैं।सावन, महाशिवरात्रि और सोमवार को यहाँ भक्तों की भारी भीड़ रहती है।

कई परिवारों में किसी भी नए काम की शुरुआत से पहले मढ़ीनाथ के दर्शन की परंपरा है।

मढ़ीनाथ से कई रोचक कथाए जुड़ी हैं—

- कहा जाता है किसी समय यहाँ एक संत ने कठिन तपस्या की थी। उनके तप से प्रसन्न होकर शिव शक्ति ने यहाँ स्वयंभू स्वरूप में प्रकट होने का वरदान दिया।
- एक अन्य कथा में माना जाता है कि मढ़ीनाथ महादेव नजर दोष, संकट और खतरों को दूर करते हैं। इसी कारण कई लोग यहाँ विशेष पूजा कराते हैं।
- मढ़ीनाथ केवल पूजा का स्थान नहीं बल्कि स्थानीय समाज का सांस्कृतिक केंद्र भी है।
- मढ़ीनाथ मंदिर बरेली की आध्यात्मिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग है।

पशुपति नाथ मंदिर

- यह सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण शिव मंदिरों में से एक है। इसकी स्थापना 2001 में पीलीभीत बाईपास के पास की गई थी और इसे नेपाल के प्रसिद्ध पशुपतिनाथ मंदिर की तर्ज पर बनाया गया है यह मंदिर व्यापारी जगमोहन सिंह के मन में आए विचार से अस्तित्व में आया, जो स्वयं नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर के दर्शन के लिए जाया करते थे। उन्होंने 2001 में बरेली में इस मंदिर की स्थापना कराई। मंदिर का नाम जगमोहन नाथ के नाम से भी जाना जाता है। यहां के प्रमुख शिवलिंग के चारों ओर 108 शिवलिंग स्थापित किए गए हैं, जो भगवान शिव के 108 नामों को समर्पित हैं। मंदिर की स्थापना में जगतगुरु शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती जी भी शामिल हुए थे धार्मिक महत्व यहां पंचमुखी शिवलिंग स्थापित किया गया है, जो नेपाल मंदिर की विशेषता भी है। मंदिर में 108 छोटे शिवलिंग भगवान शिव के विभिन्न नामों के प्रतीक हैं और इन पर जल अर्पित करने से भक्तों को मानसिक शांति प्राप्त होती है। सावन महीना विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं, जिसमें हजारों श्रद्धालु पूजा-अर्चना और दर्शन के लिए आते हैं। ऐसी मान्यता है कि यहां के सरोवर में मछलियों को भोजन देने वाले भक्तों की मनोकामनाएं पशुपतिनाथ जरूर पूरी करते हैं

विशेषताएं

- मंदिर का परिसर एक सुंदर सरोवर और पर्यटन स्थल के रूप में भी जाना जाता है, जिसमें मछलियां, बत्तख और रामेश्वरम के रामसेतु से लाए गए तैरते पत्थर आकर्षण के केन्द्र हैं । परिसर में कैलाश पर्वत की झांकी, भैरव मंदिर, रुद्राक्ष और चंदन के वृक्ष भी हैं
- परिसर में रोजाना भव्य शिव श्रृंगार और आरती होती है।यहां आने वाले भक्तों का विश्वास है कि सच्चे मन से भगवान शिव की पूजा करने पर उनकी हर मनोकामना पूरी होती है।

काशी और अयोध्या की तर्ज पर बरेली के सात नाथ मंदिरों को पर्यटन के नक्शे पर पहचान दिलाने के लिए नाथ कॉरिडोर का निर्माण तेजी से कराया जा रहा है। कॉरिडोर के अंतर्गत बरेली शहर की चारों दिशाओं की मुख्य सड़कों पर कॉरिडोर को दर्शाते हुए भव्य द्वार बनाए गए हैं। कॉरिडोर बनने से बरेली शहर के नाथ मंदिरों के साथ ही हर बरेलियंस को नई पहचान मिलेगी। पर्यटकों की आवाजाही बढ़ने से होटल इंडस्ट्री से लेकर तमाम वर्गों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लाभ मिलेगा। रोजगार के भी साधन बढ़ेंगे। इसके साथ नाथनगरी में सभ्यता की 5000 साल पुरानी गाथा भी शहर में गूंजेगी। शहर में बनाई जा रहीं 19 फोकस वॉल पर भित्ति कला प्रदर्शित होगी। इससे बरेली सांस्कृतिक और आध्यात्मिक नगरी भी बनेगी।

बरेली शहर के धोपेश्वरनाथ मंदिर, पशुपतिनाथ मंदिर, वनखंडीनाथ मंदिर, अलखनाथ मंदिर, तपेश्वरनाथ मंदिर, त्रिवटीनाथ मंदिर व मढ़ीनाथ मंदिर के साथ रामनगर ब्लॉक के अहिच्छत्र क्षेत्र में श्रद्धालुओं को हर वो सुविधाएं दी जाएं, जिनसे पर्यटक आकर्षित हों, इसको ध्यान में रखते हुए नाथ कॉरिडोर की रूपरेखा तैयार की गई। नाथ मंदिरों की भव्यता और पौराणिक इतिहास को दर्शाते हुए पर्यटकों को इस ओर आकर्षित करने के लिए पर्यटन विभाग ने कार्ययोजना तैयार की। नाथ कॉरिडोर को राज्य सरकार ने 2023 में मंजूरी दी थी। इसके बाद बीडीए से प्रपोजल मांगा गया। जून, 2023 में बीडीए ने 70 पेज की डीपीआर बनाकर शासन को भेजी। अब करीब 231 करोड़ रुपये से नाथ कॉरिडोर के निर्माण कार्यों को कराया जा रहा है। कॉरिडोर के अंतर्गत सात नाथ मंदिरों को आने-जाने वाली सड़कों के निर्माण की जिम्मेदारी पीडब्ल्यूडी को मिली है। करीब 36 करोड़ से सड़कें बनेंगी। वहीं, बाबा वनखंडी नाथ मंदिर में करीब पांच करोड़ रुपये, तपेश्वरनाथ मंदिर में 8.36 करोड़ रुपये, धोपेश्वरनाथ मंदिर में करीब 7 करोड़ रुपये, अलखनाथ मंदिर में करीब 11.50 करोड़ रुपये से कार्य होंगे। नाथ कॉरिडोर के अंतर्गत तुलसी मठ में करीब 9.71 करोड़ रुपये से कार्य होंगे। मठ का प्रवेश द्वार बनेगा। स्टोर, भंडार गृह, धर्मशाला बनेगी। वैदिक लाइब्रेरी सहित अन्य कार्य होंगे।

भित्ति कला से बरेली बनेगी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक नगरी

बरेली : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की महत्वाकांक्षी परियोजना से नाथ नगरी बरेली अब सांस्कृतिक-आध्यात्मिक कला के वैश्विक केंद्र के रूप में विकसित होने जा रही है। शहर के प्रमुख चौराहों, मार्गों, धार्मिक स्थलों और सरकारी परिसरों में 19 भव्य फोकस वॉल का निर्माण होगा। भित्ति वॉल पर भारत की प्राचीन सभ्यता, नाथ परंपरा, महाभारतकालीन इतिहास और स्थानीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहरों का संगम का शानदार प्रदर्शन होगा। क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी रविंद्र कुमार के अनुसार मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप युवाओं को भारत के गौरवशाली अतीत, प्राचीन और समृद्धशाली संस्कृति से परिचय करायेगी। युवाओं और पर्यटकों को बरेली के 5000 वर्ष पुराने इतिहास और आध्यात्मिक विरासत से जोड़ने का माध्यम बनेगी। फोकस वॉल का विचार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उस परिकल्पना से प्रेरित है, जिसमें उत्तर प्रदेश की सभ्यता को ग्लोबल टूरिज्म मॉडल से जोड़कर रोजगार, पर्यटन और सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था को बढ़ाना शामिल है। इन फोकस वॉल पर बनने वाले भित्ति-चित्र अजंता-एलोरा की शैली पर आधारित होंगे। इन चित्रों में भगवान शिव के त्रिशूल और डमरू, नाथ योगियों के प्रतीक, देवी-देवताओं की आकृतियां, बरेली की आध्यात्मिक पहचान, महाभारतकालीन नगर की विरासत और स्थानीय लोककला को जीवंत कलात्मक स्वरूप दिया जाएगा। पर्यटन विभाग ने सर्वे करने के बाद ऐसे स्थानों को चुना है। जहां से सबसे ज्यादा पर्यटक और राहगीर गुजरते हैं। इस परियोजना पर कुल 621.33 लाख रुपये (लगभग 6 करोड़ 21 लाख 33 हजार रुपये) खर्च किए जाएंगे। क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी रविंद्र कुमार ने कहा कि बरेली केवल झुमके तक ही सीमित नहीं है। यह योगियों, सिद्ध—नाथों, ऋषि-मुनियों और प्राचीन सभ्यता का नगर है। फोकस वॉल आने वाली पीढ़ियों को बरेली की असली आत्मा से परिचित कराएगी। यह न सिर्फ शहर के सौंदर्यीकरण की योजना है, बल्कि बरेली के सांस्कृतिक पुनरुद्धार और पर्यटन अर्थव्यवस्था की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है।

सातों नाथ मंदिरों का नाथ सर्किट बनाने का उद्देश्य

- एक नाथ मंदिर से दूसरे नाथ मंदिर तक यात्रा को आसान बनाने और पूरे सर्किट में सुरक्षित और उचित सुविधाएं प्रदान करने का प्रस्ताव नाथ सर्किट में शामिल किया हैं। इसमें कनेक्टिविटी और सुगमता में सुधार के लिए आईपीटी और अन्य सार्वजनिक परिवहन जोड़े गए हैं। मंदिरों तक पैदल आवागमन को सुगम बनाने के लिए चौड़ी सड़कों पर फुटओवर ब्रिज बनेंगे। आगंतुकों के लिए पार्किंग क्षेत्र होगा। पहचान में सुधार के लिए संकेतों और अन्य दृश्य चिह्नों का उपयोग होगा। नाथ नगरी सर्किट की पहचान सभी नाथ मंदिरों के जुड़ाव को ध्यान में रखकर की गई है।

प्रत्येक नाथ मंदिर में इतनी सुविधाएं होंगी – प्रवेश मार्ग, आंतरिक सड़क विकास, फुटपाथ, स्टॉल, स्ट्रीट लाइटिंग, साइनेज, कूड़ेदान, स्ट्रीट फर्नीचर, भूनिर्माण, भूमिगत संग्रहालय भवन, पार्किंग, पर्यटक सुविधाएं, खोया-पाया सुविधा, प्राथमिक चिकित्सा, पुलिस बूथ, पेयजल, सूचना कियोस्क।

6.21 करोड़ से शहर में 19 स्थानों पर फोकस वाल बनेगी

नाथ कॉरिडोर के तहत शहर में 19 स्थानों पर फोकस वाल बनाने की योजना है। 6.21 करोड़ रुपये से कार्य कराए जाएंगे। फोकस वाल का आठ स्थानों पर निर्माण शुरू करा दिया गया है। इसमें पेंटिंग, डिजाइन और पौराणिक कलाकृतियों को दीवार पर उकेरा जाएगा। मनोहर भूषण इंटर कॉलेज ग्राउंड, एमजेपी रुहेलखंड विश्वविद्यालय, सुरेश शर्मा नगर चौराहा, डीडी पुरम पार्क, नियर स्टेडियम, कुदेशिया अंडरपास, बीसलपुर चौराहा, विकास भवन चौराहा, आयुक्त कार्यालय, उद्योग विभाग कार्यालय, त्रिवटी नाथ मंदिर मैकेनियर रोड, 100 फुटा तिराहा आदिनाथ चौक, इन्वर्टिस तिराहा बड़ा बाइपास, रेलवे स्टेशन, मिनी बाइपास इज्जतनगर रेलवे स्टेशन, झुमका तिराहा, और पर्यटन कार्यालय रोहिला होटल वॉल।

नाथ कॉरिडोर के मंदिरों की दूरी

- धोपेश्वरनाथ से पशुपति नाथ मंदिर-8.2 किमी
- पशुपतिनाथ मंदिर से बनखंडी नाथ-3.0 किमी
- वनखंडीनाथ मंदिर से त्रिवटीनाथ मंदिर-7.0 किलोमीटर
- त्रिवटीनाथ मंदिर से मढ़ीनाथ मंदिर-3.2 किलोमीटर
- अलखनाथ मंदिर से मढ़ीनाथ मंदिर-3.5 किलोमीटर
- मढ़ीनाथ मंदिर से तपेश्वरनाथ मंदिर-2.5 किलोमीटर
- तपेश्वरनाथ मंदिर से धोपेश्वरनाथ मंदिर-5.8 किलोमीटर

" त्रिवटी नाथ मंदिर के पुजारी रवीन्द्र शर्मा बताते हैं 1476 विक्रम संवत में जंगल में चरावाह आया वह वट वृक्ष के नीचे सो रहा था। तब बाबा ने उसे जगाया और अपने यहां होने की बात कही। चरावाहे ने बाबा के प्रकट होने की बात आसपास के लोगों को बताई। इसके बाद तो यहां जनसैलाब उमड़ पड़ा। खुदाई के बाद यहां शिवलिंग प्रकट हुआ। जैसे जैसे सभ्यता और संस्कृति का प्रचार हुआ। उसका बढ़ना शुरु हुआ त्यों त्यों मंदिर का स्वरूप भी बढ़ता गया। इस समय मंदिर में पुरातन सिद्धहस्त शिवलिंग है ही साथ ही मंदिर के स्वरूप को भव्यता प्रदान करने वाले भोलेशंकर के तांबे की भव्य आकृतियां भी है। जो यहां आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों का मन मोह लेती हैं। प्रदेश सरकार ने बरेली को नाथ नगरी के रूप में विकसित किया है। यह पुरातन मंदिर भी नाथनगरी कॉरीडोर का हिस्सा है और यहां कारीडोर के तहत निर्माण कार्य चल रहा है।

" अलखनाथ मंदिर के महंत और आनंद अखाड़े के सचिव कालू गिरी बताते हैं कि यह मंदिर मुगलों के समय का है। मुगलों ने भी कई बार यहां हिन्दू मंदिरों के प्रति अपनी दुर्भावना का प्रदर्शन किया लेकिन सफल नहीं हो पाए। वे बताते हैं कि मुगलों के बाद राजा महाराजा आए। उनके समय भी यहां रहने वाले बाबा अलख जगाते थे। राजा महाराजा यह सेवा देखते आ रहे थे। तब बाबा ने राजाओं से जमीन देने को कहा तो राजा ने जमीन दान दी थी। वे बताते हैं कि सनातन तो मानता ही रहा है साथ ही नवाबों अंग्रेजों ने भी नागाओं के प्रभाव को माना है। नाथ संप्रदाय की जड़ें बरेली में बहुत गहरी हैं।

काशी और अयोध्या की तर्ज पर बरेली के सात नाथ मंदिरों को पर्यटन के नक्शे पर पहचान दिलाने के लिए नाथ कॉरिडोर का निर्माण तेजी से कराया जा रहा है। त्रिवटीनाथ मंदिर व मढ़ीनाथ मंदिर के साथ रामनगर के निर्माण कार्यों को कराया जा रहा है। कॉरिडोर के अंतर्गत सात नाथ मंदिरों को आने-जाने वाली सड़कों के निर्माण की जिम्मेदारी पीडब्ल्यूडी को मिली है। करीब 36 करोड़ से सड़कें बनेंगी। वहीं, बाबा वनखंडी नाथ मंदिर में करीब पांच करोड़ रुपये, तपेश्वरनाथ मंदिर में 8.36 करोड़ रुपये, धोपेश्वरनाथ मंदिर में करीब 7 करोड़ रुपये, अलखनाथ मंदिर में करीब 11.50 करोड़ रुपये से कार्य होंगे। नाथ कॉरिडोर के अंतर्गत तुलसी मठ में करीब 9.71 करोड़ रुपये से कार्य होंगे। मठ का प्रवेश द्वार बनेगा। स्टोर, भंडार गृह, धर्मशाला बनेगी। वैदिक लाइब्रेरी सहित अन्य कार्य होंगे।

सिख धर्म की सेवा और भक्ति

- सुभाष नगर स्थित गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा का इतिहास सिख समाज की सेवा, त्याग और आस्था का जीवंत उदाहरण है। जिले में पहला गुरुद्वारा है जो सबसे पुराना है। यह गुरुद्वारा भारत विभाजन के पहले का है। भारत विभाजन से पहले (1940 के दशक में), जब सिख परिवारों का एक छोटा समुदाय बरेली में बसना शुरू हुआ, तो सुभाष नगर क्षेत्र में सिख संगत बहुत सीमित थी।उन दिनों संगत के पास न तो अपनी कोई स्थायी जगह थी और न ही भवन। आरंभ में एक छोटे से कमरे में गुरु ग्रंथ साहिब जी की स्थापना की गई थी। वहीं रोज़ाना सुबह-शाम का पाठ, कीर्तन, और लंगर सेवा शुरू हुई। यह छोटा-सा कमरा ही गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह साहिब लाइन पार का बीज साबित हुआ। समय के साथ जब सिख परिवारों की संख्या बढ़ी, तो संगत ने मिलकर गुरुद्वारा का विस्तार करने का निश्चय किया।
- 1950–60 के दशक में स्थानीय संगत के सहयोग और चंदे से पक्का भवन बनाया गया। धीरे-धीरे इसमें दीवान हॉल, लंगर हॉल, और संगत के ठहरने हेतु कमरों का निर्माण हुआ। नवनिर्माण के साथ गुरुद्वारे में गुरु नानक जयंती, वैशाखी, और अन्य प्रमुख गुरपुरब बड़ी श्रद्धा से मनाए जाने लगे। अब सुभाष नगर का यह गुरुद्वारा एक बृहद परिसर में विकसित हो चुका है। इसमें शानदार दीवान हॉल, आधुनिक लंगर हॉल, सेवादार आवास, और सिख इतिहास पर आधारित चित्र सजावट शामिल हैं। प्रतिदिन सुबह-शाम दीवान, कीर्तन दरबार, और निशुल्क लंगर सेवा जारी रहती है।

गुरूद्वारे के सामने बुक एजेंसी संचालक गुरूविंदर पाल सिंह छाबड़ा बताते हैं उन्होंने अपनी बाल्यकाल से युवावस्था में इस गुरूद्वारे को बढ़ते देखा है। बताते हैं कि पहले यह गुरूद्वारा लाइनपार के नाम से जाना जाता था। आजादी के समय से पहले का यह गुरूद्वारा आज भी अपनी परंपराओं को निर्वहन करता आ रहा है। अब भी यहां सुबह शाम लंगर लगता है। हर रोज शाम को तमाम फकीर गुरूद्वारे के लंगर के ही भरोसे जीवन यापन कर रहे हैं। स्टेशन के पास होने के कारण यहां यात्री भी आकर ठहरते हैं। यह निशुल्क सेवा है। एक कमरे से गुरूद्वारे का सफर हुआ था। अब यहां दस कमरे हैं। बड़े हाल हैं। यहां गुरूनानक के जन्मदिन पर प्रकाशपर्व का नगर कीर्तन इसी गुरुद्वारे से निकलता आ रहा है। वे बताते हैं कि गुरूद्वारे में हर धर्म के लोग आते हैं। यहां कोई भेदभाव नहीं है।

6th वार्षिकोत्सव विशेष फीचर

मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

शहर में नाथ योगियों से लेकर सूफी संतों तक को एक साथ स्थान दिया। यही वजह है कि इसे आज भी नाथ नगरी कहा जाता है, तो वहीं "आला हजरत की नगरी" के रूप में भी इसकी पहचान है। दो नाम, दो परंपराएँ पर एक ही आत्मा, जो इंसानियत और आस्था को जोड़ती है। यहाँ की गलियाँ धर्मों के इतिहास की जीवंत गवाही देती हैं। अलखनाथ मंदिर के आसपास की गलियों में आज भी नागा साधुओं के डेरों की गंध आती है। त्रिवतीनाथ मंदिर की घंटियाँ उसी श्रद्धा से बजती हैं, जैसे सैकड़ों साल पहले बजती थीं। वहीं, नौमहला की पत्थर जड़ी गलियों से होकर गुजरने वाला हर शख्स आला हजरत की दरगाह की तरफ सिर झुकाए निकलता है। उस गली के कोनों पर बैठा कोई दुकानदार अगर "जय भोले" कह दे तो सामने वाला "सलाम वालेकुम" के साथ मुस्कुरा देता है यही है बरेली की पहचान। इतिहास के पन्ने बताते हैं कि 1657 में मुगल शासन के दौरान बरेली को आधिकारिक रूप से बसाया गया। लेकिन इस नगर की आत्मा इससे भी पुरानी है। स्थानीय किंवदंतियाँ बताती हैं कि यह क्षेत्र "महा योगी गोरखनाथ" की तपोभूमि था, जहाँ से नाथ परंपरा का एक प्रमुख केंद्र विकसित हुआ। गोरखनाथ संप्रदाय के अनुयायी आज भी बरेली को "उत्तर भारत की योग नगरी" कहते हैं। मुगल काल में जब सूफी संत हज़रत शाह शरीफ और फिर इमाम अहमद रज़ा खान आला हजरत इस भूमि पर आए, तो इस शहर में आध्यात्मिकता का एक नया स्वर जुड़ गया। उनके अदब, इल्म और इंसानियत ने न सिर्फ मुसलमानों, बल्कि हर मजहब के लोगों के दिल में जगह बनाई। यही वह दौर था जब बरेली ने हिंदू-मुस्लिम एकता की ऐसी मिसाल पेश की, जो आज भी कायम है। बरेली के इतिहास की एक और खासियत है , यहाँ धर्म ने कभी राजनीति का रूप नहीं लिया। चाहे अंग्रेज़ों का दौर रहा हो या स्वतंत्रता संग्राम का समय, बरेली की धार्मिक संस्थाएँ हमेशा समाज के निर्माण में लगी रहीं। मंदिरों ने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा को आगे बढ़ाया, तो दरगाहों ने सामाजिक न्याय और बराबरी का संदेश दिया। यही कारण है कि यहाँ की मिट्टी हर इंसान को अपनाने का माद्दा रखती है।आज जब कोई यात्री बरेली जंक्शन पर उतरता है, तो उसके स्वागत में दो प्रतीक खड़े दिखाई देते हैं ।

शिव की त्रिविध ज्योति का प्रतीक

नाथ परंपरा की दूसरी प्रमुख कड़ी है — त्रिवतीनाथ मंदिर। यह मंदिर भी शिव के त्रिवेणी रूप का प्रतीक माना जाता है — ब्रह्मा, विष्णु और महेश की त्रिविध ज्योति यहाँ एक साथ विराजमान है। मंदिर का स्थापत्य अद्भुत है — ऊँचे शिखर पर लगा स्वर्ण कलश दूर से ही श्रद्धा जगाता है। सावन के महीने में जब कांवड़िए यहाँ गंगाजल चढ़ाने आते हैं, तो पूरा बरेली शहर भक्ति में डूब जाता है।

यहाँ कोई एक दिन भी ऐसा नहीं जाता जब 'हर हर महादेव' की आवाज़ न गूंजे। भक्त सुबह से ही शिवलिंग पर बेलपत्र, दूध और जल चढ़ाने आते हैं। यह मंदिर बरेली का आध्यात्मिक नाड़ी बिंदु है।" त्रिवतीनाथ मंदिर का परिसर केवल पूजा स्थल नहीं, बल्कि समाज सेवा का केंद्र भी है। मंदिर के ट्रस्ट द्वारा निशुल्क भोजन, चिकित्सा शिविर और गौसेवा के कार्य नियमित रूप से किए जाते हैं। मंदिर के बगल में स्थित सरोवर में हर अमावस्या को हजारों श्रद्धालु स्नान करते हैं। यह वही सरोवर है जहाँ कभी योगी अपने ध्यान की शुरुआत करते थे।

धोपेश्वरनाथ

- पांडवकालीन यह मंदिर सिद्धपीठ मंदिर है। यहां द्रोपदी के गुरु धूम्र ऋषि ने तपस्या की। उनके तप से प्रसन्न होकर शिव ने वरदान मांगने को कहा तो ऋषि ने जनता की मंगल कामना और कल्याण के लिए शिव से यहीं पर लिंग रूप में रहने का वरदान मांगा। वरदान स्वरूप शिव यहीं स्थापित हो गये। नाथ मंदिर में यह ऐसा मंदिर है जिसे अर्धनारीश्वर का रूप भी कहा जाता है। मंदिर के महंत घनश्याम जी बताते हैं ग्रामीण क्षेत्रों में धोपा मंदिर को अर्धनारीश्वर का रूप भी माना जाता है। इसका प्रमाण आज भी प्रचलित है। इसी मंदिर में भादों माह में आखिरी के दो गुरुवार को मेला आज भी लगता है। यह मेला धोपा मइया के नाम से प्रचलित है। जब आवागमन के साधन नहीं थे तो लोग एक दिन पहले आकर रुकते थे लेकिन अब लोग गुरुवार को आकर धोपा के सरोवर में स्नान करते हैं इससे चर्म रोग ठीक होते हैं। इसके बाद यहां स्थित रायसती मठिया में प्रसाद चढ़ाते हैं। नाथ मंदिरों में यह धोपेश्वर नाथ भी प्रसिद्ध और सिद्ध मंदिर है। यह इशान कोण में स्थित है।

वनखंडीनाथ मंदिर

बरेली की प्राचीन धरती में अनेक ऐतिहासिक, पौराणिक और आध्यात्मिक स्थल बसे हैं, उन्हीं में से एक अत्यंत प्रतिष्ठित शिवधाम है,वनखंडीनाथ मंदिर यह मंदिर बरेली के सबसे पुराने धार्मिक स्थलों में गिना जाता है । वनखंडी क्षेत्र के हृदय में स्थित यह मंदिर स्थानीय लोकपरंपरा, पुरातन आस्था और सदियों से प्रवाहित शिवभक्ति का अद्भुत केंद्र है। कहा जाता है कि जिस स्थान पर यह मंदिर स्थित है, वह क्षेत्र प्राचीन समय में घने वनों से आच्छादित था। तब यह स्थान निर्जन, शांत और वन्य क्षेत्र का हिस्सा था, इसलिए इस स्थान को नाम मिला—"वनखंडीनाथ", अर्थात् वनखंडों में विराजमान भगवान शिव ।वनखंडीनाथ जी का आध्यात्मिक महत्व वनखंडीनाथ मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं, बल्कि शिवभक्ति की जीवंत ऊर्जा का केंद्र है।

रामनगर जैन मंदिर

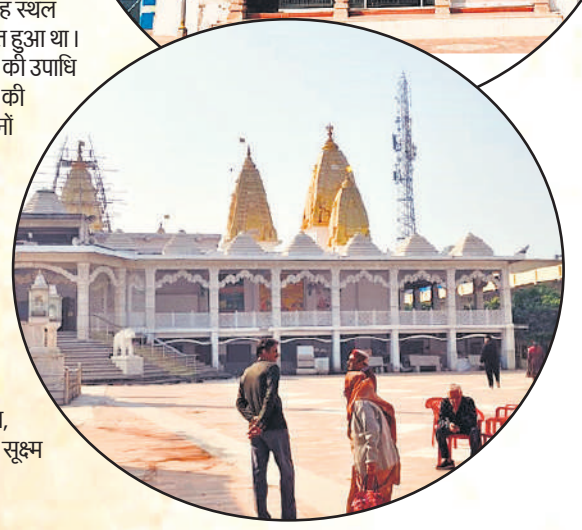

बरेली के आंवला में रामनगर में जैन मंदिर भी विश्व प्रसिद्ध है। रामनगर न केवल प्रदेश बल्कि देशभर के प्रसिद्ध जैन तीर्थों में से एक है। यह तीर्थ अपनी आध्यात्मिक, पौराणिक और ऐतिहासिक महत्ता के कारण देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करता है। भगवान पार्श्वनाथ की तपस्या स्थली रामनगर आंवला है। पार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी में लेकिन उन्हें ज्ञान रामनगर में प्राप्त हुआ। यही वह स्थल है जहां पार्श्वनाथ को ज्ञान प्राप्त हुआ था। यही पर पार्श्वनाथ को भगवान की उपाधि मिली। यहां भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा हरित पन्ने की है। विद्वानों का मत है कि यह प्रतिमा देव द्वारा स्थापित की गई है। रामनगर जैन मंदिर की वास्तुकला अत्यंत भव्य और पारंपरिक है। मुख्य मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ हरितपन्ने की प्रतिमा विराजमान है, जिसकी मुद्रा अत्यंत शांत और ध्यानमग्न है। मंदिर की दीवारों पर जैन पुराणों के दृश्य, तीर्थंकरों के जीवन प्रसंग और सूक्ष्म नक्काशी देखने योग्य हैं।

अल्लाह की याद और इंसानियत का पैग़ाम साथ

अगर कोई बरेली की आत्मा को महसूस करना चाहता है, तो उसे सिर्फ नाथ मंदिर ही नहीं, बल्कि नौमहला की गलियों तक भी जाना होगा। यह इलाका बरेली की तहज़ीब, आस्था और एकता का सबसे सुंदर प्रतीक है। यहाँ हर दीवार सूफ़ियों, मोहब्बत और इंसानियत की किसी कहानी को बयाँ करती है — बरेली में जैसे शिव के साधकों की परंपरा गहरी है, वैसे ही सूफ़ी संतों की रूहानियत भी हर पत्थर में बसती है। और इसी रूहानियत की सबसे ऊँची चोटी पर है — आला हजरत की दरगाह।

आला हजरत इमाम अहमद रज़ा खान (1856–1921) न केवल बरेली के, बल्कि पूरे इस्लामी जगत के एक महान विद्वान और सूफ़ी संत थे। उन्होंने अपने ज्ञान, तर्क और करुणा से दुनिया को यह दिखाया कि धर्म का असली उद्देश्य नफरत नहीं, बल्कि इंसान को इंसान से जोड़ना है। कहा जाता है कि आला हजरत ने बरेली की मिट्टी को अपनी कलम से अमर बना दिया। उन्होंने फतावा-ए-रज़विया जैसे ग्रंथों के माध्यम से इस्लामी दर्शन को एक नई दृष्टि दी। वे उस दौर में भी धार्मिक कट्टरता के विरोधी थे, जब समाज गुटों में बँट रहा था। अगर कोई व्यक्ति किसी दूसरे धर्म के उपासक को तकलीफ़ देता है, तो वह खुद इस्लाम की शिक्षा के विरुद्ध जाता है। इसी सोच ने बरेली की पहचान धर्म से पहले इंसानियत की बनाई ।

उर्स-ए-रज़वी — आध्यात्मिक मेला और इंसानियत का उत्सव

हर साल रबी-उल-अव्वल महीने में मनाया जाने वाला "उर्स-ए-रज़वी" बरेली का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन है। तीन दिनों तक दरगाह परिसर में आध्यात्मिक वातावरण रहता है। देश-विदेश से आए आलिम, मौलाना और सूफ़ी यहाँ तकरीरें (विचार भाषण) देते हैं।

- दरगाह परिसर के बाहर लगने वाला मेला, जिसमें किताबें, इत्र, तस्बीह और सूफ़ी संगीत की धुनें गूंजती हैं, वह श्रद्धालुओं के लिए किसी उत्सव से कम नहीं।
- हर साल लगभग दस लाख से अधिक लोग इस मौके पर बरेली पहुँचते हैं। रेलवे और नगर प्रशासन विशेष प्रबंध करते हैं। खास बात यह है कि इस दौरान न सिर्फ मुस्लिम, बल्कि हिंदू, सिख और ईसाई समुदाय के लोग भी सेवा में शामिल होते हैं। नगर निगम की टीम से लेकर पुलिस कर्मियों तक सभी इसे "धार्मिक नहीं, मानवीय पर्व" की तरह मानते हैं। सूफ़ी संगीत और रूहानी माहौल
- आला हजरत की दरगाह में शाम के वक्त जब कव्वाली शुरू होती है — "नज़र-ए-मदीना से मंज़र-ए-बरेली तक" तो लगता है जैसे आत्मा और संगीत एकाकार हो गए हों। सूफ़ी गायकों की तान और दुआ की लय वातावरण को भक्ति में डूबो देती है।
- कई प्रसिद्ध कव्वालों जैसे मो. अफज़ल साबरी और शहनवाज़ खान — ने अपनी शुरुआत इसी दरगाह के उर्स मंच से की थी। आज भी दरगाह का कव्वाली मंच नई पीढ़ी के कलाकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

आला हजरत का संदेश "इंसानियत सबसे ऊपर"

आला हजरत का दर्शन यह था कि धर्म किसी दीवार का नहीं, बल्कि एक पुल का नाम है। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने सौ साल पहले थे। उन्होंने कहा था "जब तक किसी भूखे को खाना और किसी नंगे को कपड़ा नहीं मिलेगा, तब तक तुम्हारी नमाज़ें भी अधूरी हैं।" बरेली के लोग आज भी इस संदेश को जीते हैं। दरगाह के लंगर में रोज़ाना हज़ारों लोगों को बिना किसी भेदभाव के भोजन कराया जाता है । यहाँ कोई यह नहीं पूछता कि कौन हिंदू है, कौन मुसलमान। सब एक ही कतार में बैठकर खाना खाते हैं, और यही इस शहर की असली ताकत है।

दरगाह आला हजरत : श्रद्धा और शांति का संगम

- दरगाह आला हजरत केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि लाखों श्रद्धालुओं की भावनाओं का केंद्र है। हर साल उर्स-ए-रज़वी" के अवसर पर देश-विदेश से हजारों ज़ायरीन यहां आते हैं। पाकिस्तान, बांग्लादेश, ब्रिटेन और दक्षिण अफ्रीका तक से लोग चादर चढ़ाने आते हैं।
- दरगाह परिसर में प्रवेश करते ही जो सुकून महसूस होता है, वह शब्दों में नहीं बताया जा सकता। चारों ओर कुरआनी आयतें, गुलाब की खुशबू और या रज़ा की पुकार वातावरण को आध्यात्मिक बना देती है।
- यहाँ का मुख्य गुम्बद सफ़ेद संगमरमर का है, जिस पर सुनहरे अक्षरों में लिखा है —रज़ा का शहर बरेली, मुहब्बत की ज़मीन।
- आला हजरत की मज़ार के पास की जाने वाली "सलात-ओ-सलाम" (प्रार्थना) में जो विनम्रता दिखती है, वही इस दरगाह की आत्मा है।
- दरगाह के प्रमुख खादिम मौलाना फ़ैज़ान रज़ा बताते हैं —
- यहाँ हर आने वाला ज़ायरीन सबसे पहले 'सलाम' करता है और फिर दूसरों के लिए दुआ मांगता है। यही सूफ़ियत का असली मतलब है — अपने लिए नहीं, सबके लिए भलाई मांगना।"
- नौमहला — तहज़ीब और एकता की गवाही देने वाला इलाका आला हजरत की दरगाह के आसपास का इलाका "नौमहला कहलाता है। यह नाम मुगलकालीन स्थापत्य से आया है। यहाँ नौ मंज़िलों वाले पुराने महलों के अवशेष कभी मौजूद थे। आज यह इलाका धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बरेली का हृदय बन चुका है।
- नौमहला की गलियाँ संकरी हैं, लेकिन दिल बहुत बड़े हैं। यहाँ दरगाह के ठीक सामने एक प्राचीन शिव मंदिर भी है, जिसके पुजारी हर साल उर्स के दौरान मुसलमानों को जल पिलाने का "सेवा स्टॉल लगाते हैं। वहीं, दरगाह की ओर से भी सावन में कांवड़ियों को पानी और नींबू-शरबत बाँटा जाता है। यह दृश्य बरेली की "गंगा-जमनी तहज़ीब" का जीवंत उदाहरण है।
- स्थानीय निवासी सलीम बताते हैं , हमारे यहाँ कोई दीवार नहीं जो बांट सके। उर्स में पंडितजी भी आते हैं, और सावन में मौलवी साहब भी कांवड़ियों को आशीर्वाद देते हैं।
- इसी सौहार्द की वजह से नौमहला सिर्फ धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि एक सामाजिक प्रतीक बन चुका है।

ईसाई धर्म की शांति — चर्च और उनके सामाजिक योगदान

बरेली का सीएनआई चर्च अंग्रेजों के समय का चर्च है। 1838 में इटालियन डिजाइन से बना इस चर्च में अंग्रेज प्रार्थना करने आते थे। मुगल काल के समय जब रुहेलों और अंग्रेजों की लड़ाई हुई तब रुहेलों ने इसी चर्च पर आक्रमण कर इसे आग के हवाले कर कई अंग्रेजों को मौत के घाट उतारा था। उस समय लगभग 100 से ज्यादा अंग्रेज मारे गये थे। यहां के पुराने पादरियों की कब्र भी इसी चर्च के अंदर है। चर्च जलाने के बाद इसका फिर से पुनर्निर्माण किया गया। 1947 में देश आजाद हुआ तो अंग्रेजों ने कुछ चर्च संस्थाएं भारतीयों के हाथ में दी गई। तब छह ग्रुपों को मिलाकर चर्च आफ नार्थ इंडिया संगठन बनाया गया और उसी के अधीन चलता रहा। फिर विवाद सामने आए तो 1960 से यहां प्रार्थना आराधना बंद हो गई। फिर एक बैपिस्ट चर्च ने सीएनआई चर्च को किराये पर लिया और 1989 से यहां फिर से अराधना और प्रार्थना होने लगी। इस चर्च के पहले पास्टर डा. विलियम सैमुअल बने। मौजूदा समय ऐतिहासिक चर्च के पादरी मेल्विन चार्ल्स हैं।

डा. सैमुअल बताते हैं कि यह चर्च अंग्रेजों के समय का चर्च है। यह एतिहासिक है। इसे पर्यटन के रूप में विकसित किया जा सकता है। डा. विलियम ने बताया कि बरेली का जीरो प्वाइंट भी चर्च को ही माना गया है। कैंट में बिशप के पास स्टीफन चर्च है। बरेली का माइलेज यहीं से नापा जाता है। कुछ लोग कुतुबखाना को जीरो प्वाइंट मानते हैं लेकिन अंग्रेजों के समय का जीरो प्वाइंट सेंटस्टीफन चर्च है। शहर की ऐतिहासिक धरोहरों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 19वीं शताब्दी के मध्य में ब्रिटिश शासन के दौरान निर्मित यह चर्च न केवल ईसाई समुदाय के धार्मिक जीवन का केंद्र रहा है, बल्कि बरेली की सांस्कृतिक विविधता का भी एक सुंदर प्रतीक है। अंग्रेजों द्वारा उत्तर भारत में मिशनरी गतिविधियों के विस्तार के साथ यह चर्च स्थापित हुआ।

इस चर्च की सबसे बड़ी विशेषता इसका वास्तुशिल्प है। गोथिक शैली में निर्मित यह भवन अपनी ऊँची मेहराबों, नुकीले आर्च, पत्थर की पारंपरिक दीवारों और रंगीन काँच की खिड़कियों के कारण दूर से ही पहचान में आ जाता है। चर्च के भीतर लगे स्टेन ग्लास पैनलों पर उत्कीर्ण बाइबिल की कथाएँ न केवल कलात्मक सौंदर्य का अद्भुत उदाहरण हैं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभूति भी कराती हैं।

धार्मिक दृष्टि से यह चर्च सदियों से ईसाई समाज का केंद्र रहा है, जहाँ क्रिसमस, गुड फ्राइडे और ईस्टर जैसे प्रमुख पर्व अत्यंत भव्यता और श्रद्धा से मनाए जाते हैं।

बरेली जैसे बहु-सांस्कृतिक और बहु-धार्मिक शहर में सीएनआई चर्च सौहार्द और सह-अस्तित्व की खूबसूरत मिसाल है। अलखनाथ मंदिर, आला हज़रत दरगाह, जैन तीर्थ, प्राचीन गुरुद्वारों और अन्य धार्मिक स्थलों के साथ यह चर्च बरेली की विविध आध्यात्मिक विरासत को और भी समृद्ध बनाता है। शहर के इतिहास, औपनिवेशिक वास्तुकला और धार्मिक सौहार्द का अध्ययन करने वाले पर्यटकों व शोधकर्ताओं के लिए यह चर्च विशेष आकर्षण का केंद्र है।

समय के साथ बरेली बदलता रहा, पर यह चर्च अपनी गरिमा, शांति और आध्यात्मिक महत्त्व के साथ आज भी उसी तरह खड़ा है। यह केवल ईसाई समुदाय का प्रतीक नहीं, बल्कि बरेली की सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक स्मृति का एक जीवंत अध्याय है।

अमृत विचार

शुक्रवार, 21 नवंबर 2025

सभी जटिल चीजों में अराजकता अंतर्निहित है। दृढ़ता के साथ प्रयास करते रहो।

–महात्मा बुद्ध

सख्त संदेश के निहितार्थ

सुप्रीम कोर्ट का यह कहना कि मामूली फेरबदल करके सरकार हमारे आदेशों को निष्प्रभावी नहीं कर सकती, दरअसल अनुच्छेद 141 के तहत न्यायालय के आदेशों की बाध्यता और शक्ति को पुनः स्थापित करता है। यह निर्णय न केवल न्यायिक स्वतंत्रता बल्कि न्यायिक समीक्षा की संवैधानिक भूमिका को भी मजबूत करता है। सुप्रीम कोर्ट को यह कठोर टिप्पणी इसलिए करनी पड़ी, क्योंकि ट्रिब्यूनल रिफॉर्म्स एक्ट-2021 में सरकार ने ठीक वही प्रावधान दोबारा शामिल कर दिए थे, जिन्हें शीर्ष अदालत पहले ही खारिज कर चुकी थी। अदालत के अनुसार यह कदम उसकी अधिकारिता को कमजोर करने जैसा था। इसी कारण उसने पुनः स्पष्ट किया कि संविधान के मूल ढांचे के तहत न्यायपालिका की स्वतंत्रता और न्यायिक आदेशों की बाध्यता पर संसद हस्तक्षेप नहीं कर सकती। फैसले में अदालत ने ट्रिब्यूनल रिफॉर्म्स एक्ट 2021 की कई प्रमुख धाराओं को असंवैधानिक घोषित किया। इनमें खासतौर पर ट्रिब्यूनल सदस्यों का कार्यकाल तय करना, न्यूनतम आयु नियत करना एवं सर्च-कम-सेलेक्शन कमेटी की सिफारिशों को बाध्यकारी न मानना था। अदालत को गंभीर आपत्ति इसलिए थी, क्योंकि इन धाराओं में बदलाव न्यायिक निकायों की आज़ादी को प्रभावित कर सकती थीं। कम अवधि का कार्यकाल सदस्यों को कार्यपालिका पर निर्भर बनाता है, न्यूनतम 50 वर्ष की आयु सीमा युवा और योग्य विशेषज्ञों को बाहर करती है और चयन समिति की भूमिका को कमजोर करने से नियुक्तियों में पारदर्शिता पर प्रश्न उठते हैं। सरकार ने वे प्रावधान पुनः जोड़ दिए थे, जिन्हें 2020 के फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने खारिज किए थे। अदालत द्वारा इसे 'प्रत्यक्ष अवज्ञा' मान कर रद्द कर देना उचित है।

इस फैसले में सकारात्मक पहलू यह है कि अदालत ने ट्रिब्यूनल प्रणाली की स्वतंत्रता और दक्षता को प्राथमिकता दी, यानी वह प्रशासनिक ट्रिब्यूनलों को सरकार के प्रभाव से मुक्त रखना चाहता है, ताकि वे निष्पक्ष न्याय देने में सक्षम रहें। इससे भविष्य में ट्रिब्यूनलों की विश्वसनीयता और कामकाज दोनों बेहतर होंगे। यह फैसला सरकार को स्पष्ट संदेश देता है कि न्यायिक आदेशों का पालन केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि संवैधानिक आवश्यकता है। इससे संसद और न्यायपालिका के बीच संस्थागत संवाद अधिक संतुलित होगा। निस्संदेह सरकार के लिए यह फैसला किसी झटके से कम नहीं, क्योंकि वह जिस संरचना को लागू करना चाहती थी, वह अब न्यायालय द्वारा पूरी तरह अस्वीकार कर दी गई है।

सरकार की प्रतिक्रिया शांत, संयत और संविधानसम्मत होनी चाहिए। उसे अदालत की टिप्पणियों को गंभीरता से लेते हुए ट्रिब्यूनलों के सुधार पर पुनर्विचार करना चाहिए। सरकार का अगला कदम यही होना चाहिए कि वह न्यायपालिका से संवाद कर एक व्यावहारिक, पारदर्शी और संविधान-सम्मत ढांचा तैयार करे। सहयोग और संवैधानिक मर्यादा के साथ ही ट्रिब्यूनल सुधारों का भविष्य सुरक्षित और प्रभावी बन सकता है, संसद और न्यायपालिका के बीच एक न्यायपूर्ण संबंध तथा संतुलन बनेगा।

प्रसंगवश

गौर करें, आपके आसपास कम हो रहे हैं पंछी

कभी मुंडेर पर कांव-कांव करने वाला कव्वा और आंगन में चीचीं करती नन्ही गौरैया कम हो रही है। पेस्टिसाइड और शहरीकरण ने हमारे आसपास के तमाम पंछियों को खत्म कर दिया है। आपको एक घटना बताती हूं। कुछ दिनों पहले मैंने अपने स्कूल में एक कौवा मरा पड़ा देखा। बहुत सामान्य सी बात है। मैंने भी इस बात पर बहुत ध्यान नहीं दिया। अगले दिन स्कूल में तीन कौवे मरे पड़े थे। थोड़ा अजीब लगा। बच्चे आपस में कुछ सुगबुगाहट कर रहे थे। मैंने पूछा, पर कुछ खास जवाब नहीं आया। तीन कौवे स्कूल में मरे पड़े हैं। अब यह बात थोड़ा ध्यान में रुक गई। अगले कुछ दिनों में मरे कौवो की संख्या बढ़ती ही गई।

मैंने कक्षा पांच के कुछ बच्चों से बात की। एक बच्चा प्रिंस बोला, ऐसी बात नहीं है मैडम! मेरे चाचा और पापा रात बात कर रहे थे। मैंने सुना वह लोग कह रहे थे खेतों में दवाई इस बार ज्यादा पड़ गई है। हम सब शांत हो गए। फिर मैंने प्रिंस से पूछा, कैसी दवाई? बच्चों की नादान बुद्धि के उत्तर आप भी सुनिए- खीरे को बड़ा करने की दवाई, कद्दू को जल्दी से फसल पर उतर लेने की दवाई, फसल में कीड़े लग जाने की दवाई। ऐसी बहुत सी दवाइयां मैडम हम डालते हैं। मैंने पूछा, तो कौवे क्यों मर रहे हैं? प्रिंस ने कहा, दवाई ज्यादा डल जाने से जान भी ले सकती है और कौवे मोर और चिड़िया यह सब खेत से सीधे अनाज, फल, सब्जी खाते हैं, तो दवाई से यह सब मर गए।

निवेदिता शर्मा

शिक्षिका

मैं सोच में पड़ गई कि बेजुबान जानवर इन दवाइयों का शिकार होकर मर रहे हैं और हम सबको खबर भी नहीं लग पा रही है। उससे भी बड़ी समस्या यह है कि लोग इस बड़ी समस्या को भी सामान्य मान रहे हैं। उनकी नजर में दवाई डालना एक बहुत ही सामान्य काम है। इस सामान्यीकरण से बच्चों के मानसिक और शारीरिक दोनों किस्म के विकास पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ रहा है ।

फसलों को कीट-पतंग, कीड़ों से बचाने के लिए कीटनाशक का प्रयोग किया जाता है। यह कीटनाशक हमारे खाने के सहारे हमारे शरीर में धीरे-धीरे जमा हो जाते हैं और यह हमारे शरीर में जाकर सेंट्रल नर्वस सिस्टम को इफेक्ट करते हैं। डॉक्टरों का कहना है कि लंग कैंसर, ब्लड कैंसर का कारण मुख्य रूप से पेस्टिसाइड्स ही हैं। पेस्टिसाइड्स वे दवाइयां हैं, जिन्हें फसलों में, खेतों में, कीटों चूहों आदि से बचाने के लिए डाला जाता है। जानने की बात यह है कि इन्हें खाकर चूहा या कीट भागते नहीं है बल्कि मर जाते हैं।

जरा सोचिए जब यही दवाई हमारे शरीर में जाती है तो कुछ तो असर करती ही होगी न। पेस्टिसाइड्स का प्रयोग हरित क्रांति के समय हुआ। उपज को बढ़ाने और मुनाफा कमाने के लक्ष्य ने इसे बढ़ावा दिया। पेस्टिसाइड्स प्रयोग करने की मात्रा, समय, सभी कुछ अच्छे से निर्देशित होने के बावजूद लाभ कमाने के लालच, जागरूकता की कमी की वजह से किसानों ने ताबड़तोड़ मात्रा में कीटनाशक का प्रयोग किया है।

केरल के कासर कोड की घटना की तरफ सबका ध्यान जाना जरूरी है। एक पेस्टिसाइड का स्प्रिंग काजू की खेती पर 25 साल तक लगातार उपयोग किया गया। डॉ. मोहन कुमार, कासर कोड में डॉक्टर के रूप में आए। उन्होंने देखा कि अधिकतर घरों में बच्चे न्यूरो प्रॉब्लम्स कैंसर, क्रॉनिक प्रॉब्लम्स से संबंधित बीमारियों से लंबे समय से जूझ रहे हैं। उन्होंने अपनी रिसर्च में पाया कि जो पेस्टिसाइड काजू की खेती पर छिड़का जा रहा था, वह धीरे-धीरे सबके शरीर में जमा होता चला गया और वह आने वाली पीढ़ी के लिए इतनी बड़ी समस्या का सबब बना।

डिजिटल अरेस्ट खौफ का दोहन करते अपराधी

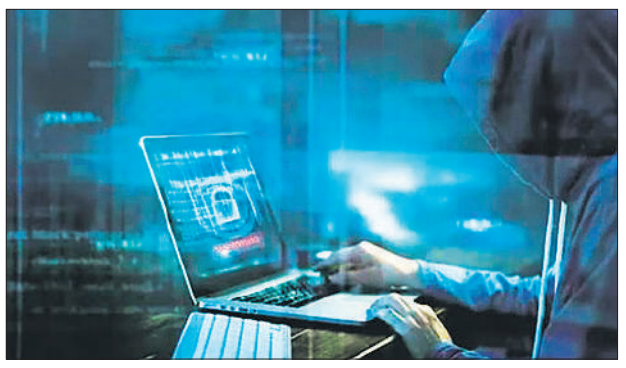

विवेक सक्सेना

अयोध्या

भारत में डिजिटल अरेस्ट एक खतरनाक साइबर अपराध के रूप में उभर रहा है। जो कि बेहद चिंताजनक है। साइबर अपराधी नए-नए तरीके से लोगों को अपना शिकार बना रहे हैं। साइबर ठग लोगों को डिजिटल अरेस्ट स्कैम में फंसा कर उनको डराते-धमकाते हैं। उन पर मनी लॉन्ड्रिंग, ड्रग्स व अवैध गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगाते हैं। डिजिटल अरेस्ट स्कैम में फोन करने वाले कभी पुलिस, सीबीआई, नारकोटिक्स, आरबीआई और दिल्ली या मुंबई पुलिस अधिकारी बनकर आत्मविश्वास से बात करते हैं। वॉट्सएप या स्काइप कॉल पर जब कनेक्ट करते हैं, तो आपको फर्जी अधिकारी एकदम असली से लगते हैं। वे लोग पीड़ित को इमोशनली और मेंटली टॉर्चर करते हैं। साइबर फ्रॉड के शिकार होने वालों में छात्रों से लेकर बुजुर्ग, होम मेकर्स से लेकर काम कामकाजी महिलाएं, किसान से लेकर आईटी सेक्टर में काम करने वाले और बड़े-बड़े पदों पर आसीन पेशेवर भी शामिल हैं। फ्रॉड करने के लिए ऐसे जाल-बिछाते हैं कि पढ़े-लिखे और जागरूक लोग भी उनके चंगुल में फंसकर अपनी मेहनत की कमाई के लाखों-करोड़ों गंवा देते हैं।

देश में तेजी से बढ़ रहे इस खतरनाक क्राइम को लेकर उच्चतम न्यायालय ने भी आश्चर्य जताते हुए कहा कि ऐसे अपराधियों से सख्ती से निपटे जाने की जरूरत है। न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति उज्ज्वल भुइयां और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने कहा कि यह चौंकाने वाली बात है कि देशभर में वरिष्ठ नागरिकों समेत अन्य पीड़ितों से 3000 करोड़ रुपये से अधिक की उगाही की जा चुकी है।

2024 में डिजिटल अरेस्ट से 92,000 से अधिक लोग प्रभावित हुए, जिनसे 1,616 करोड़ से अधिक की ठगी हुई। सुप्रीम कोर्ट और सरकार ने इस बढ़ती प्रवृत्ति पर कड़ी चिंता जताई है। अदालत ने सख्त कदम उठाने के लिए कहा। अपराधियों की रणनीति वीडियो कॉल, व्हाट्सएप कॉल, स्पूफ कॉल, फर्जी वेबसाइट आदि ये मुख्य तरीके हैं, जिनसे स्कैम चलाया जाता है। वरिष्ठ नागरिक, अकेले रहने वाले युवा, डिजिटल साक्षरता से दूर लोग इस अपराध के आसानी से शिकार बन रहे हैं। जागरूकता की कमी के चलते पढ़े-लिखे लोग भी इन जालसाजियों का शिकार हो जाते हैं। तकनीकी विकास के साथ-साथ टेक साक्षरता, जागरूकता और कड़े कानून का अनुपालन बेहद जरूरी है, वरना आम नागरिक भय, जानकारी की कमी और व्यवस्था के कमजोर पहलुओं के चलते बार-बार शिकार बनेंगे।

हाल ही में साइबर अपराध यानी हैकिंग से जुड़ी एक ग्लोबल रिपोर्ट सामने आई है, जिसने भारत को चिंता में डाल दिया है। रिपोर्ट के अनुसार, हैकिंग के मामले में भारत, दुनिया के टॉप 10 देशों में शामिल हो गया है, जो कि डिजिटल सुरक्षा के लिहाज से एक गंभीर चेतावनी है। तीन वर्षों में महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश लगातार साइबर अपराध से सर्वाधिक प्रभावित शीर्ष दो राज्यों के रूप में स्थान पर रहे हैं। 2025 में, महाराष्ट्र साइबर अपराध के 1.6 लाख मामलों के साथ सबसे बुरी तरह प्रभावित राज्य होगा। इसके बाद उत्तर प्रदेश (1.4 लाख) और कर्नाटक (एक लाख) का स्थान होगा।

इसी साल अगस्त में लखनऊ के संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. रुचिका टंडन को भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण का अधिकारी बता फोन करने वाले ने सात दिन तक डिजिटल अरेस्ट रखा और 2.81 करोड़ रुपये की ठगी कर ली। वर्धमान ग्रुप के चेयरपर्सन और पद्मश्री एसपी ओसवाल को भी साइबर ठगों ने सीबीआई अधिकारी बनकर फोन किया और एक पुराने मामले में अरेस्ट वारंट का हवाला देकर डरा-धमकाकर सात करोड़ रुपये ठग लिए। इससे पहले मुंबई निवासी 75 वर्षीय रिटायर्ड शिप कैप्टन को शेयर मार्केट में हाई रिटर्न दिलाने का झांसा देकर अगस्त 2024 से लेकर नवंबर 2024 के बीच 11.16 करोड़ रुपये की ठगी की गई। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में एक नाबालिग छात्र को भी साइबर ठगों ने कॉल कर अश्लील वीडियो देखने की धमकी देकर पैसों की मांग की। छात्र इतना डर गया कि उसने सुसाइड कर लिया। नोएडा सेक्टर 82 में रहने वाली एक महिला आईटी इंजीनियर को डिजिटल अरेस्टट कर 20 लाख रुपये की ठगी कर ली गई। हाल में ही राजधानी दिल्ली के रोहिणी में रहने वाले एक 72 वर्षीय रिटायर्ड इंजीनियर को साइबर ठगों ने आठ घंटे तक डिजिटल अरेस्ट कर 10 करोड़ रुपये से ज्यादा की ठगी कर ली।

ये मामले सिर्फ बानगी भर हैं। सच तो ये है कि देश में रोज इस तरह के अपराध हो रहे हैं और डिजिटल अरेस्ट जैसी साइबर ठगी भारत की डिजिटल प्रणाली के सामने गंभीर चुनौती बन चुकी है। अदालत और नीति-निर्माताओं को फौरन कड़े कदम उठाने चाहिए। साथ ही, आमजन को भी सतर्क रहना और डिजिटल शिक्षा अपनाना जरूरी है। साइबर अपराध नियंत्रण के लिए (Indian Cyber Crime Coordination Centre) केंद्रीय भूमिका निभा रहा है। भुक्तभोगियों को साइबर हेल्पलाइन 1930 पर तुरंत रिपोर्ट करने की सलाह दी जाती है।

डिजिटल अरेस्ट की पहचान करने और बचने के लिए सतर्कता जरूरी है। आपके पास अनजान नंबर से फोन या वॉट्सएप कॉल आती है तो सावधानी बरतें। ध्यान रखें कि पुलिस अधिकारी कभी खुद की पहचान बताने के लिए वीडियो कॉल नहीं करेंगे। किसी भी राज्य की पुलिस आपको कभी कोई भी ऐप डाउनलोड करने को नहीं कहेगी। पहचान पत्र, एफआईआर की कॉपी और अरेस्ट वारंट ऑनलाइन नहीं भेजा जाता है। पुलिस अधिकारी कभी भी वॉयस या वीडियो कॉल पर बयान दर्ज नहीं कराते। देश के कानून में डिजिटल अरेस्ट का कोई प्रावधान नहीं है।

पूरी दुनिया डर के धंधे पर टिकी हुई है। इसी खौफ का दोहन कुछ शातिर अपराधी कर रहे हैं। जीवन को बर्बाद होने के डर की बड़ी कीमत साइबर ठग डिजिटल अरेस्ट के नाम पर वसूल रहे हैं।

आमने

10,000 में क्या मिलता है? 10,000 में बिहार सरकार मिलती है। वे पैसे के बल पर जीते हैं। उन्होंने महिलाओं को खुलेआम पैसे दिए और महिलाओं ने उन्हें वोट दिया। अब सरकार को 'जीविका दीदी' को किए वादे को पूरा करना चाहिए।

–**मुकेश सहनी**, अध्यक्ष
विकासशील इंसान पार्टी

सामने

मैं समझती हूं कि इस प्रकार के अजीबोगरीब बयान नहीं देने चाहिए। इलेक्शन कमीशन देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को बनाए रखने वाली सर्वप्रथम संस्था है। ऐसी संस्था के बारे में कहना राष्ट्रद्रोह जैसा है। उनको अपनी वाणी पर लगाम रखनी चाहिए।

–**अपर्णा यादव**, उपाध्यक्ष
उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग

होमवर्क में बदलाव से बढ़ेगी सीखने की भूख

रोहित माहेश्वरी

स्वतंत्र पत्रकार

पढ़ाई करते समय बच्चे अक्सर किसी टॉपिक को दोहरा कर सीखने की कोशिश करते हैं, जिसे कहते हैं कि रट-रट कर परीक्षा देने जाते हैं। जिसकी जितनी अच्छी रटने की शक्ति, उतना अच्छा वो उत्तर लिखता है और परिणाम के आधार पर बुद्धिमान बच्चा कहलाता है, पर गहराई से सोचें, क्या वह बच्चा वाकई में बुद्धिमान है? क्या सच में उसने कोई ऐसा ज्ञान अर्जित किया जो भविष्य में कभी उसके काम आएगा? जवाब है नहीं! ऐसे बच्चों की रटने की क्षमता तो बहुत अच्छी होती है, लेकिन वे जीवन के असल ज्ञान से वंचित रह जाते हैं और अपनी शिक्षा का उपयोग सही तरीके से नहीं कर पाते हैं।

शिक्षा का अर्थ है सीखना। स्कूल में पढ़ाई करने के पश्चात आपने ऐसा क्या सीखा जिसका उपयोग आप जीवन को सार्थक बनाने के लिए करते हैं! यही स्कूली शिक्षा का आधार है, इसलिए रटने से अच्छा है कि किसी बात को गहराई से समझें, जिससे वो बात आपके दिमाग में अच्छी तरह से बैठ जाए। पहले स्कूलों में होमवर्क का मतलब होता था, गणित के एक जैसे सवाल बार-बार हल करना या लंबा-लंबा निबंध लिखना, लेकिन अब यह बदल रहा है।

पूरे भारत की कक्षाएं जब बदलते शिक्षण तौर-तरीकों के अनुसार खुद को ढाल रही हैं, तो 'होमवर्क' जैसे साधारण कार्य में भी धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है। यह अब बोझिल काम न रहकर, बल्कि खोज, सहयोग और रचनात्मकता के लिए उपयोगी उपकरण बन गया है। शिक्षाविदों का कहना है कि 'होमवर्क', जो पहले रटने पर आधारित था, अब नीतिगत बदलावों, डिजिटल उपकरणों और नए शिक्षण तौर तरीकों से बदल रहा है। ये रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और छात्रों के कल्याण पर जोर देते हैं।

इसका मकसद छात्रों को सिर्फ पढ़ाई के लिए मजबूर करना नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया को मजेदार बनाना है। अब होमवर्क में सिर्फ याद करने के बजाय सोचने, समझने और नई चीजें बनाने पर जोर दिया जा रहा है। स्कूलों में बच्चों को प्रोजेक्ट बनाना, ग्रुप में काम करना और नयी जानकारी पर खोज करने जैसे काम दिए जा रहे हैं। इससे बच्चे अपने खुद के तरीके से सीखते हैं। इससे उनकी सोचने की क्षमता भी बढ़ती है।

इस संदर्भ में देखा जाए तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी), 2020 के जरिये स्कूली छात्रों के होमवर्क में आ रहा बदलाव स्वागतयोग्य है, जिसमें रटने के बजाय सीखने पर ज्यादा जोर है। इस नीति में छात्रों पर शैक्षणिक बोझ कम करने तथा गतिविधि आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित करने की वकालत की गई है। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) समेत कई राज्य बोर्डों ने शिक्षकों से ऐसे होमवर्क देने को कहा है, जिन्हें करने में बच्चों को खुशी हो और उनमें प्रयोग करने की गुंजाइश हो।

ऐसे में, स्कूलों की कोशिश है कि छात्रों को होमवर्क में ही व्यस्त न रखा जाए। ज्यादातर स्कूल आज प्रोजेक्ट आधारित काम देने लगे हैं और बच्चों को सामुदायिक जुड़ाव वाली गतिविधियों में शामिल करने लगे हैं। छात्रों के होमवर्क को आसान और दिलचस्प बनाया जा रहा है, ताकि वे केवल किताबी कीड़ा बनकर न रह जाएं। जोर इस पर दिया जा रहा है कि छात्र चीजों के बारे में खुद से सोचने, समझने और उन्हें बनाने की कोशिश करें। इससे बच्चों की रचनात्मकता जागती है और उनमें सोचने की क्षमता बढ़ती है। दरअसल, छात्रों को मिल रहे भारी-भरकम होमवर्क से उनकी रचनात्मकता खत्म होने लगी थी और इसे लेकर देशभर में चिंता जताई जा रही थी।

वर्ष 2018 की वार्षिक शिक्षा स्थिति पर रिपोर्ट में पाया गया था कि 74 प्रतिशत शहरी छात्रों को दैनिक होमवर्क मिलता है, जिसमें उनके तीन से चार घंटे का समय चला जाता है, जबकि सीखने के मोर्चे पर उसका कोई विशेष लाभ नहीं होता। पिछले दिनों प्रधानमंत्री ने भी शिक्षकों को एक खास तरह का होमवर्क दिया था, जिसमें उन्हें छात्रों के साथ स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने के अभियान से जोड़ा गया था, ताकि 'मेक इन इंडिया' और 'वोकल फॉर लोकल' को प्रेरणा मिल सके। यह बच्चों में देशभक्ति की भावना के साथ व्यावहारिक सोच बढ़ाने में भी मददगार साबित होगा।

अमेरिका में नेशनल पीटीए (राष्ट्रीय अभिभावक शिक्षक संघ) और नेशनल एजुकेशन एसोसिएशन द्वारा बनाया गया '10-मिनट नियम' यह बताता है कि बच्चों को हर रात अपनी कक्षा के हिसाब से लगभग 10 मिनट 'होमवर्क' करना चाहिए। इसका मतलब है कि पहली कक्षा के बच्चों को 10 मिनट 'होमवर्क' करना चाहिए, जबकि बारहवीं क्लास के बच्चों को 120 मिनट तक 'होमवर्क' करना चाहिए। भारत में 'होमवर्क' की अवधारणा भले ही बदल गई हो, लेकिन असल में कई भारतीय छात्र अक्सर रोजाना 3-4 घंटे 'होमवर्क' करने में बिताते हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि 'होमवर्क' की अवधारणा में बदलाव का एक कारण राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भी है, जो छात्रों पर पढ़ाई का बोझ कम करने और गतिविधियां आधारित सीखने को बढ़ावा देने पर जोर देती है। कई राज्य बोर्ड और केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने इसके बाद परिपत्र जारी कर शिक्षकों से ऐसे काम देने को कहा है जो 'मनोरंजक, प्रायोगिक और व्यावहारिक हों।

कक्षाएं जब बदलते शिक्षण तौर-तरीकों के अनुसार खुद को ढाल रही हैं, तो होमवर्क में भी धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है। अब यह बोझिल काम न रहकर, बल्कि खोज, सहयोग और रचनात्मकता के लिए उपयोगी उपकरण बन गया है।

सोशल फोरम

एक छोटे से आविष्कार ने बदल दी दुनिया

वह 37 साल की उम्र में मर गया- कंगाल। भुला दिया गया, लेकिन आज भी, हर दिन, आप उसी की बनाई चीज पहनते हैं।1880 में एक जोड़ी जूते की कीमत इतनी थी कि उसे खरीदने के लिए आम परिवार एक हफ्ते की कमाई भी खर्च नहीं कर पाते थे। न तो चमड़ा कम था, न मोची लालची थे। समस्या थी एक असंभव सी प्रक्रिया, जिसे दुनिया का कोई भी आविष्कारक मशीन से नहीं कर पाया था। इसे कहा जाता था 'लास्टिंग'। जूते के ऊपरी हिस्से को उसके तले से जोड़ना। यह काम इतनी बारीकी, इतना कौशल मांगता था कि सिर्फ माहिर कारीगर ही कर सकते थे।

प्रशांत पांडेय

ब्लॉगर

वो भी दिन भर की मेहनत के बाद लगभग 50 जोड़ी जूते बना पाते। दर्जनों आविष्कारकों ने इस काम को मशीन से करवाने की कोशिश की, लेकिन सब असफल।

फिर एक युवा अश्वेत आप्रवासी एक लड़का, जो अंग्रेजी तक ठीक से नहीं बोलता था, ने ठान लिया कि वह इस असंभव को हल करेगा। जान एर्न्स्ट मैटजेलिगर का जन्म 1852 में सूरीनाम में हुआ। 19 साल की उम्र में वह जहाजों पर काम करने निकल पड़े। 21 की उम्र में वो अमेरिका के लिन, मैसाचुसेट्स पहुंचे, जो उस समय जूता उद्योग की राजधानी था। वहीं फैक्ट्री में काम करते हुए उन्होंने उस bottleneck को देखा जो पूरी इंडस्ट्री को जकड़े हुए था। उन्होंने देखा कि कोई यह मानने को तैयार नहीं था कि एक अश्वेत मजदूर वह कर सकता है जो दुनिया के दिमाग नहीं कर पाए।

उन्होंने अनुमति नहीं मांगी। बस शुरू कर दिया। 10–10 घंटे फैक्ट्री में काम और फिर रात में अपने छोटे कमरे में वापस आना। अंग्रेजी सीखना, मशीन ड्रॉइंग सीखना, इंजीनियरिंग सीखना। सब कुछ खुद, मोमबत्ती की रोशनी में। और फिर- मॉडल पर मॉडल बनाना, टूटना, फिर बनाना, फिर टूटना। 6 साल तक लगातार असफलताएं। निवेशक हंसते थे। साथी मजदूरों को भरोसा नहीं था और नस्लभेद के चलते हर दरवाजा उनके लिए बंद ही रहा। 20 मार्च 1883 को, अमेरिकी पेटेंट ऑफिस ने पेटेंट नंबर 274,207 उन्हें जारी किया। उनकी Lasting Machine काम कर गई। और सिर्फ ठीक ही नहीं, बल्कि क्रांतिकारी थी। जहां एक माहिर कारीगर 50 जोड़ी जूते बनाता था, मैटजेलिगर की मशीन 150 से 700 जोड़ी तक बनाती थी। तेज, सटीक, और बिना थके। कुछ ही सालों में जूतों की कीमत आधी हो गई। **-फेसबुक वाल से**

सामयिकी

मुफ्त अनाज का वितरण और जनवादी डाटा

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत मुफ्त अनाज दिसंबर के बाद भी एक साल तक मिलता रहेगा। कथित गरीबों के लिए एक और सुखद खबर है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून के तहत दो रुपये किलो गेहूं और तीन रुपये किलो चावल के तौर पर जो अनाज उपलब्ध कराया जा रहा था, सरकार के रिकॉर्ड में जो लोग 'गरीब' के तौर पर दर्ज हैं, उनकी बल्ले-बल्ले हो गई है। दरअसल भारत सरकार का यह सरोकार नहीं है कि मुफ्त अनाज के कितने लाभार्थी ऐसे गेहूं, चावल को बाजार में बेच देते हैं, क्योंकि उन्हें वह अनाज 'घटिया' लगता है। मोदी सरकार अपना डाटा 'जनवादी' बनाए रखना चाहती है कि वह 81.35 करोड़ गरीब नागरिकों को बिल्कुल मुफ्त अनाज मुहैया करा रही है।

आकाश सपेलकर

अधिवक्ता, सुप्रीम कोर्ट

बेशक अर्थव्यवस्था पर इसके व्यापक विपरीत प्रभाव न पड़ें और वित्तीय घाटा भी परिधियों के बाहर न हो, लेकिन कुछ सवाल लगातार पूछे जा रहे हैं कि कोरोना-काल के बाद आर्थिक गतिविधियां सामान्य होने के बावजूद मुफ्त अनाज बांटते रहना क्या और क्यों जरूरी है? यदि 81 करोड़ से अधिक लोगों को पांच किलो मुफ्त अनाज, प्रति व्यक्ति प्रति माह, मुहैया नहीं कराया जाएगा, तो क्या वे भूखे मर जाएंगे? क्या भारत में इतनी गरीबी और संभावित भुखमरी के हालात हैं?

तो फिर गरीबी उन्मूलन योजनाओं का क्या हो रहा है? निःशुल्क अनाज की अवधि बढ़ाने से देश के खजाने पर दो लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का जो अतिरिक्त बोझ पड़ेगा, उसके फलितार्थ क्या होंगे? बहरहाल इन दोनों योजनाओं को मिला दें, तो करीब 10 करोड़ टन अनाज मुफ्त बांटना पड़ेगा। यह भारत के कुल अनाज उत्पादन का एक-तिहाई होगा। बीती पहली दिसंबर तक केंद्रीय पूल में, गेहूं और चावल के मौजूदा भंडारण, करीब 5.54 करोड़ टन थे। यह एक साल पहले के भंडारण की तुलना में एक-तिहाई से भी कम अनाज है। भारतीय खाद्य निगम के भंडारण में इतना भी अनाज नहीं है, जितना कोरोना-काल के लॉकडाउन के बाद था। उस अनाज को लोगों में वितरित किया गया। यह सवाल स्वाभाविक है कि सरकार कब तक मुफ्त अनाज बांटती रहेगी? कमोबेश यह गरीबी और बेरोजगारी का वैकल्पिक समाधान नहीं है।

दरअसल यह मोदी सरकार का राजनीतिक तौर पर बेहद चतुर निर्णय है। बेशक भाजपा चुनाव प्रचार के दौरान मुफ्त अनाज मुहैया कराने का प्रचार करे या न करे, लेकिन प्रतीकात्मक तौर पर लोगों के मानस पर इसका प्रभाव रहता ही है। भाजपा कई चुनावों में इस फॉर्मूले को आजमा चुकी है। खासकर महिलाओं पर इस योजना का जबरदस्त सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। नतीजतन महंगाई, बेरोजगारी, किसानी, असंतोष, सांप्रदायिकता आदि मुद्दों के बावजूद भाजपा को जनादेश मिलता रहा है।

राज्यों में चुनाव हैं और अधिकतर राज्यों में भाजपा-एनडीए की सरकारें हैं। राजनीतिक तौर पर भाजपा के लिए अग्नि-परीक्षा से कम दौर नहीं होगा, क्योंकि वहीं के जनादेश के आम चुनाव की पुख्ता जमीन तैयार हो सकती है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून 2013 में तत्कालीन यूपीए सरकार ने पारित कराया था। उसके तहत तीन-चौथाई ग्रामीण और लगभग आधी शहरी आबादी को सबसिडी पर अनाज हासिल करने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त हुआ था। मोदी सरकार ने इसे व्यापकता दी है। अब सबसिडी पर ही नहीं, बल्कि बिल्कुल मुफ्त अनाज हासिल किया जा सकता है। योजनाओं से कितनी 'काली भेड़ें' जुड़ी हैं, यह एक अलग सवाल है और इसका विश्लेषण किया जाना चाहिए।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं एलआईजी 23, प्रथम तल, आशियाना फेस-1, कांठ रोड मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- सुनील कुमार सिंह*** 0591-3551286(कार्यालय), ईमेल-editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2020/79034 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी।(नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुरादाबाद होगा)।

यूरेका

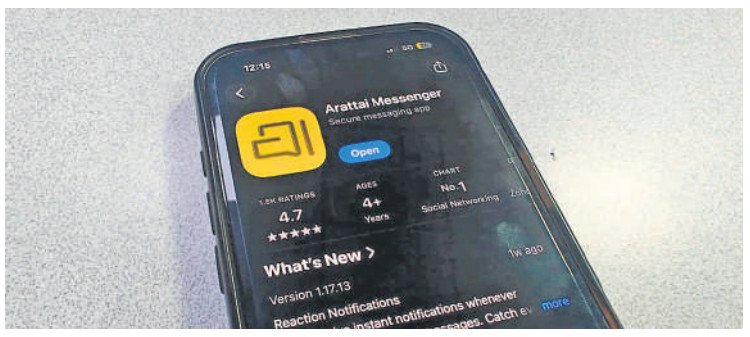

अरट्टई

डिजिटल संवाद का स्वदेशी अध्याय

भारत के डिजिटल परिदृश्य में इस समय एक नया नाम तेजी से सुर्खियों में है- Zoho का 'अरट्टई' (Arattai) ऐप। सितंबर-अक्टूबर 2025 के बीच इसके डाउनलोड्स में अचानक उछाल आया और यह कुछ ही हफ्तों में ऐप स्टोर्स की शीर्ष सूची में जगह बना गया। 'अरट्टई' तमिल भाषा का शब्द है, जिसे 'गपशप' अथवा 'आकस्मिक बातचीत' के संदर्भ में इस्तेमाल किया जा सकता है। जनवरी 2021 में लॉन्च हुआ यह ऐप चार साल तक लगभग गुमनाम रहा, लेकिन अब "आत्मनिर्भर भारत" की नई लहर के बीच यह भारतीय तकनीक का प्रतीक बनकर उभरा है।

डॉ. शिवम भारद्वाज
असिस्टेंट प्रोफेसर, मथुरा

Zoho की साख और आत्मनिर्भर भारत की भावना

Zoho उन कुछ भारतीय कंपनियों में है, जो बिना विदेशी निवेश के वैश्विक पहचान बना चुकी है। संस्थापक और सीईओ श्रीधर वेम्बू के नेतृत्व में चेन्नई मुख्यालय वाली यह कंपनी बीते दो दशकों से विश्व स्तर पर सॉफ्टवेयर-एज-ए-सर्विस (SaaS) क्षेत्र में भारत की पहचान रही है। इसके 55 से अधिक प्रोडक्ट्स- जैसे Zoho Mail, Zoho CRM, Zoho Books, Zoho Workplace और Zoho Cliq दुनियाभर के तमाम देशों में उपयोग किए जाते हैं। हाल में Zoho एक बड़ी खबर यह भी आई कि केंद्र सरकार के कई विभागों और निकायों ने NIC से Zoho Mail पर डेटा माइग्रेशन शुरू किया है, ताकि देशी सर्वरों पर होस्टेड और अधिक सुरक्षित ईमेल व्यवस्था स्थापित की जा सके। इससे कंपनी की साख को और मजबूती दी और यह दिखाया कि भारत अब वैश्विक विकल्पों पर निर्भर रहने के बजाय अपनी तकनीकी क्षमता पर भरोसा करने लगा है। ऐसे में जब इसी कंपनी ने एक मैसेजिंग ऐप पेश किया, तो स्वाभाविक रूप से लोगों में उत्सुकता बढ़ी। अरट्टई को आज के डिजिटल भारत की नई कहानी बनाने और इस अप्रत्याशित उछाल के पीछे भारतीय तकनीकी कंपनियों पर भरोसा, विदेशी ऐप्स के प्रति सतर्कता, डेटा सुरक्षा को लेकर बढ़ती जागरूकता जैसे कारक तो हैं ही, लेकिन महत्वपूर्ण भूमिका वैश्विक अनिश्चितताओं, जैसे कि तकनीक की उपलब्धता अथवा टैरिफ संकट से भरे माहौल में 'आत्मनिर्भर भारत' और 'स्वदेशी' अपनाने की अपील ने निभाई है।

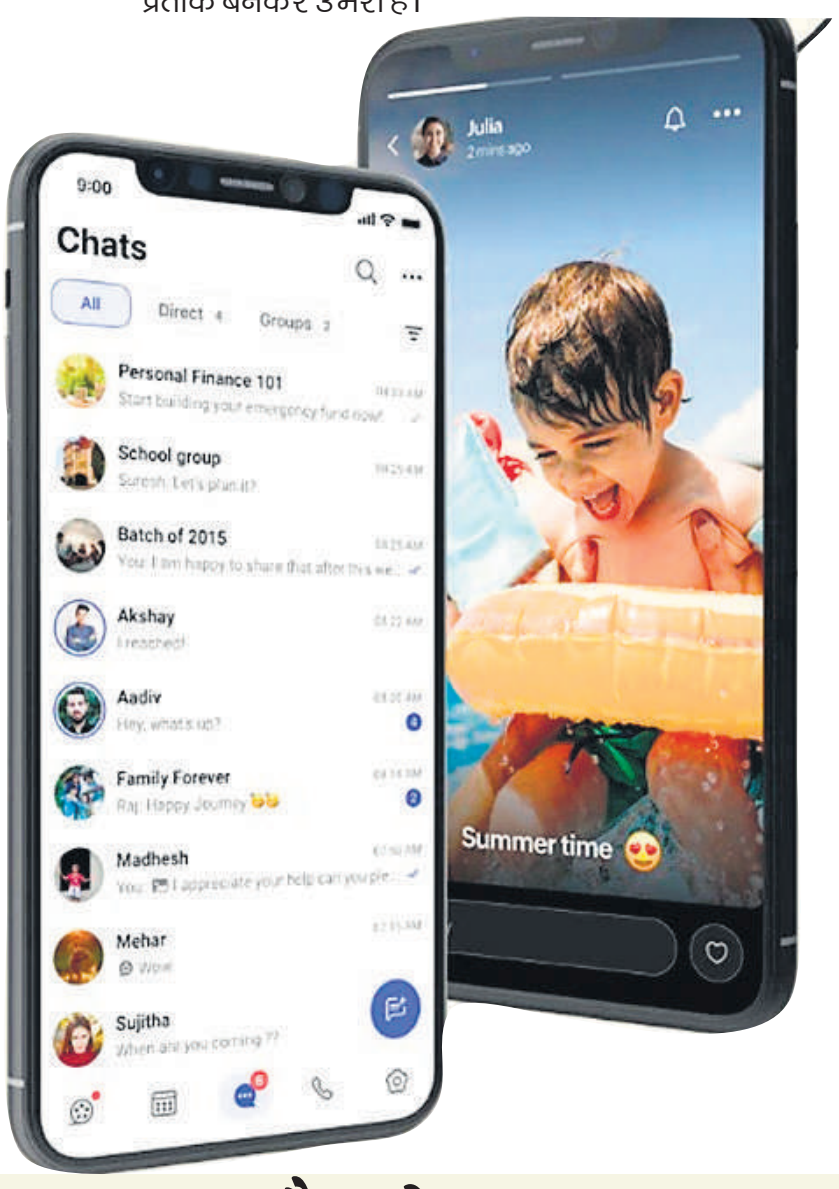

लोकप्रियता की रफ्तार और शुरुआती तकनीकी झटके

सितंबर 2025 में अरट्टई की लोकप्रियता इतनी तेजी से बढ़ी कि Zoho के सर्वरों को भी संभलने का मौका नहीं मिला। लाखों की तादाद में नए उपयोगकर्ता जुड़ने लगे और उसके साथ सामने आईं OTP में देरी, कॉल में लैग और सिंक की समस्याएं। यह दौर हर उभरते प्लेटफॉर्म के लिए सीख का होता है। तेजी से आगे बढ़ने के साथ स्थायित्व का संतुलन जरूरी है। Zoho ने भी सर्वर क्षमता बढ़ाकर स्थिति संभाली।

क्या बनाता है अरट्टई को अलग

Zoho ने अरट्टई को केवल चैटिंग ऐप नहीं, बल्कि एक समग्र संचार मंच के रूप में विकसित किया है। इसके फीचर्स इस दिशा को स्पष्ट करते हैं-

- **पॉकेट- आपकी निजी डिजिटल तिजोरी-** इस फीचर में आप अपने नोट्स, फोटो, वीडियो और दस्तावेज सुरक्षित रख सकते हैं, जो लोग WhatsApp पर खुद को मैसेज भेजकर चीजें सहेजते हैं, उनके लिए यह सुविधा गेमचेंजर साबित हो सकती है।
- **मीटिंग्स टैब- वीडियो कॉल का नया रूप-** बिना Zoom या Google Meet जैसे अलग ऐप्स पर जाए, अरट्टई में ही सीधे वीडियो मीटिंग्स आयोजित की जा सकती है।
- **मेंशन्स टैब-** इस टैब में वे सभी चैट्स एक जगह मिलती हैं, जिनमें उपयोगकर्ता को टैग या उल्लेख किया गया है। यह व्यस्त पेशेवरों के लिए राहत का फीचर है।
- **Android TV पर उपलब्धता-** मोबाइल और लैपटॉप/डेस्कटॉप के साथ अरट्टई Android TV पर भी उपलब्ध है, अर्थात संवाद का दायरा घर के बड़े पर्दे तक पहुंच गया है।

डेटा सुरक्षा पर कंपनी का भरोसा

Zoho ने स्पष्ट किया है कि अरट्टई पर कोई विज्ञापन नहीं होगा, डेटा किसी को नहीं बेचा जाएगा और भारतीय उपयोगकर्ताओं का डेटा भारत के सर्वरों (मुंबई, दिल्ली, चेन्नई) में ही रखा जाएगा। हालांकि फिलहाल टेक्स्ट चैट्स के लिए पूर्ण एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन लागू नहीं हुआ है, लेकिन कंपनी का कहना है कि यह सुविधा जल्द ही जोड़ी जाएगी और इसके लिए एक सुरक्षा श्वेतपत्र जारी किया जाएगा। यह कदम डेटा पारदर्शिता की दिशा में एक मजबूत संकेत है, जो उपयोगकर्ताओं में विश्वास को और बढ़ाने में मदद कर सकता है।

भविष्य की दिशा: संवाद से भुगतान तक

खबरों के अनुसार Zoho अब 'Zoho Pay' नाम से UPI भुगतान सेवा भी लाने की तैयारी में है। यदि यह सेवा भविष्य में अरट्टई से जुड़ती है, तो ऐप चैट्स, मीटिंग्स और पेमेंट्स तीनों को एकीकृत अनुभव के रूप में पेश कर सकेगा। इससे अरट्टई सिर्फ चैटिंग ऐप नहीं, बल्कि भारत का पहला संपूर्ण डिजिटल कम्युनिकेशन प्लेटफॉर्म बन सकता है। हालांकि इसके साथ नई जिम्मेदारियां भी आएंगी- वित्तीय सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और नियामक पालन की।

Hike और Koo की यादें, पर एक नया सलीका

भारत ने इससे पहले भी स्वदेशी सोशल ऐप्स की लहर देखी है। Hike मैसेंजर और Koo जैसे प्लेटफॉर्म एक समय खासी चर्चा में रहे, पर समय के साथ वैश्विक प्रतिस्पर्धियों के सामने कमजोर पड़ते गए और अंततः बंद हो गए। उनका अनुभव सिखाता है कि भावनाओं का ज्वार शुरुआत करा सकता है, पर स्थायित्व के लिए उपभोक्ताओं का भरोसा, दीर्घकालिक टिकाऊ बिजनेस मॉडल और निरंतर सुधार बेहद जरूरी हैं। Zoho के पास अनुभव और संसाधन हैं और यही अरट्टई की सफलता में सबसे बड़ी ताकत साबित हो सकते हैं।

डिजिटल परिपक्वता की मिसाल

तकनीक की दुनिया में ट्रेंड बदलते हैं, पर भरोसा और प्रदर्शन स्थायी रहते हैं। अरट्टई इस बात का प्रमाण है कि भारत अब केवल "डिजिटल आत्मनिर्भरता" की बातें नहीं कर रहा, बल्कि उसे जी रहा है। यह दिखाता है कि भारतीय कंपनियां न सिर्फ तकनीकी रूप से सक्षम हैं, बल्कि अब वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने को भी तैयार हैं। भरोसा, सुरक्षा और निरंतर सुधार यही वे तीन स्तंभ हैं, जिन पर कोई भी डिजिटल मंच स्थायी बन सकता है। यदि अरट्टई इन तीनों कसौटियों पर खरा उतरा, तो यह केवल एक ऐप नहीं, बल्कि भारत की डिजिटल आत्मविश्वास की पहचान बनेगा।

भरोसे से बनेगा स्वदेशी नवाचार का भविष्य

तकनीक की दुनिया में ट्रेंड बदलते हैं, पर भरोसा और प्रदर्शन स्थायी रहते हैं। अरट्टई की सफलता यह साबित कर सकती है कि स्वदेशी नवाचार अब भावनात्मक नहीं, बल्कि व्यावहारिक और विश्वसनीय दिशा ले चुका है। यह ऐप भारत के डिजिटल भविष्य की उस कहानी का हिस्सा है, जहां आत्मनिर्भरता सिर्फ विचार नहीं, व्यवहार बन चुकी है।

रोचक किस्सा

पैरासेल्सस

पैरासेल्सस पुनर्जागरण काल के उन विलक्षण व्यक्तित्वों में गिने जाते हैं, जिन्होंने अपने समय की सीमाओं से आगे बढ़कर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किए। 16 वीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों में उन्होंने फेरारा विश्वविद्यालय से चिकित्सा में डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की, जो उस दौर में एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती थी। आज उन्हें आधुनिक विषविज्ञान का जनक कहा जाता है, परंतु उनका व्यक्तित्व इससे कहीं अधिक विस्तृत था। वे न सिर्फ एक प्रख्यात चिकित्सक थे, बल्कि वनस्पतिशास्त्र और गूढ़ विद्याओं के भी गंभीर अध्ययनकर्ता रहे। यही गूढ़ रुचियां, उन्हें कई ऐसे प्रयोगों की ओर ले गईं, जो आज हमें अविश्वसनीय प्रतीत होते हैं। उनके सबसे चर्चित विचारों में से एक था- होमुनकुलस की कल्पना। पैरासेल्सस का दावा था कि मनुष्य का वीर्य, यदि उसे उचित गर्मी प्रदान की जाए और मानव रक्त से पोषित किया जाए, तो उसमें एक सूक्ष्म मानव यानी होमुनकुलस विकसित किया जा सकता है। उन्होंने इस प्रक्रिया के कथित चरणों

को विस्तार से लिखा, ताकि कोई भी इच्छुक व्यक्ति इस "निर्माण" को आजमा सके। उनके अनुसार, लोककथाओं में वर्णित परियां, दैत्य और अन्य रहस्यमय जीव भी इसी प्रकार की प्राकृतिक प्रक्रियाओं से उत्पन्न हुए होंगे। हालांकि उस युग में विज्ञान अभी विकसित हो ही रहा था, फिर भी पैरासेल्सस की यह अवधारणा अत्यंत विचित्र मानी जाती थी। वैज्ञानिक समझ की सीमाओं और गूढ़ विश्वासों की मिश्रित दुनिया में जन्मे ये विचार आज हमें और भी असंगत एवं कल्पनाप्रधान लगते हैं। बावजूद इसके, पैरासेल्सस जैसे विचारकों ने इतिहास को यह सिखाया कि ज्ञान की खोज कभी रैखिक नहीं होती। कभी-कभी अजीब प्रयोग ही भविष्य की वैज्ञानिक सोच की नींव तैयार कर जाते हैं।

वैज्ञानिक फैक्ट

तारों की बदलती स्थितियां

पृथ्वी के अक्ष दोलन का अद्भुत प्रभाव

पृथ्वी के अक्ष के दोलन में 72 वर्ष में आकाश में एक डिग्री का अंतर होता है। पृथ्वी के दोलन का काल 26 हजार वर्ष का है। पिछले 2500 वर्षों में इसमें लगभग 34.6 डिग्री का अंतर आया है और इसका वर्तमान झुकाव 23.44 डिग्री है। दरअसल इन दिनों पृथ्वी के घूर्णन और दोलन में आए बदलाव के कारण माना जा रहा है कि हमारी राशियों में भी बदलाव आ चुका है। राशियों का विषय ज्योतिषियों का है और राशियों में बदलावों को लेकर दुनिया के कई देशों में इन दिनों जबरदस्त चर्चा चल रही है। बहरहाल इस आलेख का आधार ज्योतिष न होकर खगोलीय विज्ञान आधार है। पृथ्वी तथा अन्य खगोलीय पिंडों की गति के आधार पर तमाम कैलेंडर प्रचलित हैं, जिसमें प्राचीन भारत में शुरू 27 नक्षत्रों पर आधारित पंचांग भी है। इन सबसे परे खगोल विज्ञान वैज्ञानिक दृष्टि से तारों और नक्षत्रों की गणना व उनका अध्ययन करता है। नक्षत्रों की स्थिति में बदलाव पृथ्वी के अक्ष के दोलन और उसके झुकाव के कारण होता है। पृथ्वी के अक्ष के दोलन में 72 वर्ष में आकाश में एक डिग्री का अंतर होता है अर्थात पूरे दोलन का काल 26 हजार वर्ष है।

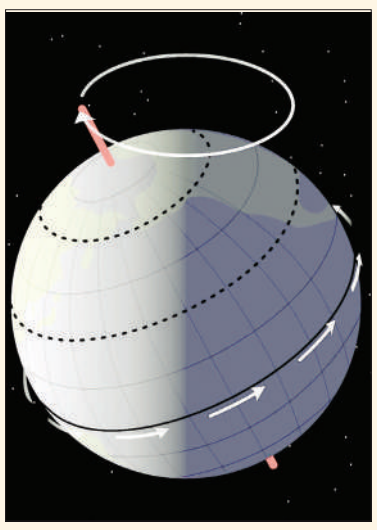

पिछले 2500 वर्षों में इसमें लगभग 34.6 डिग्री का अंतर आया है। इसका एक उदाहरण मकर संक्रांति की तारीख में 14 से 15 जनवरी का बदलाव है। वर्तमान में यह झुकाव 23.44 डिग्री है और यह झुकाव धीरे-धीरे बदलता जाएगा। नक्षत्रों की अपनी परस्पर स्थिति में परिवर्तन हजारों-लाखों वर्ष में आता है। वर्तमान में पृथ्वी का झुकाव 23.44 डिग्री है, जिसे हम सब बचपन से 23.5 डिग्री सुनते आए हैं। पृथ्वी का अक्षीय झुकाव स्थिर नहीं रहता है और लगभग 41 हजार वर्षों के लंबे चक्र में 22.1 और 24.5 डिग्री के बीच दोलन करता रहता है। पृथ्वी के झुकाव में परिवर्तन की दर लगभग 46.8 आर्क सेकंड प्रति शताब्दी है। 25 शताब्दियों की गणना के अनुसार 1170 आर्क सेकेंड का अंतर यानी 0.325 डिग्री का अंतर आया है। 2500 वर्षों की अवधि में प्राकृतिक चक्र के कारण होने वाला बदलाव बहुत छोटा है, एक अंश मात्र भर है।

बबलू चंद्रा
नैनीताल

ध्रुव तारा भी नहीं है स्थिर

नैनीताल स्थित आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के खगोल वैज्ञानिक डॉ. वीरेंद्र यादव कहते हैं कि ध्रुव तारे के एक स्थान पर स्थिर होने की कहानी हम सब जानते हैं, लेकिन पृथ्वी के झुकाव में बदलावों के कारण पृथ्वी के सापेक्ष वर्तमान में उत्तर में नजर आने वाला ध्रुव तारा भी स्थिर नहीं है। पृथ्वी के अक्षीय दोलन के कारण हजारों वर्ष पूर्व तथा भविष्य में कोई अन्य तारा पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव के ऊपर होगा और ऐसा भी समय होगा, जब कोई ध्रुव तारा नहीं होगा। 14000 वर्ष पूर्व तथा 11700 वर्ष भविष्य में वेगा नामक एक चमकदार तारा ध्रुव तारे का स्थान लेगा।

जंगल की दुनिया

तकाहे

दक्षिण द्वीप का तकाहे पक्षी, जो केवल न्यूजीलैंड में पाया जाता है, दुनिया की सबसे बड़ी जीवित रेल प्रजाति है। कभी इसे पूरी तरह विलुप्त मान लिया गया था, लेकिन 1948 में मर्चिसन पर्वतों में इसकी चमत्कारिक पुनर्खोज ने सभी को अचंभित कर दिया। आज इनकी संख्या धीरे-धीरे बढ़कर 400 से थोड़ी अधिक हो गई है। यह उत्साहजनक वृद्धि एक विशेष और सुव्यवस्थित संरक्षण कार्यक्रम का परिणाम है, जो अभयारण्यों और प्राकृतिक आवास दोनों में इनकी आबादी को बढ़ाने में मदद कर रहा है।

हालांकि तकाहे का स्वरूप रेल परिवार की एक अन्य सामान्य प्रजाति पूकेको से मिलता-जुलता है, फिर भी नजदीक से देखने पर इनके बीच का अंतर स्पष्ट हो जाता है। पूकेको पतले होते हैं, उड़ सकते हैं और बहुत बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। इसके विपरीत, तकाहे अधिक भारी-भरकम होता है, उड़ानहीन होता है और इसके पंख गहरे, चमकीले नीले और हरे रंगों की इंद्रधनुषी आभा से भरपूर होते हैं, जो इसे देखने में बेहद आकर्षक बनाते हैं। इन सभी विशेषताओं के कारण तकाहे न केवल एक जैविक दुर्लभता है, बल्कि प्रकृति की दृढ़ता और पुनर्जीवन की अद्भुत क्षमता का जीवंत प्रतीक भी है।

अमृत विचार

मुरादाबाद , शुक्रवार,21 नवंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

अचानक बिगड़ी प्रमोद कृष्णम की तबीयत,वापस लौटे

संभल,अमृत विचार : आचार्य प्रमोद कृष्णम गुरुवार को दोपहर बाद गाजियाबाद स्थित आवास से ऐंचोड़ा कंबोह कल्कि धाम के लिए रवाना हुए थे। हापुड़ के निकट उनकी तबीयत बिगड़ी तो हापुड़ के अस्पताल में ले जाया गया। वहां इलाज के बाद देर शाम आचार्य प्रमोद कृष्णम गाजियाबाद लौट गये। उन्होंने एक्स पर संदेश लिखकर अपने अस्वस्थ होने की बात कही है। कहा है कि अस्पताल में जांच और उपचार के बाद अब अच्छा महसूस कर रहा हूं। उन्होंने अविलंब मेडिकल सहायता उपलब्ध कराने के लिए हापुड़ के पुलिस अधीक्षक व सीएमओ का आभार भी जताया है।

रेलवे स्टेशन पर मिला बुजुर्ग का शव

चंदौसी,अमृत विचार : रेलवे स्टेशन परिसर के बरामदे में खंभे पर एक बुजुर्ग को यात्रियों को बेहोश मिला। उसने पीले रंग का कुर्ता और सफेद रंग का पजामा पहना हुआ था। उसके पास एक इनहेलर पंप और बिस्किट का पैकेट भी मिला। यात्रियों ने उसे उठाने का प्रयास किया, तो वह कुछ बोल नहीं पाया। यात्रियों ने इसकी सूचना जीआरपी व आरपीएफ को दी। जानकारी मिलने पर जीआरपी व आरपीएफ मौके पर पहुंच गए। बुजुर्ग के कपड़ों की तलाशी ली। लेकिन कुछ भी कागज ऐसे नहीं मिले, जिसे उनकी शिनाख्त हो सके।

मुंशी व जनसेवा केंद्र संचालक ने की अधिवक्ता से मारपीट

संभल,अमृत विचार : अधिवक्ता हरिओम सिंह, निवासी मिलक सिसोटा के अनुसार, वह किसी काम से जनसेवा केंद्र संचालक शिशपाल की दुकान पर पहुंचे थे, जहां लवली नामक युवक जनसेवा केंद्र चलाता है। दुकान पर अधिवक्ता के मुंशी शिशपाल और लवली दोनों मौजूद थे, जिससे उनका पहले से परिचय था। इसी भरोसे के चलते उन्होंने अपना मोबाइल चार्जिंग पर रख दिया। दोनों ने मोबाइल चुरा लिया और भोजन के नाम पर 500 रुपये की मांग की। बाद में दोनों आरोपी उन्हें चौधरी सराय स्थित एक होटल पर ले गए, वहां मोबाइल का पिन बताने का दबाव बनाने लगे। इंकार करने पर दोनों ने मारपीट की। उनकी आंख और नाक से खून बहने लगा होटल कर्मचारियों ने बचाया। सदर कोतवाली पुलिस ने मामला दर्ज कर अधिवक्ता को मेडिकल परीक्षण के लिए भेज दिया।

ट्रैक्टर से 12 बीघा फसल जुतवाकर सरकारी जमीन कराई कब्जा मुक्त

हसनपुर मुंजब्ता गांव में 90 बीघा भूमि कब्जामुक्त कराने के लिए शुरू हुआ अभियान

कार्यालय संवादादात,संभल

हसनपुर मुंजब्ता गांव में सरकारी जमीन पर खड़ी आलू की फसल जोतता ट्रैक्टर।

अमृत विचार: सरकारी भूमि पर अवैध कब्जों के खिलाफ संभल प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई करते हुए 12 बीघा भूमि को ट्रैक्टर से फसल जुतवाकर कब्जामुक्त कराया है। यह कार्रवाई मुख्यमंत्री जनता दर्शन में की गई शिकायत के आधार पर शुरू की गई, जिसमें कुल 90 बीघा सरकारी भूमि पर अवैध कब्जे होने की बात सामने आई थी। तीन दिन पहले गांव में पैमाइश कार्य शुरू किया गया था।

पूरा मामला थाना हयातनगर क्षेत्र के गांव हसनपुर मंजब्बता का है। गुरुवार को नायब तहसीलदार अरविंद कुमार सिंह राजस्व टीम के साथ गांव पहुंची और शाम 5 बजे तक भूमि की पैमाइश कराई। इसी दौरान 12 बीघा भूमि पर अवैध कब्जे पाए गए। राजस्व प्रशासन की टीम ने सरकारी जमीन पर बोई गई आलू की फसल को ट्रैक्टर से जुतवाकर कब्जे में ले लिया। राष्ट्रीय योगी किसान ब्रिगेड के ब्रज प्रांत अध्यक्ष गोपीचंद प्रजापति ने 15 सितंबर 2025 को शिकायत की थी कि गांव में सरकारी श्रेणी की कई प्रकार की भूमि दर्ज है, जिन पर कुछ लोगों ने गैरकानूनी ढंग से कब्जा कर रखा है, जिससे राजस्व विभाग को भारी नुकसान हुआ है। शिकायत में इन भूमियों का कुल क्षेत्रफल लगभग 90 बीघा बताया गया है।

नायब तहसीलदार अरविंद कुमार सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री जनता दर्शन में दर्ज शिकायत पर तेजी से कार्रवाई की जा रही है। आज 12 बीघा भूमि की पैमाइश कर प्रशासन ने कब्जे में ले लिया है। बाकी भूमि की भी माप-जोख और सत्यापन कार्य जारी है। तहसीलदार धीरेंद्र प्रताप सिंह के निर्देश पर नायब तहसीलदार के नेतृत्व में 13 सदस्यों की टीम गठित की गई है। टीम में राजस्व निरीक्षक उरमान सिंह, क्षेत्रीय लेखपाल हेमंत कुमार के अलावा लेखपाल मुकेश कुमार शर्मा, दिगपाल सिंह, हिमांशु सिंह, सरजीत सिंह, जीतपाल सिंह, शाहबाज आलम, राजीव कुमार, मुकेश कुमार यादव, स्पर्श गुप्ता, ज्ञानेश कुमार और एंटोनी शामिल हैं। यह टीम गांव की सभी सरकारी भूमि की विस्तृत पैमाइश कर रही है। प्रशासन का कहना है कि पूरे मामले की जांच पूरी होने के बाद जिन भी व्यक्तियों द्वारा सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा किया गया है, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

- मुख्यमंत्री जनता दर्शन में शिकायत के बाद हरकत में आया जनपद का प्रशासन

यातायात पुलिस से अभद्रता में वैन चालक पर रिपोर्ट

बबराला,अमृत विचार: यातायात प्रभारी दुष्यन्त कुमार बालियान की ओर से दी गई तहरीर के अनुसार, 19 नवंबर की शाम करीब 4:30 बजे टीएसआई प्रमोद कुमार मान, मुख्य आरक्षी विकास यादव, होमगार्ड लालता प्रसाद और पीआरडी जवान रामपाल इंदिरा चौक पर यातायात चेकिंग ड्यूटी पर तैनात थे।

इस दौरान एक ईको तेज रफ्तार चेकिंग बिंदु पर पहुंची। विकास यादव द्वारा रोकने का इशारा करने पर चालक ने अभद्र भाषा का प्रयोग किया। ईको की गति धीमी हुई तो विकास ने चालक से नीचे उतरने को कहा। इस पर चालक ने जान से मारने की धमकी दे धक्का-मुक्की की। हेड कांस्टेबल विकास यादव के पैर में चोट आई। आरोपी की पहचान भुवनेश शर्मा पुत्र राजेन्द्र शर्मा निवासी धनीपुर थाना जुनावई के रूप में हुई है। जांच के दौरान ई-चालान एप पर वाहन की जानकारी प्राप्त करने पर पाया गया कि उक्त ईको गाड़ी के विरुद्ध पहले से ही 27 चालान लंबित हैं, जिनकी कुल रकम लगभग 1 लाख 23 हजार 250 है। थाना प्रभारी नरेंद्र कुमार ने बताया कि आरोपी की तलाश की जा रही है।

मोबाइल वैन में 17 खाद्य पदार्थों की जांच, 8 फेल

सौंधन में खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता जांचती मोबाइल वैन। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता,संभल/सौंधन

अमृत विचार: सौंधन क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा विभाग की मोबाइल वैन प्रयोगशाला ने गुरुवार को खाद्य पदार्थों की जांच अभियान चलाया। कुल 17 नमूनों की जांच की गई, जिनमें 8 नमूने मिठाइयों और सोंठ चटनी के फेल पाए गए। खराब गुणवत्ता वाले नमूने सामने आने पर अधिकारियों ने संबंधित दुकानदारों को कड़ी फटकार लगाई और सुधार के निर्देश दिए।

सहायक खाद्य सुरक्षा अधिकारी मानवेन्द्र सिंह के नेतृत्व में मोबाइल वैन प्रयोगशाला सौंधन पहुंची। यहां खाद्य पदार्थों के दुकानदार अपने उत्पाद जांच के लिए लेकर आए। मौके पर टीम ने तुरंत विभिन्न खाद्य वस्तुओं के नमूने एकत्र कर उनकी जांच की। खाद्य सुरक्षा अधिकारी रामजीत सिंह ने बताया कि जांच में 17 नमूनों में से 8 मानकों पर खरे नहीं उतरे हैं। दुकानदारों को स्पष्ट चेतावनी दी गई है कि वे खाद्य सामग्री की गुणवत्ता में तत्काल सुधार लाएं, अन्यथा उनके विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। टीम ने मौके पर मौजूद उपभोक्ताओं को जागरूक भी किया।

अधिकारियों ने कहा कि किसी भी खाद्य पदार्थ को खरीदते समय उसकी एक्सपायरी डेट, पैकेजिंग और गुणवत्ता अवश्य जांच लें, ताकि मिलावटी और खराब खाद्य सामग्री से बचा जा सके।

90 ईसीसी एजुकेटरों को विद्यालय किए गए आवंटित

संवाददाता, बहजोई

- बीएसए कार्यालय में अभ्यर्थियों के दस्तावेजों की जांच के बाद दिए गए विद्यालय

अमृत विचार: बेसिक शिक्षा विभाग के परिषदीय विद्यालयों में ईसीसी एजुकेटर के 90 पदों पर नियुक्ति प्रक्रिया पूरी होने के बाद बीएसए दफ्तर से विद्यालय आवंटित कर दिए गए। बीएसए की देखरेख में हुई इस प्रक्रिया में बड़ी संख्या में चयनित अभ्यर्थी सुबह से ही मौजूद रहे। विद्यालय आवंटन की प्रक्रिया पूरी हुई।

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी परिसर में ईसीसी एजुकेटर के विद्यालय आवंटन की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। जहां अभ्यर्थियों के बैठने व मार्गदर्शन के लिए अलग से काउंटर भी बनाए गए थे। बीएसए कार्यालय में अधिकारियों द्वारा अभ्यर्थियों के जरूरी दस्तावेजों की जांच की गई। इसके बाद मेरिट, विकल्प व विद्यालयों में उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक ईसीसी एजुकेटर को विद्यालय का आवंटन किया गया। सूची घोषित होते ही अभ्यर्थियों ने अपने-अपने विद्यालयों की जानकारी लेकर आगे की प्रक्रिया के लिए दिशा-निर्देश भी लिए। विद्यालय आवंटन के दौरान बीएसए अलका शर्मा ने सभी नव नियुक्त एजुकेटरों को निर्देश दिए कि वह समय से अपने आवंटित विद्यालयों में कार्यभार ग्रहण करें और प्रारंभिक शिक्षा को बेहतर बनाने में सहयोग दें। उन्होंने कहा कि ईसीसी एजुकेटरों की नियुक्ति से परिषदीय विद्यालयों में बुनियादी शिक्षा और अधिक मजबूत होगी। बीएसए ने बताया कि ईसीसी एजुकेटरों को जल्द पदभार ग्रहण करने के निर्देश दिए गए हैं।

लोक अदालत की सफलता को बैठक में दिये निर्देश

चंदौसी,अमृत विचार: 13 दिसंबर को प्रस्तावित राष्ट्रीय लोक अदालत को लेकर बुधवार को बैठक आयोजित की गई।

जनपद न्यायाधीश एवं अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण डॉ. विदुषी सिंह के निर्देश पर सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण संभल के नेतृत्व में विश्राम कक्ष में बिजली विभाग के सभी एसडीओ के साथ हुई। बैठक में प्रभारी सचिव ने निर्देश दिए कि राजस्व, बिजली, बैंक, पेंशन, पेयजल, भूमि विवाद सहित जनहित से जुड़े मामलों को प्राथमिकता के आधार पर लोक अदालत में प्रस्तुत किया जाए, ताकि निस्तारण हो सके। उन्होंने अधिकारियों से समयबद्ध तैयारी करने को कहा। अधिकारियों ने आश्वासन दिया कि वे अपने-अपने विभागों से संबंधित मामलों की सूची तैयार कर निर्धारित समय पर लोक अदालत में प्रस्तुत करेंगे।

तीन घरों से समेटा लाखों का सामान

संवाददाता,बहजोई

चोरी की वारदात के बाद लोगों से जानकारी लेती पुलिस। ● अमृत विचार

- पीड़ित गृह स्वामियों ने रिपोर्ट दर्ज करने को कोतवाली में दी तहरीर

अमृत विचार: सर्दी का मौसम आते ही बदमाशों के हौसले बुलंद हो गए गए हैं। बदमाशों ने बहजोई में एक ही कॉलोनी में तीन घरों को निशाना बनाया। एक बंद घर से 40 हजार की नगदी व सोने चांदी के जेवर समेटकर फरार हो गए। वहीं दो अन्य घरों सेदो मोबाइल, नगदी व कीमती कपड़े चुराकर ले गए। पीड़ित गृह स्वामियों ने रिपोर्ट दर्ज करने को थाना में तहरीर दी है।

बहजोई के मोहल्ला चितौरा रोड पर 14 नवंबर को अलीम पुत्र अब्दुल सलाम अपने परिवार के साथ साले की शादी में गया था। रात में बदमाश उसके घर में प्रवेश कर गए। घर को बदमाशों ने जमकर खंगाला। सोने का एक टीका, एक जोड़ी कुंडल, एक जोड़ी पाजेब , एक जोड़ी हथफूल,40 हजार की रखी नगदी, कीमती पीतल के बर्तन सहित डेढ़ लाख का सामान समेट ले गए। इसके बाद बदमाश इसी मोहल्ले के उरमान पुत्र खचेडू के घर से दो मोबाइल, एक रसोई गैस सिलेंडर व 8 हजार की नगदी चुराकर फरार हो गए। शफीक अहमद पुत्र छोटन हुसैन के घर में रखे कीमती कपड़े चुराकर ले गए। पड़ोसियों ने जब चोरी की जानकारी दी तो अलीम तथा उसके परिजन घर पर पहुंच गए। घर पर बिखरा पड़ा सामान देखकर वह दंग रह गए। इसकी सूचना उन्होंने पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने

चोरी के बाद बिखरा पड़ा सामान।

घटना की परिजनों से जानकारी की। तीनों गृह स्वामियों ने रिपोर्ट दर्ज करने को बहजोई कोतवाली में तहरीर दी है।

जर्जर विद्युत केबल में लगी आग, महिला घायल

संभल / कुढफतेहगढ़, अमृत विचार: थाना कुढफतेहगढ क्षेत्र के गांव डारनी में गुरुवार की शाम पोल पर लगे जर्जर विद्युत केबल में शार्ट सर्किट से आग लग गई और केबल जलता हुआ रामसिंह के घेर में टूट कर गिर गया। घेर में पशुओं को चारा डाल रही महिला फूलवती केबिल गिरते ही बाहर को भागी तो नाली पर गिर कर घायल हो गई। गनीमत रही कि केबल घेर में बंध रहे पशु व चारा डाल रही महिला के ऊपर नहीं गिरा, नहीं तो बड़ा हादसा हो जाता।

ग्रामीणों ने बिजलीघर डारनी को फोन कर बिजली आपूर्ति बंद करायी। ग्राम प्रधान अनुरुद्ध कुमार ने बताया कि गांव में केबिल लाइन जर्जर है जिसकी कई बार शिकायत कर दी गई है परन्तु अभी तक केबिल लाइन बदली नहीं गई है।

ट्रक में लटका मिला चालक का शव

कार्यालय संवाददाता,संभल

ट्रक चालक का शव मिलने के बाद परिजनों से बात करते थाना प्रभारी। ● अमृत विचार

- हत्या का आरोप, रायसत्ती थाना इलाके की घटना

अमृत विचार: रायसत्ती थाना क्षेत्र में चावल से भरे ट्रक के केबिन में चालक का फंदे से लटका मिला। परिजनों ने युवक की हत्या कर शव लटकाने का आरोप लगाया है।

गुरुवार सुबह करीब 7 बजे संभल जोया मार्ग पर रायसत्ती बस अड्डे से मात्र सौ मीटर दूर खड़े चावल से लदे ट्रक में ड्राइवर का शव फंदे से लटका देखा गया। ट्रक में शव की जानकारी पर बड़ी संख्या में लोग मौके पर जुट गए। पुलिस के प्रयास से करीब एक घंटे बाद मृतक की पहचान 20 वर्षीय आसिफ पुत्र शाहिद निवासी टंकी के पास, मोहल्ला डेरा सराय, थाना रायसत्ती के

मृतक आसिफ।

रूप में हुई। बताया गया कि आसिफ ट्रक चालक था और बिहार से चावल व अन्य सामान लेकर संभल आता-जाता था। यह भी बताया गया कि जिस ट्रक में आसिफ का शव मिला वह उसी ट्रक को चलाता था। लोगों के अनुसार देर रात 12 से 1 बजे के बीच आसिफ को ट्रक के आसपास घूमते हुए देखा गया था। पुलिस ने शव का पंचनामा भरते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। आसिफ की मौत की खबर पर परिजन भी मौके पर पहुंच गये। परिजनों ने आसिफ की हत्या कर शव लटका देने का आरोप लगाया। मां अमजदी सहित सभी परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। थानाध्यक्ष बोबिंद्र कुमार ने बताया कि ट्रक ड्राइवर का शव फंदे से लटका मिला है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। परिजनों की ओर से अभी कोई तहरीर प्राप्त नहीं हुई है। पुलिस सभी पहलुओं की जांच कर रही है और रिपोर्ट आने के बाद आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

आउटसोर्सिंग सफाई कर्मियों का वेतन बढ़ाने की मांग

संवाददाता,चंदौसी

- लखनऊ में वित्त मंत्री व समाज कल्याण मंत्री से मिला प्रतिनिधिमंडल

अमृत विचार: स्थानीय निकाय सफाई कर्मचारी संघ के प्रतिनिधिमंडल ने प्रदेश अध्यक्ष मानिक लाल नागर के नेतृत्व में लखनऊ में वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना, समाज कल्याण मंत्री असीम अरुण व नगर विकास मंत्री एके शर्मा के व्यक्तिगत सहायक केवीएल श्रीवास्तव से मुलाकात की। प्रतिनिधि मंडल ने लंबित मांगों को लेकर मंत्रियों को ज्ञापन सौंपा।

कहा कि सरकार द्वारा आउटसोर्सिंग सफाई कर्मचारियों का वेतन 20 हजार रुपये प्रतिमाह करने की घोषणा को कई महीने बीत चुके हैं, लेकिन अभी तक वेतन नहीं बढ़ाया गया है। इसके साथ ही वर्ष 2001 तक के संविदा सफाई कर्मचारियों के नियमितीकरण का प्रस्ताव मांगे जाने पर भी प्रतिनिधि मंडल ने आपत्ति जताई। उन्होंने सरकार से वर्ष 2006 के सभी संविदा सफाई कर्मचारियों को नियमित करने की मांग रखी। समाज कल्याण मंत्री असीम अरुण से मुलाकात के दौरान प्रतिनिधियों ने मांग की कि एससी एसटी के 50 प्रतिशत आरक्षण में से वाल्मीकि समाज स्वच्छकार समाज को पृथक आरक्षण देने का प्रस्ताव भेजा जाए, ताकि उन्हें न्याय मिल सके। प्रदेश प्रमुख महामंत्री राजेंद्र सहदेव, सुनील लश्करी, जिलाध्यक्ष संभल अजय कुमार राजवर आदि सदस्य मौजूद रहे।

न्यूज डायरी

यातायात नियमों के पालन से सुरक्षित होगा सफर

चंदौसी अमृत विचार : नगर के एफआर इंटर कॉलेज में यातायात पखवाड़े के अंतर्गत आकांक्षा समिति द्वारा जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। यातायात निरीक्षक प्रभारी दुष्यंत कुमार बालियान ने सड़क पर चलने के नियम, वाहन संचालन के तरीके और सुरक्षित यात्रा से जुड़ी महत्वपूर्ण बातों पर छात्रों को जागरूक किया। उन्होंने कहा कि सीखे हुए इन नियमों को घर जाकर अपने परिवार के सदस्यों को भी बताएं, ताकि समाज में यातायात के प्रति जागरूकता बढ़े। सभी छात्रों को यातायात नियमों का पालन करने की शपथ भी दिलाई। समाज सेविका संगीता भार्गव ने कहा कि हर व्यक्ति का प्रथम कर्तव्य है कि वह सड़क पर चलने के सभी नियमों को जाने और उनका पालन करें। प्रधानाचार्य वसीमुद्दीन ने भी संबोधित किया।सोनू कुमार, विक्रांत, रवि सहित विद्यालय का स्टाफ उपस्थित रहा।

मेडिकल स्टोर की आड़ में अस्पताल, पहुंचे सिटी मजिस्ट्रेट

संभल, अमृत विचार : सौंधन में सहारा मेडिकल स्टोर को लेकर शिकायत की गई थी कि वहां मेडिकल स्टोर की आड़ में अवैध अस्पताल का संचालन कर अवैध रूप से मरीजों का इलाज किया जा रहा है। इस शिकायत के बाद नगर मजिस्ट्रेट सुधीर कुमार गुरुवार को मौके पर जांच के लिए पहुंचे। जांच में मेडिकल स्टोर संचालक न मेडिकल का रजिस्ट्रेशन दिखाया। जांच के दौरान मेडिकल स्टोर के बराबर से एक कमरे में दो-तीन बेड रखे हुए पाए गये। हालांकि जांच के समय उन बेड पर कोई मरीज भर्ती नहीं था। मेडिकल स्टोर संचालक ने बताया कि यह बेड किसी और के हैं। नगर मजिस्ट्रेट ने बताया कि सभी बेड़ों को कमरे से निकलवा दिया गया । संचालक को निर्देशित किया गया कि वह भविष्य में किसी भी प्रकार से इस कमरे का इस्तेमाल चिकित्सा सेवाओं हेतु सक्षम विभाग से अनुमति प्राप्त किए बिना नहीं करेंगे।

डीएम ने एसआईआर चौपाल में किया मतदाताओं का सत्यापन

बहजोई,अमृत विचार : बहजोई विकासखंड के गांव अर्जुनपुर जूना में आयोजित एसआईआर चौपाल के अन्तर्गत बूथ संख्या 269 व बूथ संख्या 270 की मतदाता सूची के तहत मतदाताओं के नाम का वाचन करते हुए डीएम द्वारा मतदाताओं का सत्यापन किया गया। डीएम ने बीएलओ से कहा कि किसी भी प्रकार के दबाव में काम नहीं करना है। डीएम ने कहा की मतदाता सूची का वाचन करते हुए सूची का सत्यापन किया जाए। कहा कि जनपद में 1652 बीएलओ एसआईआर के तहत कार्य कर रहे हैं तथा गणना प्रपत्रों का वितरण किया जा चुका है। गणना प्रपत्रों के संग्रह तथा डिजिटलाइजेशन का कार्य चल रहा है। उन्होंने कहा कि प्रयास है शीघ्र ही गणना प्रपत्रों का डिजिटलाइजेशन होने के बाद आपत्ति लेने की प्रक्रिया प्रारम्भ की जाएगी। डीएम ने एएसडी वोटों को भी चिन्हांकित करने के निर्देश दिए।

अवतार भूमि संभल को खास बनाते हैं 87 तीर्थ

संभल, अमृत विचार : हिंदू जागृति मंच पदाधिकारियों ऐतिहासिक आध्यात्मिक चर्चा कार्यक्रम में नगर के 87 तीर्थों के महत्व पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए संभल को अद्वितीय और विलक्षण भूमि बताया। महर्षि दयानंद बाल मंदिर जूनियर हाई स्कूल में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंच के प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार शर्मा ने कहा कि अयोध्या, मथुरा, काशी और संभल यह चार स्थान भगवान के अवतार स्थलों के रूप में विशेष महत्व रखते हैं। उन्होंने बताया कि संभल न केवल अवतार भूमि है, बल्कि यहां 87 तीर्थ हैं, जिनमें 68 तीर्थ स्थल और 19 कूप शामिल हैं। कूप भी तीर्थ के समान ही पवित्र माने गए हैं। दुनिया में ऐसा दूसरा कोई स्थान नहीं है जहां परमपिता परमात्मा का अवतार स्थल और इतने तीर्थ एक साथ विद्यमान हों। उन्होंने युवाओं से सभी तीर्थों के संरक्षण, जीर्णोद्धार और व्यवस्थाओं के संचालन में तन-मन-धन से सहयोग करने का आग्रह किया। मंच की महिला जिला अध्यक्ष मीनू रस्तोगी ने भी संभल के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसे अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली भूमि बताया। कार्यक्रम में राकेश कुमार शुक्ला, राघवीरेंद्र त्यागी, चंद्रभान आर्य, पूनम शर्मा, रेनू शर्मा, सुचेता गुप्ता, भावना, निशा दिवाकर और इशिका सहित अन्य प्रतिभागियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन विद्यालय के प्रधानाचार्य जोगेंद्र पाल शर्मा द्वारा किया गया।

मुसीबत मुख्य बाजारों से लेकर गलियों तक पैदल चलना मुश्किल, यातायात व्यवस्था धड़ाम

ई-रिक्शा चालकों की मनमानी से दिन भर लगता है जाम

कार्यालय संवाददाता,संभल/चंदौसी

चंदौसी के मालगोदाम रोड पर जाम में फंसे वाहन। ● अमृत विचार

अमृत विचार: चंदौसी शहर की सड़कें इन दिनों अव्यवस्था का पर्याय बन चुकी हैं। ई-रिक्शों का अनियमित संचालन इस कदर बढ़ गया है मानो नियम-कानून का अस्तित्व ही खत्म हो गया हो। न रजिस्ट्रेशन, न तय रूट, न नियंत्रण हर तरफ बस जाम, अव्यवस्था और अराजकता का बोलबाला है। हालत यह है कि मुख्य बाजारों से लेकर गलियों तक पैदल चलना तक मुश्किल हो गया है।

बीते कुछ महीनों में परिवहन विभाग ने दावा तो किया था कि शहर के सभी ई-रिक्शों को कोडिंग प्रणाली के तहत लाया जाएगा, रूट निर्धारित किए जाएंगे, ओवरलोडिंग पर रोक लगेगी और रजिस्ट्रेशन अनिवार्य कराया जाएगा। लेकिन धरातल पर न तो कोडिंग शुरू हुई, न रजिस्ट्रेशन अभियान दिखा। विभाग की ढिलाई और प्रशासनिक चुप्पी ने हालात और बिगाड़ दिए हैं। शहर के प्रमुख फव्वारा चौक, लक्ष्मी बाजार, बड़ा बाजार, मुरादाबाद गेट, स्टेशन रोड, रामस्वरूप रोड, संभल गेट, घंटाघर, मालगोदाम रोड, ब्रह्म बाजार और बाजार चौक जैसे व्यस्त इलाकों में सुबह से देर रात तक ई-रिक्शा कतारबद्ध खड़े रहते हैं। निर्धारित स्टॉप न होने के कारण चालक मनमर्जी से जहां-तहां वाहन रोकते हैं, जिससे वाहनों की लंबी कतारें लग जाती हैं। स्थिति इतनी विकट है कि चार रिक्शों के रुकते ही पीछे वाहनों की लाइन सैकड़ों मीटर तक बढ़ जाती है।

ई-रिक्शा के रूट निर्धारण से सुधरेंगे हालात

कई ई-रिक्शा बिना लाइट, इंडिकेटर और फिटनेस के चल रहे हैं। एक तरफ प्रशासन कागज़ों पर नियमों और व्यवस्थाओं की बात करता है, दूसरी तरफ जमीनी हकीकत में नियमों का खुला उल्लंघन रोज़ाना देखने को मिलता है। लोगों की मांग है कि ई-रिक्शा संचालन पर तुरंत नियंत्रण, रूट निर्धारण, रजिस्ट्रेशन, फिटनेस और चालकों की जांच के लिए ठोस कदम उठाए जाएं, ताकि शहर की बिगड़ती यातायात व्यवस्था को सुधारा जा सके। यातायात प्रभारी दुष्यंत बालियान ने कहा कि यातायात व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए लगातार प्रयास किये जा रहे हैं।

ई-रिक्शा केवल सड़कों पर ही नहीं, बल्कि फुटपाथ, स्कूलों के बाहर, अस्पतालों के सामने तक खड़े नजर आते हैं। इससे पैदल चलने की जगह तक नहीं बचती। खासकर स्कूल छुट्टी के समय हालात बेहद गंभीर हो जाते हैं। फुटपाथों का मूल उद्देश्य खत्म हो चुका है। कुछ जगह दुकानदारों ने कब्जा कर लिया है, तो कहीं रिक्शा चालकों ने स्थायी अड्डे बना लिए हैं। अवैध संचालन को लेकर प्रशासन की चुप्पी भी सवालों के घेरे में है। शहर में अनुमानित रूप से 5000 से अधिक ई-रिक्शा चल रहे हैं, लेकिन इनमें से आधे से ज्यादा बिना रजिस्ट्रेशन के सड़कों पर दौड़ रहे हैं। कई चालक नाबालिग हैं और अधिकांश बिना किसी प्रशिक्षण के वाहन चला रहे हैं। ओवरलोडिंग, तेज आवाज में हॉर्न और गलत दिशा में चलने जैसी समस्या आम हो गई हैं।

न्यूज ब्रीफ

रिश्वत लेने के आरोप में स्योहारा थाना प्रभारी निलंबित

बिजनौर ,अमृत विचार : पुलिस कप्तान अभिषेक झा ने स्योहारा थाना प्रभारी निरीक्षक सतेंद्र सिंह को रिश्वत लेने के आरोप में निलंबित कर दिया है। उनके स्थान पर हल्दौर में तैनात रहे निरीक्षक संजय कुमार को स्योहारा थाने की नई जिम्मेदारी सौंपी गई है। पुलिस लाइन में तैनात कृष्ण अवतार सिंह को हल्दौर थाने का नया प्रभारी बनाया गया है। मामला 15 नवंबर का है। गांव महुपुरा निवासी बलकरण सिंह अपने पुत्र से जुड़े विवाद की शिकायत लेकर स्योहारा थाने पहुंचे थे। आरोप है कि शिकायत दर्ज करने के बदले पुलिस कर्मियों ने उनसे अवैध वसूली की। पुलिस क्षेत्राधिकारी धामपुर द्वारा जांच कराई गई। जांच में शिकायतकर्ता के आरोप सही पाए गए। इसके बाद एसपी अभिषेक झा ने थाना प्रभारी सतेंद्र सिंह को निलंबित कर दिया।

सड़क दुर्घटना में घायल युवक की मौत

हसनपुर, अमृत विचार : सड़क दुर्घटना में करीब ढाई महीने पहले घायल हुए युवक की उपचार के दौरान दिल्ली के अस्पताल में मौत हो गई। कोतवाली क्षेत्र के गांव हैबतपुर बंजारा निवासी 26 वर्षीय गुल मोहम्मद पुत्र जाहिद ढाई माह पूर्व ट्रैक्टर व बाइक की भिड़ंत में बुरी तरह घायल हो गया था। दिल्ली में उसका उपचार चल रहा था। बुधवार की देर शाम अस्पताल में उसकी मौत हो गई। मृतक चार बहनों का अकेला भाई था। मृतक अपने पीछे पत्नी आलिया व 7 दिन की बेटी को रोटी भी लगता छोड़ गया है।

खड़े ट्रक में लगी आग ड्राइवर ने कूदकर बचाई जान

बिजनौर, अमृत विचार : गुरुवार की शाम थाना शहर कोतवाली क्षेत्र के नगीना रोड पर उस समय अफरातफरी मच गयी जब मोहित पेपर मिल के निकट खड़े एक ट्रक में अचानक आग लग गई तथा धू धूकर जलने लगा। आग लगने के कारण का नही पता लग सका है ड्राइवर व क्लीनर ने कूदकर जान बचाई। ट्रक में आग लगने से रोड पर आवागमन प्रभावित हुआ।

227 दिव्यांगजनों को दिए सहायक उपकरण

प्रभारी मंत्री ने विकास योजनाओं, कानून-व्यवस्था एवं विभिन्न विभागीय कार्यक्रमों की समीक्षा की

कार्यालय संवाददाता, अमरोहा

दिव्यांगों को ट्राई साइकिल देकर रवाना करते प्रभारी मंत्री केपी मलिक व डीएम निधि गुप्त।

- विकास कार्यों में गति और गुणवत्ता सरकार की प्राथमिकता : केपी मलिक

अमृत विचार: प्रभारी मंत्री केपी मलिक ने जिले में चल रही विकास योजनाओं, कानून-व्यवस्था की स्थिति एवं विभिन्न विभागीय कार्यक्रमों की प्रगति पर विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनता से जुड़े प्रत्येक कार्य में पारदर्शिता एवं तत्परता सुनिश्चित की जाए। साथ ही 227 दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण वितरित किए।

गुरुवार को वन, पर्यावरण, जन्तु उद्यान एवं जलवायु परिवर्तन विभाग व प्रभारी मंत्री केपी मलिक ने जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों के साथ कलेक्ट्रेट में बैठक कर विकास कार्यों एवं कानून व्यवस्था की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने जनपद के विकास को गति देते हुए जनपद को कैसे आगे बढ़ाया जाए इस पर चर्चा की। इस अवसर पर शिक्षक विधायक डॉ. हरि सिंह ढिल्लो, विधायक हसनपुर महेंद्र सिंह खड़गवंशी, जिलाध्यक्ष भाजपा उदयगिरी गोस्वामी, जिलाधिकारी निधि गुप्ता वत्स और पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनंद रहे। बैठक में राज्यमंत्री ने जिले में चल रही विकास योजनाओं, कानून-व्यवस्था की स्थिति एवं विभिन्न विभागीय कार्यक्रमों की प्रगति पर विस्तृत समीक्षा की। अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनता से जुड़े प्रत्येक कार्य में पारदर्शिता एवं तत्परता सुनिश्चित की जाए। विकास कार्यों में गति और गुणवत्ता सरकार की प्राथमिकता है, इसका लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए।

विधायक महेंद्र सिंह खड़गवंशी ने हसनपुर में गंगा नदी के किनारे स्थित बंधे की मरम्मत की बात कही जिस पर मंत्री केपी मलिक ने अधिशासी अभियंता सिंचाई विभाग को एस्टीमेट बनाकर शासन को प्रेषित करने के निर्देश दिए। राज्यमंत्री ने जिले के अधिकारियों को निर्देश दिए कि विकास एवं निर्माण कार्यों में पारदर्शिता एवं प्रभावशीलता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों को गति दी जाए, ताकि योजनाओं का लाभ आमजन तक समयबद्ध ढंग से पहुंच सके। सरकार की प्राथमिकता जनता के हित से जुड़े कार्यों को गुणवत्तापूर्ण और समयसीमा के भीतर पूरा कराना है। इससे पहले राज्यमंत्री ने दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग की कृत्रिम अंग सहायक उपकरण योजनान्तर्गत आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया। उन्होंने इस अवसर पर पात्र लाभार्थियों को 100 निःशुल्क ट्राईसाइकिल, 56 एम.आर. किट व 71 कृत्रिम अंगों का वितरण किए। ट्राई साइकिल वितरण कर उन्हें हरी झंडी दिखाकर अपने अपने घरों की तरफ रवाना किया। इसके साथ ही उनसे समस्याओं के बारे में भी बातचीत की। ट्राई साइकिल पाकर दिव्यांगजन खुश दिखाई दिए। केपी मलिक ने कहा कि सरकार दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने जोर दिया कि ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से उनकी जरूरतों को प्राथमिकता दी जा रही है। कहा कि दिव्यांगजन समाज का अभिन्न अंग हैं और उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि सरकार हर वर्ग के लोगों की चिंता कर रही है। कहा कि इन सहायक उपकरणों के सहारे विशेष आवश्यकता वाला कोई भी व्यक्ति अपने बौद्धिक हुनर का प्रयोग कर अपनी जीवन रूपी पटरी को सामान्य लोगों की तरह सही स्तर पर ला सकता है। जिले के ऐसे दिव्यांगजन जिन्हें विभिन्न माध्यम से चिन्हित किया गया था, उन्हें आज सहायक उपकरण एवं कृत्रिम अंग वितरित किए जा रहे हैं।यह सहायक उपकरण वितरण कार्यक्रम सहयोग करने का प्रयास है। इससे दिव्यांगजनों के किसी अन्य व्यक्ति पर आश्रित होने के भाव को कम किया जा सकेगा।

पीडी डीआरडीए अम्बरीष कुमार, जिला अर्थ एवं संख्या अधिकारी अमित कुमार, जिला दिव्यांगजन अधिकारी शिखा शर्मा सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

युवा रालोद ने एसआईआर जागरुकता अभियान चलाया

बैठक में उपस्थित कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

संवाददाता, हसनपुर

अमृत विचार : युवा राष्ट्रीय लोकदल द्वारा एसआईआर मतदाता जागरुकता अभियान चलाया गया। गांव गारवपुर में मुख्य अतिथि चौधरी सरजीत सिंह, पूर्व न्यायाधीश एवं मंडलाध्यक्ष, मुरादाबाद विशेष रूप से उपस्थित रहे।

चौधरी सरजीत सिंह ने कहा एसआईआर से घबराने की नहीं, बल्कि इसे समझने और अपनाने की आवश्यकता है। यह हमारे अधिकारों की रक्षा, पहचान की सुरक्षा और जनता की आवाज़ को ताकत देने का माध्यम है। जब मतदाता जागरूक होता है, तभी लोकतंत्र और अधिक मजबूत बनता है। उन्होंने एसआईआर के उद्देश्य एवं महत्व पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। जिलाध्यक्ष इरकान अली ने कहा एसआईआर अभियान का उद्देश्य किसी को भ्रमित करना नहीं, बल्कि हर घर तक मतदाता को जागरूक करना है। अध्यक्षता फिरयास अली ने की तथा संचालन इरकान अली, जिलाध्यक्ष युवा राष्ट्रीय लोकदल ने किया। इस अवसर पर आलोक चौधरी, सतपाल चौधरी, तसलीम अहमद, शकील अहमद, जाकिर हुसैन, यामीन अहमद, मोबीन अहमद, संजू सैफ़ी, नौशाद मलिक, हमीद मलिक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

जलभराव एवं गंदगी का विरोध, प्रदर्शन

संवाददाता, हसनपुर

जल भराव एवं गंदगी के विरोध में प्रदर्शन करते ग्रामीण। ● अमृत विचार

- गांव मल्ल वाली डगरोली के ग्रामीणों ने जताई नाराजगी

अमृत विचार : हसनपुर क्षेत्र के गांव मल्ल वाली डगरोली स्थित सरकारी स्कूल के सामने लंबे समय से चले आ रहे जलभराव और कीचड़ की समस्या को लेकर बुधवार को भारतीय किसान यूनियन (खालसा) के कार्यकर्ताओं और स्थानीय ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया।

इस जलभराव के कारण बच्चों, शिक्षकों और स्थानीय निवासियों की आवाजाही बुरी तरह प्रभावित हो रही है। स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों को प्रतिदिन कीचड़ भरे रास्ते से गुजरना पड़ता है, जिससे उन्हें भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है उन्होंने ग्राम प्रधान और सचिव को भी इस बारे में सूचित किया था, लेकिन शिकायतों के बावजूद अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। बुधवार को ग्रामीणों ने स्कूल के बाहर एकजुट होकर अपना विरोध जताया। ग्रामीणों ने मुख्य रास्ते पर पक्की सड़क के निर्माण की मांग उठाई।। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि उनकी समस्याओं का समाधान नहीं हुआ, तो वे अपने आंदोलन को और व्यापक करेंगे। ग्राम प्रधान नेमपाल और सचिव पुष्पेंद्र सिंह ने बताया कि जल्द ही साफ-सफाई कराकर सड़क का निर्माण करा दिया जाएगा। प्रदर्शन में दलीप, पंकज, भगवान, अखिलेश, नेमला, कृष्णा, धर्मेंद्र, खेमा, बत्ती, पुष्पा सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे।

सचिन और पूजा ने सोशल मीडिया पर बनाई पहचान

हसनपुर, अमृत विचार : सचिन सक्सेना और पूजा सक्सेना इन दिनों सोशल मीडिया पर प्रतिभा से पहचान बना चुके हैं। दोनों पति-पत्नीगानों पर आकर्षक डांस वीडियो बनाकर पोस्ट करते हैं, जिन्हें दर्शकों द्वारा खूब पसंद किया जा रहा है।

उनकी रचनात्मकता, मेहनत और निरंतर प्रयासों ने उन्हें सोशल मीडिया पर उभरता हुआ चेहरा बना दिया है। सचिन सक्सेना अध्यापक हैं, अपने कार्य के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी सक्रिय रहते हुए सकारात्मक और मनोरंजक सामग्री पेश कर रहे हैं। उनकी पत्नी पूजा सक्सेना भी अपनी स्वाभाविक अभिव्यक्ति और सुंदर डांस प्रस्तुतियों से दर्शकों का मन जीत रही हैं। सचिन और पूजा सक्सेना ने दर्शकों का आभार व्यक्त किया।

दीदी की दुकान खोल आत्मनिर्भर बन रहीं क्षेत्र की तमाम महिलाएं

संवाददाता, गजरौला

दुकान संचालिका को सर्टिफिकेट देते प्रथमा यूपी ग्रामीण बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक रामेंद्र कुमार।

- 50 दुकान संचालक दीदियों को सर्टिफिकेट दिए गए

अमृत विचार : जुबिलेंट भरतिया फाउंडेशन एवं बी-एवल फाउंडेशन द्वारा ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से खोली गईं 50 दुकान संचालक दीदियों को सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।

गुरुवार को जुबिलेंट भरतिया फाउंडेशन के ट्रेनिंग सेंटर पर मुख्य अतिथि प्रथमा यूपी ग्रामीण बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक रामेंद्र कुमार एवं जेबीएफ में सीएसआर कार्यक्रम अधिकारी विशाल गौरव ने प्रमाण पत्र वितरित किए। रामेंद्र कुमार ने बताया कि उनका बैंक महिलाओं को दीदी की दुकान खोलने के लिए ऋण भी उपलब्ध करा रहा है। विशाल गौरव ने बताया कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में यह जेबीएफ का बड़ा कदम है।

अनीता देवी, ऊषा रानी, मीना, रिंकुल, रूबी गौतम, नीरो देवी, सोमवती देनी ने बताया कि उन्हें स्वावलंबी बनने का अवसर मिला है और दीदी की दुकान के जरिए उनकी आजीविका भी बेहतर तरीके से चल रही है। उन्होंने जुबिलेंट प्रबंधन का आभार भी व्यक्त किया। जुबिलेंट में निदेशक जनसंपर्क सुनील दीक्षित के अलावा प्रथमा यूपी ग्रामीण बैंक से आईं नीलम यादव, ज्योति, जुबिलेंट में सुरक्षा प्रमुख वीरेंद्र नेगी, एचआर हेड पुनीत तिवारी, चंदन सिंह, बूंदी सिंह, नवनीत सिंह, साजिद पाशा, मोहित, नासिर खान, राहुल, पूजा, नूर मसीह आदि मौजूद रहे।

भाजपाइयों ने एसआईआर अभियान सफल बनाने का लिया संकल्प

बैठक में भाजपा जिला महामंत्री अभिनव कौशिक व अन्य। ● अमृत विचार

संवादातता, सैदनगली

अमृत विचार : नगर पंचायत सैददगली के जन सहयोग कार्यालय में मतदाता सूची गहन पुनरीक्षण अभियान के अंतर्गत बूथ स्तर पर चल रहे कार्यों की विस्तृत समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिला महामंत्री भारतीय जनता पार्टी अभिनव कौशिक ने की।

इस दौरान बूथों पर मतदाता सूची शुद्धिकरण, नए मतदाताओं का पंजीकरण तथा मृत/स्थानांतरित मतदाताओं के नाम हटाने जैसे कार्यों की प्रगति पर गहन चर्चा हुई। बैठक में सभासद अमित भाटी, सभासद निकेश कुमार राघव, रविंद्र सिंह, धारा सिंह, भगवत खडकवंशी, फजले अब्बास, मेहरबान, डॉक्टर प्रदेश कुमार, नीटू भाटी, जगपाल सिंह कटारिया तथा भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यकर्ताओं ने अभियान को पूरी तत्परता से सफल बनाने का संकल्प दोहराया और शत-प्रतिशत मतदाता सूची शुद्धिकरण का लक्ष्य निर्धारित किया।

भाकियू असली की बैठक में समस्याओं पर चर्चा

बैठक को संबोधित करते किसान नेता। ● अमृत विचार

संवाददाता, हसनपुर

अमृत विचार : भारतीय किसान यूनियन असली की मासिक पंचायत नगर की मंडी समिति में आयोजित की गई।

चौधरी समरपाल सिंह ने गन्ना मूल्य सिर्फ 30 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ाये जाने पर असंतोष जताया। स्मार्ट मीटर का भी विरोध किया। गोवर्धन सिंह ने कहा कि कुत्तों व सांडों के हमले में कई लोगों की मौत हो चुकी है। इन्हें पकड़वाया जाए। चौधरी परम सिंह ने कहा कि सड़कों की दशा सुधार होनी चाहिए और यूरिया व एनपीके खाद तुरंत उपलब्ध कराना चाहिए। बैठक की अध्यक्षता मोहम्मद सुखा ने की।

मोहम्मद उमर, सुखी राम चौहान, ओम प्रकाश सिंह, शूरवीर सिंह, कमल सिंह, रमेश चंद्र, धर्मपाल सिंह, जय सिंह, मेवाराम सिंह आदि मौजूद रहे।

न्यूज डायरी

तौकीर रजा पर जेल से हमला कराने की साजिश का आरोप

बरेली, अमृत विचार : आला हजरत हेल्पिंग सोसाइटी की अध्यक्ष निदा खान ने मंगलवार की रात घर में घुसकर युवक पर जानलेवा हमला करने का आरोप लगाया था। निदा खान ने बारादरी पुलिस से इस मामले की शिकायत की थी। फिलहाल पुलिस इस मामले की जांच की बात कह रही है। निदा खान ने गुरुवार को सर्किट हाउस में पत्रकारों से बात करते हुए अपने ऊपर हुए हमले का जिम्मेदार मौलाना तौकीर रजा खां को बताया है। निदा खान ने आरोप लगाया है कि तौकीर रजा ने जेल से साजिश रचकर उनके ऊपर हमला कराया है। पुलिस पर भी शिकायत करने के बाद कार्रवाई नहीं करने की बात कही है। सर्किट हाउस में गुरुवार को मीडिया से बात करते हुए निदा खान ने मौलाना तौकीर रजा खां और अपने ससुरालियों पर गंभीर आरोप लगाए है। निदा खान ने कहा कि जेल में बंद मौलाना तौकीर रजा उनके खिलाफ साजिश रच रहे हैं और अपने गुर्गों के जरिये उन पर जानलेवा हमला कराया गया है। उन्होंने कहा कि यह हमला कोई सामान्य वारदात नहीं बल्कि पहले से रची गई योजना का हिस्सा है। इसके पीछे उन्होंने अपने पति शीरान रजा और मौलाना तौकीर रजा के लोगों को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने कहा हमले के बाद उनके परिवार में डर का माहौल है। शिकायत के बाद पुलिस आई, लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। उन्होंने पुलिस की कार्रवाई पर भी सवालिया निशान उठाए हैं।

आरटीआई कार्यकर्ता ने एसआईआर हेल्प डेस्क का किया गठन

उझारी, अमृत विचार : बीएलओ की शिथिलता के चलते एसआईआर का काम तेजी नहीं पकड़ पा रहा है। लोग गणना प्रपत्र भरवाने के लिए परेशान नजर आ रहे हैं। नागरिकों की सुविधा के लिए सामाजिक एवं आरटीआई कार्यकर्ता अलाउद्दीन सैफी ने हेल्प डेस्क का गठन किया। नगर पंचायत उझारी में बीएलओ द्वारा गणना प्रपत्र तो वितरित कर दिए गए परंतु उन्हें भरने का काम मतदाताओं पर छोड़ दिया है। प्रत्येक मतदाता के पास तो 2003 की वोटर लिस्ट उपलब्ध नहीं है जिस कारण वह अपना गणना प्रपत्र नहीं भर पायेगा। किसी के पास 2003 की वोटर लिस्ट उपलब्ध भी है, तो वह फॉर्म भरने में पूरी तरह प्रशिक्षित नहीं है। एसआईआर हेल्प डेस्क में शाकिर मसूदी एवं शहाबुद्दीन सैफी भी भूमिका निभा रहे हैं। लोगों ने मांग की है कि चुनाव आयोग के निर्देशानुसार बीएलओ घर-घर जाकर गणना प्रपत्र को सही प्रकार से भरें ताकि भोली भोली जनता में कोई भ्रम पैदा न हो और गणना प्रपत्र का कार्य समय से पूर्ण किया जा सके।

डीएम ने गणना प्रपत्रों के कार्यों को परखा

अमरोहा,अमृत विचार : डीएम निधि गुप्ता ने अमरोहा विधानसभा के अम्बेडकर छात्रावास अहमद नगर और प्रकाश इंटर कॉलेज किशनगढ़ बूथों के अंतर्गत भाग संख्या 1 से 6 एवं भाग संख्या 41 से 50 का भ्रमण किया। बीएलओ द्वारा किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने एसआईआर में गणना प्रपत्र को बीएलओ एप पर डिजिटाइज करने के संबंध में विशेष दिशा निर्देश दिए। जहां प्रगति कम थी उन बूथ पर बीएलओ को विशेष ध्यान देने हेतु निर्देशित भी किया। सभी बीएलओ एवं सुपरवाइजर को यह निर्देश भी दिए गए की प्रतिदिन प्रत्येक बीएलओ द्वारा कम से कम 100 फार्मो को बीएलओ एप पर डिजिटाइज्ड करवाना है, तथा साथ ही साथ ज्यादा से ज्यादा गणना पत्रों को मतदाता से कलेक्ट करना है। कुछ भागों में प्रगति खराब पाई गई जिस पर जिलाधिकारी ने नाराजगी जताते कहा कि समय से डिजिटाइज का कार्य पूर्ण न करने वाले बीएलओ का वेतन बाधित किया जाएगा। उन्होंने स्पष्ट कहा कि इस कार्य में लापरवाही किसी सूरत में बर्दाश्त नहीं की जाएगी। कोई गलत फॉर्म फीड न हो, जो डुप्लीकेट हो उन्हें डुप्लीकेट मार्क किया जाए। उप जिलाधिकारी सदर शैलेश कुमार दुबे सहित संबंधित उपस्थित रहे।

मदरसों की एटीएस जांच कराने पर भड़के शहाबुद्दीन

बरेली, अमृत विचार : सरकार की ओर से प्रदेश के मदरसों की जांच एटीएस से कराए जाने का ऑल इंडिया मुस्लिम जमात ने विरोध किया है। राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना मुफ्ती शहाबुद्दीन रजवी ने कहा कि मदरसे अल्पसंख्यक विभाग के अधीन हैं। इनकी अलग-अलग सालों में तीन बार जांच कराए जा चुकी है, अब फिर चौथी बार एटीएस से जांच कराने की जरूरत नहीं है। प्रदेश के सभी मदरसे अल्पसंख्यक विभाग और मदरसा एजूकेशन बोर्ड के मातहत चल रहे हैं। एटीएस आपराधिक मामलों में जांच करती है, शिक्षा के मामलों में नहीं। अगर सरकार को जांच करानी है तो अल्पसंख्यक विभाग की ओर से कराई जाए। मौलाना ने महंत राजूदास के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि भारत का 1947 में एक बार बंटवारा हो चुका है, अब दोबारा बंटवारे की बात करना समाज और देश को नुकसान पहुंचाने वाली बात है।

प्रदीप मिश्रा ने ठोंकी बार काउंसिल चुनाव के लिए ताल

चंदौसी,अमृत विचार : चंदौसी बार एसोसिएशन के सभागार में बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश के सत्र 2026 के चुनाव के लिए सदस्य पद पर प्रदीप कुमार मिश्रा के नामांकन को लेकर अधिवक्ता सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में आगामी चुनाव कार्यक्रम, जो 16 जनवरी 2026 से 31 जनवरी 2026 तक निर्धारित है, पर चर्चा की गई। अधिवक्ताओं ने प्रदीप कुमार मिश्रा के समर्थन में एकजुटता दिखाई और उन्हें अधिकतम मत दिलाने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में अध्यक्ष विनोद कुमार सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता राजेश सिंह, नजर कुरैशी, शकील वारसी, सगीर सैफी, सुनील सिंह, राजुल राघव, संदीप कुमार सिंह सहित बड़ी संख्या में अधिवक्ता मौजूद रहे।

दो स्थानों पर मतदाता प्रपत्र न करें जमा, होगी सजा

कार्यालय संवाददाता, बिजनौर

अमृत विचार : उप जिला निर्वाचन अधिकारी तथा अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व वान्या सिंह ने कहा कि किसी मतदाता का नाम एक से अधिक स्थानों पर दर्ज है, तो उन्हें केवल एक ही स्थान पर गणना प्रपत्र भरना अनिवार्य है। यदि कोई व्यक्ति दो स्थानों पर मतदाता के रूप में अपनी प्रविष्टि बनाए रखने का प्रयास करता है, तो उसके विरुद्ध कार्रवाई करते हुए एक वर्ष तक की जेल हो सकती है।

उन्होंने कहा कि जो मतदाता वर्ष 2003 या उससे पूर्व से पंजीकृत हैं, उन्हें पिछली मतदाता सूची में दर्ज विवरण के अनुरूप जानकारी भरनी होगी। इसके लिए वे संबंधित वर्ष की मतदाता सूची में अपना नाम, भाग संख्या और अन्य विवरण देख सकते हैं। यदि किसी मतदाता के पास फार्म भरने के लिए सभी विवरण उपलब्ध नहीं हैं, तो अपना नाम, मोबाइल नंबर और माता-पिता का नाम भरकर भी प्रपत्र जमा कर सकता है। शेष दस्तावेज वे ड्राफ्ट प्रकाशन के बाद भी उपलब्ध करा सकते हैं। उन्होंने जोर दिया किमतदाता प्रपत्र भरने में देरी न करें। यदि कोई मतदाता अनाथ है, तो वह उस व्यक्ति का विवरण दे सकता है जिसे उसने अभिभावक या संरक्षक माना है।

किसानों ने गन्ना जलाकर जताया विरोध

संवाददाता, हसनपुर

गन्ने को प्रतीकात्मक जलाकर विरोध जताते किसान। ● अमृत विचार

- गन्ना मूल्य 500 रुपये प्रति क्विंटल करने की मांग

अमृत विचार : बृहस्पतिवार को भारतीय किसान यूनियन चौधरी करतार सिंह गुट के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी महावीर सिंह के आवाहन पर प्रदेश उपाध्यक्ष चौधरी चेतन सिंह के नेतृत्व में ब्लॉक हसनपुर के ग्राम राजपुर में किसानों ने गन्ने की होली जलाकर गन्ना मूल्य में सिर्फ 30 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ाने का विरोध प्रकट किया।

चौधरी चेतन सिंह ने कहा कि सरकार ने गन्ने का रेट 30 प्रति क्विंटल की बढ़कर कर 400 प्रति क्विंटल की घोषणा की थी। यह किसानों के साथ धोखा किया गया है। गन्ने की लागत को देखते हुए कम से कम 500 प्रति क्विंटल का रेट घोषित करना चाहिए था। युवा प्रदेश अध्यक्ष चौधरी जगदीश सिंह ने कहा कि हमारे संगठन द्वारा इस किराए की बढ़ोतरी को लेकर आंदोलन जारी रहेगा। इंद्रपाल सिंह, नेपाल सिंह, वीर सिंह, डॉक्टर कुलदीप सिंह, नेत्रपाल सिंह, ओंकार सिंह, ओमवीर सिंह, पुष्पेंद्र सिंह आदि किसान मौजूद रहे।

बाजार	सेंसेक्स ↑	निफ्टी ↑
बंद हुआ	85,632.68	26,192.15
बढ़त	446.21	139.50
प्रतिशत में	0.52	0.54

सोना 1,26,700 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,58,000 प्रति किलो

अमृत विचार

मुरादाबाद, शुक्रवार, 21 नवंबर 2025

www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

आईटीसी ने सीएसई से अपने शेयर हटाए

नई दिल्ली। विविध कारोबार करने वाली कंपनी आईटीसी ने कलकत्ता स्टॉक एक्सचेंज (सीएसई) से अपने शेयर को स्वेच्छा से हटाने की प्रक्रिया पूरी कर ली है। आईटीसी ने शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि सीएसई ने 20 नवंबर 2025 से आईटीसी के साधारण शेयर को अपनी आधिकारिक एक्सचेंज सूची से स्वैच्छिक रूप से हटाने की मंजूरी दे दी है। यह ध्यान देने योग्य है कि कंपनी के साधारण शेयर, एनएसई और बीएसई पर अब भी सूचीबद्ध हैं। आईटीसी के निदेशक मंडल ने 30 अक्टूबर को हुई बैठक में सेबी (शेयर डीलिस्टिंग) विनियम, 2021 के विनियम 5 व 6 के तहत सीएसई से कंपनी के साधारण शेयर को स्वैच्छिक रूप से हटाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी थी।

आईपीओ से पैजसन एग्रो इंडिया जुटाएगा धन

नई दिल्ली। पैजसन एग्रो इंडिया ने एसएमई श्रेणी में आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के जरिये धन जुटाने के लिए बीएसई लिमिटेड से सैद्धांतिक मंजूरी मिलने की गुरुवार को जानकारी दी। आईपीओ दस्तावेजों (डीआरएचपी) के अनुसार, यह 10 रुपये प्रति शेयर अंकित मूल्य वाले 63.09 लाख से अधिक शेयर के नए निर्गम पर आधारित है। नए निर्गम से हासिल 57 करोड़ की शुद्ध आय का उपयोग आंध्र प्रदेश के विजयनगरम में दूसरा काजू प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए किया जाएगा। कंपनी के शेयर को बीएसई के एसएमई मंच पर सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव है।

वैल्यू 360 को एसएमई आईपीओ की मिली मंजूरी

नई दिल्ली। एकीकृत संचार कंपनी वैल्यू 360 कम्युनिकेशंस लि. को एनएसई से अपने इक्विटी शेयरों को बाजार के एसएमई मंच...इमर्ज पर सूचीबद्ध कराने के लिए सैद्धांतिक मंजूरी मिल गई है। पब्लिक रिलेशन समेत संचार के अन्य कार्यों से जुड़ी कंपनी ने गुरुवार को कहा कि यह मंजूरी सभी नियामक आवश्यकताओं और जरूरी औपचारिकताओं को पूरा करने पर निर्भर है। वैल्यू 360 कम्युनिकेशंस ने जुलाई में कंपनी से जुड़ी जानकारी को लेकर विवरण पुस्तिका जमा की थी। यह सैद्धांतिक मंजूरी उसके बाद एक महत्वपूर्ण कदम है। कंपनी के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक कुणाल किशोर इस मंजूरी की जानकारी दी है।

केंद्रीय बैंक के पास विदेशी मुद्रा का अच्छा भंडार

आरबीआई गवर्नर मल्होत्रा बोले- रुपये के लिए किसी भी स्तर को लक्ष्य नहीं बनाया, डॉलर की मांग से गिरावट

नई दिल्ली, एजेंसी

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने गुरुवार को कहा कि केंद्रीय बैंक ने रुपये के लिए किसी भी स्तर का लक्ष्य नहीं बनाया है और घरेलू मुद्रा में हाल में आई गिरावट की वजह डॉलर की मांग में तेजी है।

गवर्नर ने कहा कि केंद्रीय बैंक के पास विदेशी मुद्रा का काफी अच्छा भंडार है और बाह्य क्षेत्र को लेकर चिंता की कोई आवश्यकता नहीं है। दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनमिक्स में वीकेआरवी राव स्मृति व्याख्यान में मल्होत्रा ने कहा कि आरबीआई की सर्वोच्च प्राथमिकता प्रणाली में वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करना है और केंद्रीय बैंक जहां तक संभव हो, आवश्यक सुरक्षा उपायों एवं सुरक्षा-व्यवस्था को बनाए रखते हुए विनियमनों को सरल बनाने का प्रयास कर रहा है।

● मल्होत्रा बोले- आरबीआई की सर्वोच्च प्राथमिकता में वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करना है

डॉलर के मुकाब ले रुपये के अवमूल्यन से जुड़े सवाल पर उन्होंने विश्वास जताया कि भारत, अमेरिका के साथ एक अच्छा व्यापार समझौता करेगा और इससे देश के चालू खाता शेष पर दबाव कम होगा। उन्होंने कहा कि भारतीय रुपये का हालिया अवमूल्यन व्यापारिक गतिविधियों और अमेरिकी शुल्क मुद्दों के कारण है। मल्होत्रा ने कहा कि हम किसी स्तर को लक्ष्य नहीं बनाते। रुपये में गिरावट क्यों आ रही है? ऐसा मांग के कारण है...यह एक वित्तीय साधन है। डॉलर की मांग है और यदि डॉलर की मांग बढ़ती है तो रुपये में गिरावट आती है। यदि रुपये की मांग बढ़ती है तो डॉलर में गिरावट आती है और रुपया मजबूत होता है। अमेरिकी मुद्रा में व्यापक मजबूती एवं अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में कटौती की कम होती संभावनाओं के बीच रुपया गुरुवार को 23 पैसे टूटकर 88.71 (अस्थायी) प्रति डॉलर पर बंद हुआ।

विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि अमेरिकी फेडरल रिजर्व की बैठक से जुड़े ब्योरे में दिसंबर में नीतिगत दर में कटौती न करने का संकेत मिलने के बाद डॉलर में तेजी आई है और यह 100 के स्तर के पार पहुंच गया। इससे घरेलू मुद्रा पर दबाव बढ़ा है। बैंकिंग क्षेत्र से जुड़े एक अन्य सवाल के जवाब में गवर्नर ने कहा कि जिस तरह से भारतीय बैंक प्रदर्शन कर रहे हैं, बहुत जल्द उनमें से कुछ शीर्ष 100 वैश्विक ऋणदाताओं में शामिल होंगे।

दुनिया की शीर्ष 100 बैंकों की सूची में जल्दी होंगे भारतीय बैंक

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने बृहस्पतिवार को कहा कि आर्थिक विस्तार और बैंकिंग प्रणाली में वृद्धि की गति को देखते हुए, भारत के और भी घरेलू बैंक जल्द ही दुनिया के शीर्ष 100 बैंकों की सूची में शामिल होंगे। मल्होत्रा ने छात्रों को बताया कि कहा कि आरबीआई भारत के कई बड़े बैंकों को वैश्विक सूची में शामिल नहीं कर सकता। जबकि इसमें उन्हें शामिल होना चाहिए। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र में कई बैंक हैं। जिस गति से वे बढ़ रहे हैं, मुझे लगता है कि यह केवल समय की बात है कि दुनिया के शीर्ष 100 बैंकों में हमारे कई बैंक शामिल होंगे। वर्तमान में, केवल भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) और एचडीएफसी बैंक ही दुनिया के शीर्ष 100 बैंकों में शामिल हैं। ये दोनों बैंक क्रमशः 43वें और 73वें स्थान पर हैं। इस महीने की शुरुआत में, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी कहा था कि देश को बड़े और वैश्विक स्तर के बैंकों की जरूरत है और इस संबंध में रिजर्व बैंक और वित्तीय संस्थानों के साथ बातचीत जारी है। उन्होंने कहा था कि यह मौजूदा बैंकों से नए बैंक बनाने से नहीं हो सकता... विलय भी एक रास्ता हो सकता है। सही मायने में आपको एक ऐसे परिवेश की जरूरत है जिसमें ज्यादा बैंक काम कर सकें और आगे बढ़ सकें। भारत में यह माहौल पहले से ही अच्छी तरह से स्थापित है, लेकिन मुझे और ज्यादा गतिशील होने की जरूरत है...।

भारत में इजरायली कंपनियों के लिए निवेश के बड़े अवसर : गोयल

तेल अवीव, एजेंसी

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत में इजराइली कंपनियों के लिए निवेश के काफी अवसर हैं और दोनों देशों के उद्योग बुनियादी ढांचे के विकास, विनिर्माण और कृत्रिम मेधा जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा सकते हैं।

गोयल ने कहा कि दोनों देशों के बीच सहयोग के अन्य क्षेत्रों में वित्तीय प्रौद्योगिकी, कृषि प्रौद्योगिकी, मशीन लर्निंग, क्वांटम कंप्यूटिंग, औषधि, अंतरिक्ष और रक्षा शामिल हैं। उन्होंने इजराइल के आर्थिक मामलों के मंत्री नीर बरकत के साथ भारत-इजराइल व्यापार शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि दोनों देशों के बीच असीमित संभावनाएं और क्षमताएं हैं। यह पहली बार है जब कोई भारतीय वाणिज्य मंत्री इजराइल की यात्रा कर रहा है। गोयल इजराइल में 60 सदस्यीय व्यापार प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे हैं। वह द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए नेताओं और कंपनी प्रमुखों से मिलेंगे। मंत्री ने कहा कि कई ऐसी चीजें हैं जो भारत को एक आकर्षक निवेश गंतव्य बनाते हैं। इनमें लोकतंत्र, जनसंख्या संबंधी लाभांश, डिजिटलीकरण, तेज गति विकास और निर्णायक नेतृत्व हैं।

अक्टूबर में स्थिर रहा आठ प्रमुख उद्योगों का उत्पादन

नई दिल्ली, एजेंसी

● वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने जारी किए आंकड़े

रिफाइनरी उत्पादों तथा इस्पात के उत्पादन में वृद्धि तथा बिजली और कोयला उत्पादन में गिरावट के मिश्रित प्रभाव से अक्टूबर में आठ प्रमुख उद्योगों का उत्पादन इस साल अक्टूबर में सालाना आधार पर स्थिर रहा।

अगस्त 2024 के बाद पहली बार आठ प्रमुख उद्योगों का उत्पादन शून्य या उससे कम रहा है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा गुरुवार को जारी आंकड़ों में बताया कि अक्टूबर 2024 की तुलना में इस साल रिफाइनरी उत्पादों, उर्वरकों, इस्पात और सीमेंट का उत्पादन बढ़ा है जबकि कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस और बिजली के उत्पादन में गिरावट दर्ज की गयी है। रिफाइनरी का उत्पादन 4.6%, इस्पात का 6.7, सीमेंट का 5.3 और उर्वरकों का 7.4% बढ़ा है। वहीं, बिजली उत्पादन में 7.6 और कोयला उत्पादन में 8.5% की गिरावट आई। प्राकृतिक गैस का उत्पादन 5 और कच्चे तेल का 1.2% घट गया। इससे पहले, सितंबर 2025 में 8 प्रमुख उद्योगों के उत्पादन में 3.3 और पिछले साल अक्टूबर में 3.8% की गिरावट रही थी। चालू वित्त वर्ष में अप्रैल से अक्टूबर की अवधि के लिए सालाना उत्पादन में 2.5% की वृद्धि हुई। इस्पात उत्पादन 10.3 प्रतिशत, सीमेंट उत्पादन 7.3, रिफाइनरी उत्पादों का उत्पादन 0.4 और उर्वरक उत्पादन 0.7% बढ़ा है। वहीं, कोयला उत्पादन में 2, कच्चा तेल में 1.1, प्राकृतिक गैस 3.1 और बिजली में 0.1% की गिरावट रही।

कृषि क्षेत्र 10 साल में 4% की वृद्धि बनाए रख सकता है : नीति सदस्य

नई दिल्ली। नीति आयोग के सदस्य रमेश चंद ने गुरुवार को कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र 10 साल में आसानी से 4% की वृद्धि दर बनाए रख सकता है। उन्होंने साथ ही देश की गोदाम अवसंरचना को बेहतर बनाने की जरूरत पर जोर दिया।

उद्योग निकाय पीएचडीसीसीआई के कार्यक्रम में चंद ने कहा कि कृषि उत्पादों की मांग 2.5% की दर से बढ़ेगी। इसलिए, मुझे लगता है कि हम 10 साल में कृषि क्षेत्र में इस 4% की वृद्धि को आसानी से बनाए रख सकते हैं। भारत के कृषि क्षेत्र ने 2025-26 की पहली तिमाही के दौरान 3.7% की वृद्धि दर्ज की। चंद ने कहा, हमारे कृषि उत्पादों की मांग उस दर से नहीं बढ़ रही है। इन उत्पादों का इस्तेमाल उद्योग के लिए करें, या निर्यात बाजार के लिए करें।

व्यय के रिकॉर्ड को समान वर्गीकरण व्यवस्था अपनाएं

नई दिल्ली, एजेंसी

● केंद्र और राज्यों से लेखांकन और लेखा परीक्षा में एकरूपता लाने की कैग ने दी सलाह

नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) ने केंद्र और सभी राज्यों से सरकारी खर्चों को दर्ज करने के लिए मानक श्रेणियों का उपयोग शुरू करने को कहा है। इसका मकसद वित्त वर्ष 2027-28 तक पूरे देश में लेखांकन और लेखा परीक्षा में एकरूपता लाना है। कैग का यह कदम व्यय मदों को अलग-अलग दिखाने को लेकर राज्यों के बीच व्यापक अंतर को दूर करने का प्रयास है।

उप नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सरकारी लेखा) और चेयरपर्सन (जीएएसएबी) जयंत सिन्हा ने कहा कि यह मामला कई पक्षों का ध्यान आकर्षित कर रहा था। साथ ही विभिन्न अवधियों और राज्यों के साथ-साथ केंद्र सरकार के साथ तुलना को भी प्रभावित कर रहा था। कैग ने अलग-अलग स्तर पर व्यय मदों की एक सामान्य सूची अधिसूचित की है। इसे सामान्य तौर पर विभिन्न श्रेणियों में व्यय कहा जाता है। आर्थिक प्रकृति के व्यय को अलग दिखाने में व्यापक विभिन्न अवधियों और राज्यों के साथ केंद्र सरकार के साथ तुलनाओं को भी प्रभावित करती है। अतः, केंद्र और राज्य सरकारों के व्यय के वर्गीकरण के मानकीकरण की जरूरत महसूस की गई है।

कैग कार्यालय द्वारा शुरू की गई इस प्रक्रिया के तहत, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, कुछ राज्य सरकारों, लेखा महानियंत्रक और रक्षा लेखा महानियंत्रक के अधिकारियों को लेकर एक कार्यसमूह का गठन किया गया। कैग के कार्यालय ज्ञापन में कहा गया है, कार्यसमूह की सिफारिशों और इस मुद्दे पर वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग, भारत सरकार के साथ बातचीत के आधार पर, यह निर्णय लिया गया है कि केंद्र सरकार और सभी राज्य सरकारों पर लागू एक समान व्यय मदों की संरचना लागू की जा सकती है। इसमें कहा गया कि केंद्र सरकार और राज्य सरकारों द्वारा लागू की जाने वाली सामान्य मदों की संशोधित सूची को तैयारियों के स्तर को ध्यान में रखते हुए अपनाया जा सकता है। तरजीही रूप से वित्त वर्ष 2027-28 से प्रभावी होना चाहिए।

सिन्हा ने कहा कि व्यय के वस्तु मदों को सुसंगत बनाने वाली कैग की अधिसूचना राज्यों के बजट और लेखा ढांचे को प्रभावित करने वाले दशकों पुराने मुद्दे का समाधान करेगी और राष्ट्रीय सार्वजनिक व्यय क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सुधार होगा। विशेष रूप से राज्यों में सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन को मजबूत करना कैग की रणनीतिक योजना का एक प्रमुख हिस्सा है। उच्च गुणवत्ता वाले लेखा परीक्षण और लेखांकन के माध्यम से जवाबदेही, पारदर्शिता और सुशासन को बढ़ावा देने और सभी हितधारकों को स्वतंत्र आश्वासन प्रदान करने के कैग के मिशन का अभिन्न अंग है।

राष्ट्रीय

बुद्धिजीवी आतंकवादी बन रहे जो अधिक खतरनाक होते हैं

पुलिस ने टिप्पणी करते हुए आरोपियों की जमानत का किया विरोध

दिल्ली दंगा

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली पुलिस ने गुरुवार को फरवरी 2020 के दंगों के मामले में कार्यकर्ता उमर खालिद, शरजील इमाम और अन्य की जमानत याचिकाओं का विरोध करते हुए सुप्रीम कोर्ट में कहा कि जब बुद्धिजीवी आतंकवादी बन जाते हैं तो वे जमीनी स्तर पर गतिविधियां संचालित कर रहे आतंकवादियों से अधिक खतरनाक होते हैं। पुलिस ने कहा कि डॉक्टरों और इंजीनियरों का देश विरोधी कामों में शामिल होना अब एक चलन बन गया है।

दिल्ली पुलिस की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (एएसजी) एसवी राजू ने न्यायमूर्ति अरविंद कुमार और एनवी अंजारिया की पीठ को बताया कि सुनवाई में देरी आरोपियों की वजह से हुई है और वे इसका फ़ायदा नहीं उठा सकते। राजू ने नागरिकता संशोधन कानून के ख़िलाफ़ इमाम के भड़काऊ भाषणों के वीडियो शीर्ष अदालत में दिखाए। वीडियो में इमाम को फरवरी 2020 में दिल्ली में हुए दंगों से पहले 2019 और 2020 में चाखंड, जामिया, अलीगढ़ और आसनसोल में भाषण देते हुए देखा गया। इमाम इंजीनियरिंग स्नातक है। राजू ने कहा कि यह कोई साधारण नहीं है। ये हिंसक प्रदर्शन हैं। वे नाकेबंदी की बात कर रहे हैं।

न्यायमूर्ति कुमार ने पूछा कि क्या भाषण आरोपपत्र का हिस्सा थे, जिसका राजू ने 'हां' में जवाब दिया। एएसजी ने कहा कि सीएए विरोधी प्रदर्शन को अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की भारत यात्रा के दौरान जानबूझकर किया गया था ताकि अंतर्राष्ट्रीय मीडिया का ध्यान आकर्षित किया जा सके। असल मकसद सत्ता परिवर्तन और अर्थव्यवस्था का गला घोंटना और देश में अराजकता पैदा करना था। खालिद, इमाम, गुलफिशा फातिमा, मीरान हैदर और रहमान पर गैरकानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) और पूर्ववर्ती भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) के प्रावधानों के तहत 2020 के दंगों के मास्टरमाइंड होने के आरोप में मामला दर्ज किया गया था। दंगों में 53 लोग मारे गए थे और 700 से ज्यादा घायल हो गए थे। यह हिंसा नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) और राष्ट्रीय नागरिक पंजी (एनआरसी) के खिलाफ बड़े पैमाने पर प्रदर्शन के दौरान भड़की थी।

अब 61 वर्ष में सेवानिवृत्ति होंगे न्यायिक अधिकारी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को मध्य प्रदेश के न्यायिक अधिकारियों की सेवानिवृत्ति की उम्र 60 से बढ़ाकर 61 वर्ष कर दी। प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) बीआर गवई, न्यायमूर्ति प्रसन्ना बी वराले और के. विनोद चंद्रन की पीठ ने एक अंतरिम आदेश में तेलंगाना हाईकोर्ट द्वारा लिए गए इसी तरह के एक फैसले का हवाला दिया। पीठ ने पूछा कि जब राज्य सरकार ऐसा करने को तैयार है तो न्यायिक अधिकारियों को राहत देने से क्यों इन्कार किया जाए। पीठ ने कहा कि यह कहने की जरुरत नहीं है कि न्यायिक अधिकारियों के साथ राज्य सरकार के अन्य कर्मचारी भी उसी सरकारी खजाने से वेतन प्राप्त करते हैं। पीठ ने कहा कि राज्य सरकार के अन्य कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति आयु 62 वर्ष है। न्यायालय ने कहा कि किसी भी मामले में हाईकोर्ट के न्यायाधीशों और जिला न्यायालय के न्यायाधीशों की सेवानिवृत्ति आयु में एक वर्ष का अंतर होता है। हाईकोर्ट के न्यायाधीश 62 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होते हैं और अब मध्य प्रदेश में जिला न्यायालय के न्यायाधीशों की सेवानिवृत्ति आयु 61 वर्ष होगी।

राहुल के खिलाफ अधीनस्थ अदालत की कार्यवाही पर रोक की बढ़ी अवधि

सेना पर की टिप्पणी का मामला

सुप्रीम कोर्ट ने 2022 की भारत जोड़ो यात्रा के दौरान भारतीय सेना के खिलाफ कथित अपमानजनक टिप्पणी से संबंधित एक मामले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ कार्यवाही पर रोक लगाने के अपने अंतरिम आदेश की अवधि को बृहस्पतिवार को चार दिसंबर तक बढ़ा दिया। न्यायमूर्ति एमएम सुंदरेश और सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने मामले की सुनवाई स्थगित करते हुए कहा कि स्थगन के लिए एक पत्र दिया गया है। यह पीठ गांधी की उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी जिसमें उन्होंने इस मामले में अधीनस्थ अदालत के समन आदेश को चुनौती देने वाली याचिका खारिज करने के इलाहाबाद हाईकोर्ट के 29 मई के आदेश को चुनौती दी है। शीर्ष अदालत ने चार अगस्त को लखनऊ की एक अदालत में लंबित मामले में आगे की कार्यवाही पर सुनवाई की अगली तारीख तक रोक लगा दी थी। पीठ ने गांधी से उनकी कथित टिप्पणी को लेकर पहले कहा था, आपको कैसे पता चला कि 2,000 वर्ग किलोमीटर जमीन पर चीनियों ने कब्जा कर लिया है? क्या आप वहां थे? क्या आपके पास कोई विश्वसनीय जानकारी है? उसने कहा, बिना किसी सबूत के आप ये बयान क्यों दे रहे हैं? अगर आप सच्चे भारतीय हैं, तो आप ऐसी बात नहीं कहेंगे।

दो विधायकों का मंत्री बनना पिता के सपने का सच होना : चिराग

पटना, एजेंसी

केंद्रीय मंत्री और लोक जनशक्ति पार्टी (लोजपा)-रामविलास के प्रमुख चिराग पासवान ने बृहस्पतिवार को कहा कि बिहार की नई सरकार में उनकी पार्टी के दो विधायकों को जगह मिलना एक बड़ी जीत है, जिसका सपना उनके दिवंगत पिता राम विलास पासवान ने देखा था।

चिराग ने कहा कि चुनावी जनादेश ने पार्टी पर विकसित बिहार की दिशा में काम करने की बड़ी जिम्मेदारियां भी सौंपी हैं। आज का दिन राम विलास पासवान जी को याद करने का है और बिहार को विकसित बनाने के लिए काम करने का है। यह बड़ा दिन है और इस दिन मैं सबसे पहले अपने नेता व पिता माननीय राम विलास पासवान जी को याद करता हूं। लोजपा (रामविलास) ने विधानसभा चुनाव में 19 सीट पर जीत हासिल की, जिनमें से संजय कुमार और संजय कुमार सिंह ने गुरुवार को मंत्री पद की शपथ ली। चिराग ने कहा कि मुझे पता है कि आज वह (राम विलास पासवान) सबसे ज्यादा खुश होते, जिस ऊंचाई पर वह हमारी पार्टी को देखना चाहते थे, आज पार्टी वहां पहुंची है। आज हमारी पार्टी के दो मंत्रियों ने शपथ ली। परिणाम बताते हैं कि पार्टी ने निश्चित रूप से बड़ी जीत हासिल की है। और मेरा मानना है कि बड़ी जीत के साथ बड़ी जिम्मेदारियां भी आती हैं। मैं उन जिम्मेदारियों से पूरी तरह अवगत हूं।

उन्होंने कहा कि पार्टी अब अपने विजन को पूरा करने के लिए युद्धस्तर पर काम शुरू करेगी। चिराग ने कहा कि आज से ही विकसित बिहार बनाने, बिहार को प्रथम और बिहारी को प्रथम बनाने की दिशा में हम तुरंत कार्य शुरू करेंगे। राजग सरकार में भाजपा के 89, जदयू के 85, लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के 19, हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (सेक्युलर) के पांच और राष्ट्रीय लोक मोर्चा (रालोमा) के चार विधायक शामिल हैं।

नीतीश मंत्रिपरिषद में हुई जातीय संतुलन साधने की कोशिश

पटना। जनता दल-यूनाइटेड (जदयू) के प्रमुख नीतीश कुमार ने दसवीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली और नई मंत्रिपरिषद में जातीय आधार पर संतुलन साधने की पूरी कोशिश की गई है। मंत्रिपरिषद में भाजपा से जहां 14 मंत्री हैं, वहीं जदयू को आठ मंत्री पद मिले हैं। लोजपा (रामविलास) को दो तथा राष्ट्रीय लोक मोर्चा (रालोमो) और हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (हम) को एक-एक मंत्री पद मिला है। मंत्रिपरिषद में ब्राह्मण समुदाय की हिस्सेदारी में काफी कमी देखने को मिली है। पिछली मंत्रिपरिषद में भाजपा ने मंगल पांडे और नीतीश मिश्रा को शामिल किया था, लेकिन इस बार भाजपा और जदयू ने ब्राह्मण प्रतिनिधित्व को आधे से भी कम कर दिया है। भाजपा की ओर से केवल मंगल पांडे को जगह मिली है। राजपूत समुदाय को इस बार सर्वाधिक प्रतिनिधित्व मिला है। भाजपा ने संजय सिंह टाइगर, श्रेयसी सिंह, लेसी सिंह और संजय सिंह जैसे चार नेताओं को शामिल कर अपने पारंपरिक समर्थन आधार को मजबूत करने का संकेत दिया है। भूमिहार समुदाय के दो प्रमुख चेहरों में विजय कुमार सिन्हा और विजय चौधरी के माध्यम से गठबंधन ने संतुलन बरकरार रखा है। इससे यह संदेश गया है कि यह समुदाय अब भी सत्ता समीकरण में महत्वपूर्ण है। कायस्थ समुदाय का प्रतिनिधित्व शहरी राजनीति के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना जाता है। भाजपा ने नितिन नवीन को मंत्री बनाकर राजधानी पटना तथा शिक्षित मध्यमवर्गीय मतदाताओं के बीच अपनी पकड़ मजबूत करने का प्रयास किया है।

बिहार की नई सरकार विकसित भारत में देगी योगदान: जयशंकर

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को रिकॉर्ड 10वीं बार शपथ लेने पर बधाई दी और कहा कि उन्हें भरोसा है कि राज्य में नई राजग सरकार राज्य की तरक्की को तेज़ करेगी और देश को विकसित भारत बनाने में मदद करेगी। विदेश मंत्री ने एक्स पर पोस्ट किया कि नीतीश कुमार को बिहार के मुख्यमंत्री के तौर पर पुनः शपथ लेने पर दिल से बधाई। उप मुख्यमंत्रियों सम्राट चौधरी, विजय कुमार सिन्हा और आज पद संभालने वाले सभी मंत्रियों को शुभकामनाएं। मुझे विश्वास है कि नयी राजग सरकार बिहार की तरक्की को तेज़ करेगी और विकसित भारत की हमारी यात्रा में योगदान देगी।

नई सरकार लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतररक वादों को करे पूरा : तेजस्वी

पटना। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता तेजस्वी प्रसाद यादव ने जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के लिए बधाई दी और कहा कि उन्हें उम्मीद है कि नई सरकार जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरते हुए अपने वादों और घोषणाओं को पूरा करेगी। नीतीश कुमार के शपथ ग्रहण कार्यक्रम में विपक्षी दलों का कोई प्रमुख नेता शामिल नहीं हुआ। तेजस्वी ने एक्स पर नीतीश कुमार को बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने पर हार्दिक बधाई। राजद नेता ने कहा, नई सरकार जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरते हुए वादों और घोषणाओं को पूरा करेगी तथा लोगों के जीवन में सकारात्मक और गुणात्मक परिवर्तन लाएगी।

हिंसा छोड़कर मुख्यधारा से जुड़ रहे नक्सली : मुर्मू

अंबिकापुर, एजेंसी

● छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर में जनजातीय गौरव दिवस समारोह को राष्ट्रपति ने किया संबोधित

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने गुरुवार को कहा कि नक्सली हिंसा का रास्ता छोड़कर मुख्यधारा में शामिल हो रहे हैं तथा केंद्र और राज्य सरकारों के प्रयासों से वामपंथी उग्रवाद का उन्मूलन संभव होगा। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले के मुख्यालय अंबिकापुर में जनजातीय गौरव दिवस समारोह में मुर्मू ने कहा कि आदिवासी समाज को दूसरे अन्य समाजों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ना चाहिए।

उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश में वामपंथी उग्रवाद का रास्ता छोड़कर लोग विकास की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं। केंद्र और राज्य सरकारों के सुविचारित और सुसंगठित प्रयासों से निकट भविष्य में ही वामपंथी उग्रवाद का उन्मूलन संभव हो जाएगा। यह एक बहुत ही संतोषजनक बदलाव है। राष्ट्रपति ने कहा कि 1.65 लाख से अधिक प्रतिभागियों ने हाल ही में आयोजित बस्तर ओलंपिक में हिस्सा लिया। यह बहुत खुशी की बात है। उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है जनजातीय महानायकों के आदर्शों पर चलते हुए, छत्तीसगढ़ के निवासी सशक्त, आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण में अमूल्य योगदान देंगे। मुर्मू ने कहा कि महिलाएं समाज की धरोहर हैं और जब महिलाएं आगे बढ़ती हैं तो समाज आगे बढ़ता है।

मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में भारतीय महिला विश्व कप जीतने वाली क्रिकेट टीम के साथ हाल ही में हुई मुलाकात को याद करते हुए आदिवासी महिला क्रिकेटर क्रांति गौड़ की तारीफ की। मातृ-शक्ति या महिला-शक्ति के स्मरण से मुझे विश्व विजेता भारतीय महिला क्रिकेट टीम की याद आई। उन सभी बेटियों से मैं हाल ही में राष्ट्रपति भवन में मिली थी। जनजातीय समाज की बेटी क्रांति गौड़ ने उस टीम में अपना विशेष स्थान बनाया है।

दिल्ली में एक्यूआई बेहद खराब

नई दिल्ली, एजेंसी

राष्ट्रीय राजधानी में हवा की गुणवत्ता सातवें दिन भी बेहद खराब रही। गुरुवार को वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 398 रहा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के समीर एप के अनुसार, 40 में से 21 केंद्रों पर एक्यूआई गंभीर श्रेणी में दर्ज किया गया। डीटीयू, बुराड़ी, चांदनी चौक, आनंद विहार, मुंडका, ओखला, बवाना और वजीरपुर उन केंद्रों में थे जहां एक्यूआई 400 से ऊपर रहा। गुरुवार को न्यूनतम तापमान 11.4 डिग्री रहा, अधिकतम 27 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।

वर्ल्ड ब्रीफ

ट्रंप ने किए एपस्टीन की फाइलें जारी करने के विधेयक पर हस्ताक्षर

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को उस विधेयक पर हस्ताक्षर कर दिए, जो उनके प्रशासन को यौन अपराधी जेफरी एपस्टीन से संबंधित फाइल सार्वजनिक करने के लिए बाध्य करता है। ट्रंप ने लंबे समय तक इसका विरोध किया था लेकिन अंततः अपनी ही पार्टी के राजनीतिक दबाव के आगे झुक गए। उन्होंने सोशल मीडिया पर इस विधेयक पर हस्ताक्षर करने की घोषणा करते हुए लिखा, डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता एपस्टीन मुद्दे का इस्तेमाल कर रहे हैं ताकि हमारी अद्भुत सफलताओं से ध्यान भटकाया जा सके। अब इस विधेयक के तहत न्याय विभाग को एपस्टीन से जुड़ी सभी फाइल, संचार और 2019 में एक संघीय जेल में उसकी मौत की जांच से संबंधित जानकारी 30 दिन के भीतर जारी करनी होगी।

भारत-पाकिस्तान की नौसेना के जहाज कोलंबो बंदरगाह पहुंचे

कोलंबो। श्रीलंकाई नौसेना ने बृहस्पतिवार को एक बयान में बताया कि भारतीय नौसेना का जहाज आईएनएस सुकन्या 'ऑपरेशनल टर्नअराउंड' के लिए कोलंबो बंदरगाह पहुंच चुका है। 'ऑपरेशनल टर्नअराउंड' का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसमें किसी जहाज को अभियानगत कार्यों को पूरा करने के बाद फिर तैयार किया जाता है, ताकि वह आगे की यात्रा या मिशन के लिए पुनः उपयोग में लाया जा सके। आईएनएस सुकन्या मंगलवार को कोलंबो पहुंचा, जहां श्रीलंका की नौसेना ने परंपराओं के मुताबिक उसका स्वागत किया। आईएनएस सुकन्या कमांडर संतोष कुमार वर्मा की कमान में कोलंबो पहुंचा। इस जहाज की लंबाई 101 मीटर है। इस बीच, उसी दिन ईंधन भरवाने के लिए श्रीलंका पहुंचा पाकिस्तानी नौसेना का जहाज सैफ बुधवार को रवाना हो गया।

दक्षिण कोरिया में 267 यात्रियों को ले जा रहा जहाज समुद्र में फंसा

सोल। दक्षिण कोरिया के पश्चिमी समुद्री क्षेत्र में बुधवार को 267 यात्रियों को ले जा रहा एक यात्री जहाज फंस गया। समाचार एजेंसी योनहास के मुताबिक स्थानीय समयानुसार कल रात 8:17 बजे (1117 जीएमटी) तट रक्षक बल को सूचना मिली कि 246 यात्रियों और 21 चालक दल के सदस्यों को लेकर जा रहा जहाज राजधानी सोल से लगभग 310 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में सिनान काउंटी के एक द्वीप के पास फंस गया है। यह जहाज दक्षिणी रिसॉर्ट द्वीप जेजू से रवाना होकर दक्षिण-पश्चिमी बंदरगाह शहर मोकपो की ओर जा रहा था।

प्रतिबंध लागू होने से पहले अपना डेटा सुरक्षित कर लें सभी किशोर

- ऑस्ट्रेलिया में 10 दिसंबर से शुरू होगा सोशल मीडिया पर प्रतिबंध

मेलबर्न। प्रौद्योगिकी क्षेत्र की दिग्गज कंपनी मेटा ने बृहस्पतिवार को ऑस्ट्रेलिया के हजारों किशोर उपयोगकर्ताओं को दो हफ्तों में अपनी डिजिटल 'हिस्ट्री' डाउनलोड करने तथा फेसबुक, इंस्टाग्राम और थ्रेड्स से अपना खाता हटाने की चेतावनी भेजनी शुरू कर दी है। यह कदम दुनिया में पहली बार लागू होने वाले उस सोशल मीडिया प्रतिबंध से पहले उठाया गया है, जिसके तहत 16 साल से कम उम्र के बच्चों के खाते बंद किए जाएंगे।

ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने दो सप्ताह पहले घोषणा की थी कि मेटा के तीनों मंचों फेसबुक, इंस्टाग्राम, थ्रेड्स के साथ ही स्नैपचैट, टिकटॉक, एक्स और यूट्यूब को भी 10 दिसंबर से 16 वर्ष से कम उम्र के ऑस्ट्रेलियाई खाता धारकों को हटाने के लिए कदम उठाने होंगे।कैलिफोर्निया स्थित मेटा ने बृहस्पतिवार को किशोर खाता धारकों को एसएमएस और ईमेल भेजकर चेतावनी दी कि चार दिसंबर से संदिग्ध नाबालिग उपयोगकर्ताओं की इन मंचों तक पहुंच रोक दी जाएगी। मेटा ने एक बयान में कहा, 'हम आज से प्रभावित किशोरों को सूचित करना शुरू कर रहे हैं ताकि वे अपने संपर्कों और यादों को सुरक्षित कर सकें।' मेटा ने यह भी कहा कि इस अवधि में किशोर उपयोगकर्ता अपनी संपर्क जानकारी अपडेट कर सकते हैं ताकि 16 वर्ष के होने पर वे अपना खाता पुनः सक्रिय करा सकें।

सेहत के लिए सबसे बड़ा खतरा

दुनिया की प्रमुख चिकित्सा पत्रिका लैंसेट में प्रकाशित एक ताजा रिसर्च में अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड के बढ़ते खतरों के प्रति आगाह किया गया है। दुनिया के जाने-माने चिकित्सा विशेषज्ञों की रिसर्च पर आधारित इस रिपोर्ट के मुताबिक अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड के बढ़ते उपयोग की वजह से दुनिया भर में मोटापे, मधुमेह, हृदय रोग, अवसाद और अन्य गंभीर बीमारियों के मामले तेजी से बढ़े हैं। युवावस्था में हृदय की बीमारियां और हार्ट अटैक के पीछे भी अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड की प्रमुख भूमिका है। लैंसेट में प्रकाशित रिपोर्ट में अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड के लगातार बढ़ते खतरों पर सरकारों की गैरजिम्मेदारी का भी प्रमुखता से उल्लेख है जो खतरों की जानकारी होने के बावजूद निहित स्वार्थों की वजह से अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड पर कोई भी पाबंदी लगाने या नीति बनाने में गंभीरता नहीं दिखातीं।

अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड

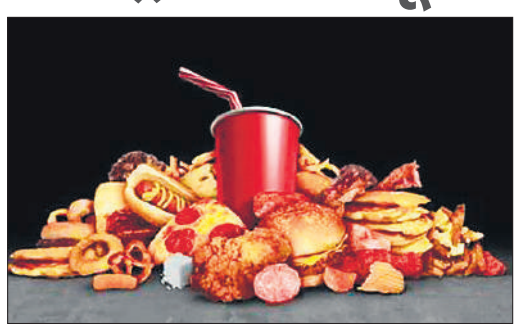

भारत में कितना बड़ा खतरा

- मोटापे, मधुमेह, हृदय रोग, अवसाद जैसी तमाम गंभीर बीमारियों के मामले तेजी से बढ़े हैं। समय से पहले मृत्यु का भी जोखिम काफी बढ़ा है।
- पुरुषों में मोटापे का प्रतिशत 12% से 23% और महिलाओं में 15% से 24% तक बढ़ा है। मोटापे की वजह से भी बीमारियां शिकार बना रही हैं।
- शरीर में सूजन को बढ़ाते हैं, जिससे कैंसर, टाइप-2 डायबिटीज और किडनी से संबंधित गंभीर बीमारियों का खतरा काफी बढ़ जाता है।
- दुनिया में भारत जैसे देश इन उत्पादों के लिए बड़े बाजार बन गए हैं, और ये देश वैश्विक व्यापार समझौते भी प्रतिबंधों को मुश्किल बनाते हैं।

चिकित्सा विशेषज्ञों के सरकार को सुझाव

अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड के सेवन को कम करने और लोगों की पारंपरिक, कम प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों की ओर वापसी को बढ़ावा देने के लिए सरकारों को कड़े स्वास्थ्य नीतिगत कदम उठाने चाहिए। रिपोर्ट में स्वास्थ्य और पोषण नीति निर्धारकों को हालात बेकाबू होने की भी चेतावनी दी गई है।

बच्चों के लिए ज्यादा गंभीर

- अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड में एक्स्ट्रा नमक, चीनी, खराब तेल, आर्टिफिशियल रंग, फ्लेवर, प्रिजर्वेटिव्स तथा एडिटिव्स शामिल होते हैं।
- लैंसेट की रिपोर्ट में विशेषज्ञों ने कहा है कि ये घटक बच्चों की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास को प्रभावित करते हैं।
- लगातार सेवन से कुपोषण, माइक्रोन्यूट्रिएंट की कमी, मोटापा, आंतों के असंतुलन, नींद की समस्या, डिप्रेशन जैसे जोखिम बढ़ते है।

सरकारें क्यों बेपरवाह

- अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड बनाने वाली कंपनियां बड़ा आर्थिक योगदान करती हैं जिसकी वजह से सरकारें प्रतिबंध लगाने से हिचकिचाती हैं।
- बड़ी खाद्य कंपनियां अपनी पहुंच और आर्थिक शक्ति का उपयोग लॉबिंग के लिए करती हैं, जिससे सरकारी नीतियां प्रभावित होती हैं।

बढ़ता कारोबार

- भारत में अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड की सेल 2006 से 2019 तक लगभग 40 गुना बढ़ गई है और इन वर्षों में 0.9 बिलियन डॉलर से बढ़कर 38 बिलियन डॉलर हो गई है।
- अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड में बहुत अधिक स्वाद और कृत्रिम रंगों का उपयोग किया जाता है, जो बच्चों को खासतौर पर लुभाते हैं।
- अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड उत्पाद सुविधाजनक हैं, क्योंकि इन्हें बनाना नहीं पड़ता और ये आसानी से हर जगह उपलब्ध होते हैं।
- भारत जैसे देशों में अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड ताजे और स्वस्थ भोजन की तुलना में सस्ते होते हैं। लोग इस कारण भी इन्हें खरीदते हैं।
- आकर्षक और रंगीन पैकेजिंग के साथ भ्रामक दावों के साथ उत्पादों की मार्केटिंग की जाती है। लोग इनके पीछे छिपे स्वास्थ्य खतरों को नहीं समझ पाते।

जेसीएम न्यायसंगत जलवायु कार्रवाई के लिए बना सबसे महत्वपूर्ण साधन

सीओपी 30 में भारत ने रखा पक्ष, कहा- उत्सर्जन न्यूनीकरण में ये ढांचा सफल

बेलेम (ब्राजील), एजेंसी

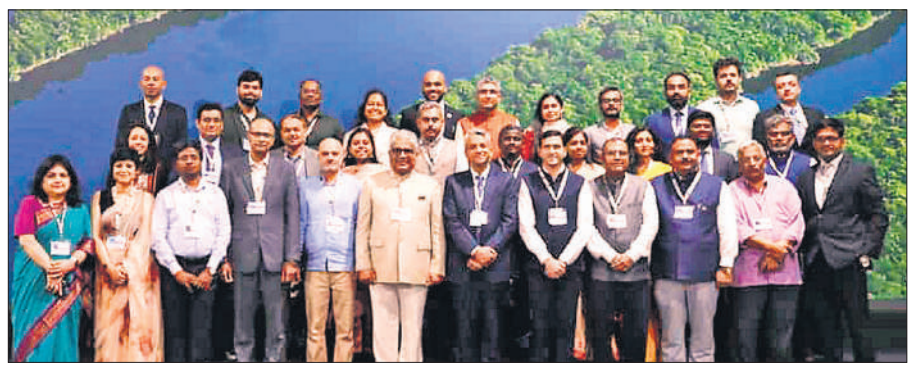

ब्राजील के बेलेम में आयोजित सीओपी 30 सम्मेलन में पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव की अगुवाई में पहुंचा भारतीय दल।

भारत ने कहा कि संयुक्त क्रेडिटिंग तंत्र (जेसीएम) वैश्विक स्तर पर न्यायसंगत एवं व्यापक जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण साधन बनकर उभरा है। यह उन्नत निम्न कार्बन प्रौद्योगिकियों को तेजी से अपनाने की क्षमता रखता है और भारत के उत्सर्जन लक्ष्यों को समर्थन दे सकता है।

पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने बुधवार को कहा कि यहां सीओपी 30 के इतर 11वें जेसीएम साझेदार देशों की बैठक में कहा, जेसीएम जैसे तंत्र जलवायु कार्रवाई को मजबूत करने के साथ-साथ राष्ट्रीय प्राथमिकताओं विशेषकर विकासशील देशों के हितों को भी समर्थन देते हैं। जेसीएम जैसे सहयोगी ढांचे भारत की तरह देशों की विकास प्राथमिकताओं के अनुरूप वैश्विक उत्सर्जन न्यूनीकरण प्रयासों को मजबूत करते हैं।

पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि जेसीएम अनुच्छेद 6 के सहयोगात्मक ढांचे के अनुरूप है और सरकारों तथा निजी क्षेत्र को संयुक्त रूप से उत्सर्जन-न्यूनन परियोजनाएं विकसित करने, वित्त जुटाने, उन्नत तकनीक लागू करने और उत्सर्जन कटौती को पारदर्शी ढंग से आवंटित करने का मार्ग प्रदान करता है। भूपेंद्र यादव ने सभी देशों से जेसीएम को पारदर्शी, प्रभावशाली और न्यायसंगत जलवायु साझेदारी का मॉडल बनाने की अपील की। संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन रूपरेखा सम्मेलन के अंतर्गत होने वाले वार्षिक सीओपी30 में 190 से अधिक देशों के वार्ताकार भाग ले रहे हैं। सीओपी30 का आयोजन ब्राजील के अमेजन क्षेत्र के बेलेम में 10 से 21 नवंबर तक हो रहा है।

जेसीएम में 31 देश साझीदार, 280 परियोजनाएं

सत्र की अध्यक्षता करने वाले जापान के पर्यावरण मंत्री हिरोताका इशिहारा ने बताया कि जेसीएम अब 31 साझेदार देशों तक विस्तृत हो गया है और पेरिस समझौते के अनुच्छेद 6 के तहत 280 से अधिक परियोजनाएं लागू की जा रही हैं। जापान का लक्ष्य है कि इस सहयोग को दीर्घकालिक निवेश, क्षमता निर्माण और लचीलापन परियोजनाओं के माध्यम से और बढ़ाया जाए। भारत और जापान ने इस वर्ष अगस्त में जेसीएम पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे। जेसीएम एक तंत्र है जिसमें भारत और जापान जैसे देश मिलकर कम-कार्बन तकनीक वाली परियोजनाएं लगाते हैं। इन परियोजनाओं से होने वाली उत्सर्जन कमी को दोनों देश क्रेडिट के रूप में बांटते हैं ताकि अपने-अपने जलवायु लक्ष्यों को पूरा कर सकें। यह स्वच्छ तकनीक, निवेश और सहयोग को बढ़ावा देता है।

लूला के साथ जीवाश्म ईंधन के खात्मे पर चर्चा

बेलेम। ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला दा सिल्वा ने संयुक्त राष्ट्र सीओपी30 जलवायु शिखर सम्मेलन में पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव के नेतृत्व वाले भारतीय प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की और उन जरूरी मुद्दों पर चर्चा की जिन पर वार्ताकार अंतिम रूपरेखा तैयार करने के लिए गहन चर्चा कर रहे हैं। दोनों पक्षों ने मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन पर एक संभावित रूपरेखा को लेकर चर्चा की और पता लगाया कि क्या इस शिखर सम्मेलन में इससे जुड़ा कोई खाका पेश किया जा सकता है। राष्ट्रपति सीओपी30 में इस विषय पर काफी जोर दे रहे हैं। बंद कमरे में हुई यह बैठक करीब 20 मिनट चली और इस बातचीत के दौरान दोनों तरफ के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

अमेरिका में कुशल प्रवासियों का स्वागत, इस पर आलोचना झेलने को तैयार : ट्रंप

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि वह ऐसे कुशल प्रवासियों का देश में स्वागत करेंगे जो अमेरिकी श्रमिकों को चिप और मिसाइल जैसे जटिल उत्पाद बनाने की तकनीक सिखाएंगे। ट्रंप ने यह भी माना कि इस मुद्दे पर उन्हें अपने उस समर्थक वर्ग से थोड़ी आलोचना झेलनी पड़ सकती है, जो कड़ी आव्रजन पाबंदियों का समर्थन करता है।

ट्रंप ने बुधवार को अमेरिका-सऊदी अरब निवेश मंच को संबोधित करते हुए कहा कि अमेरिका में बड़ी संख्या में संयंत्र बन रहे हैं जिनमें कई बेहद जटिल कार्यों से जुड़े हैं और वे देश की आर्थिक वृद्धि में बड़ा योगदान देंगे। उन्होंने कहा कि चूंकि इन संयंत्रों में टेलीफोन, कंप्यूटर और मिसाइल जैसे अत्यधिक जटिल उत्पाद बनाए जाएंगे इसलिए कंपनियों को विदेशों से कुशल कर्मियों को लाना होगा जो अमेरिकी श्रमिकों को प्रशिक्षण दे सकें।

नेपाल: जेन जी फिर आक्रामक बारा जिले में दोबारा लगा कर्फ्यू

काठमांडू, एजेंसी

- ओली की पार्टी के कार्यकर्ताओं से झड़प में 10 घायल, आगजनी और गोलीबारी भी हुई

नेपाल के एक जिले में बृहस्पतिवार को उस समय नए सिरे से तनाव पैदा हो गया, जब जेन जी के युवाओं की अपदस्थ प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली की पार्टी के सदस्यों के साथ झड़प में 10 लोग घायल हो गए। इसके बाद अधिकारियों को भारत की सीमा से लगे नेपाल के बारा जिले में स्थिति को नियंत्रित करने के लिए फिर से कर्फ्यू लगाना पड़ा।

'काठमांडू पोस्ट' की अखबार के अनुसार, बारा जिले के सिमारा चौक पर उस समय तनाव बढ़ गया जब युवक ओली की पार्टी सीपीएन-यूएमएल के कार्यकर्ताओं के साथ झड़प के एक दिन बाद सड़कों पर लौट आए। उन्होंने पुलिस पर बुधवार की झड़पों को लेकर अपनी शिकायत में नामित व्यक्तियों को गिरफ्तार नहीं करने का आरोप लगाया। प्रदर्शनकारी पूर्वाह्न 11 बजे से सिमारा चौक पर एकत्र हुए। बारा में प्रशासन ने जान-माल के संभावित नुकसान को रोकने के लिए दोपहर एक बजे से रात आठ बजे तक कर्फ्यू लगा दिया था। समाचार पोर्टल 'खबरहब' के अनुसार, हालांकि, निषेधाज्ञा लागू नहीं हो पाई और प्रदर्शनकारी सड़कों पर उतर आए और पुलिस से भिड़ गए।

प्रदर्शनकारियों द्वारा कर्फ्यू का उल्लंघन किए जाने और आगे बढ़ने पर अधिकारियों ने आंसू गैस के छह गोले दागे और हवा में दो चक्र गोलियां चलाईं।कहा गया, प्रदर्शनकारियों ने सुरक्षाबलों पर पथराव भी किया, जिसमें छह पुलिसकर्मी घायल हो गए, जबकि जेन जी के चार प्रदर्शनकारियों के भी घायल होने की खबर है। पोर्टल के अनुसार, एक अलग घटना में, जेन जी के प्रदर्शनकारियों ने सिमारा बाजार में पुलिस चौकी में आग लगा दी। प्रदर्शनकारियों ने यूएमएल कार्यालय का सामान भी हटा दिया और उसे आग लगा दी। उन्होंने पुलिस पर पहले हुई झड़पों में शामिल यूएमएल कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करने में आनाकानी करने का आरोप लगाया।

350% टैरिफ लगाने की धमकी दी तो मोदी-शरीफ ने मुझे किया फोन

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन, एजेंसी

- ट्रंप ने एक बार फिर किया भारत पाकिस्तान युद्ध रुकवाने का दावा

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया है कि उन्होंने भारत एवं पाकिस्तान को 350 प्रतिशत टैरिफ लगाने की धमकी देकर उनके बीच जारी हमलों को रुकवाया था और इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें फोन करके कहा था कि 'हम युद्ध नहीं करेंगे।' ट्रंप अब तक 60 से अधिक बार इस दावे को दोहरा चुके हैं कि उन्होंने इस साल मई में भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव शांत करने में मदद की जबकि भारत किसी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप के दावे को लगातार नकारता रहा है।

ट्रंप ने बुधवार को कहा, ...मैं झगड़े सुलझाने में अच्छा हूं और हमेशा से ऐसा रहा हूं। मैंने पिछले कुछ साल में, यहां तक कि इससे पहले भी इस दिशा में बहुत अच्छा काम किया है। मैं अलग-अलग लड़ाइयों के बारे में बात कर रहा हू।. भारत, पाकिस्तान परमाणु हथियारों से हमले करने वाले थे। ट्रंप ने 'अमेरिका-सऊदी निवेश मंच' में दावा किया कि उन्होंने परमाणु हथियार रखने वाले दोनों पड़ोसी देशों से कहा था कि वे युद्ध जारी रख सकते हैं लेकिन मैं दोनों देशों पर 350 प्रतिशत टैरिफ लगा रहा हूं। 'अमेरिका-सऊदी निवेश मंच' में सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान भी शामिल हुए। ट्रंप के अनुसार, उन्होंने दोनों देशों से कहा था, मैं नहीं चाहता कि आप लोग एक-दूसरे के खिलाफ परमाणु हथियार का इस्तेमाल करें, लाखों लोगों को मारें और लॉस एंजिलिस पर परमाणु धूल उड़े। ट्रंप ने दावा किया कि भारत और पाकिस्तान दोनों ने उनसे ऐसा नहीं करने के लिये कहा था। प्रधानमंत्री मोदी ने फोन करके कहा, हम युद्ध नहीं करेंगे। इसके बाद उन्होंने मोदी को धन्यवाद दिया।

अब सूडान में गृहयुद्ध समाप्त कराएंगे ट्रंप

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को कहा कि वह अब सूडान में जारी भीषण गृहयुद्ध को समाप्त करने में मदद पर अधिक ध्यान देने की योजना बना रहे हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि उन्होंने मंगलवार को व्हाइट हाउस में सऊदी अरब के शासक के साथ हुई विस्तृत बातचीत में सूडान के गृहयुद्ध पर चर्चा की। क्राउन प्रिंस ने उनसे अनुरोध किया कि वह अपने पद की शक्ति व प्रभाव का उपयोग कर युद्ध को समाप्त करने में मदद करें। सूडान पर नियंत्रण के लिए जारी संघर्ष में 40,000 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है और 1.4 करोड़ से अधिक लोग विस्थापित हुए हैं, जिससे यह विश्व का सबसे बड़ा मानवीय संकट बन गया है।

बांग्लादेश में सुप्रीम कोर्ट ने अंतरिम सरकार की बहाली का आदेश दिया

ढाका, एजेंसी

बांग्लादेश के उच्चतम न्यायालय ने किसी राजनीतिक दल के प्रति झुकाव नहीं रखने वाली अंतरिम सरकार को बहाल करने का बृहस्पतिवार को आदेश दिया।

प्रधान न्यायाधीश सैयद रेफात अहमद के नेतृत्व वाली उच्चतम न्यायालय के शीर्ष अपीलीय प्रभाग ने यह आदेश जारी किया। इस आदेश में पिछले संवैधानिक प्रावधान को बहाल किया, जिसे अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना की अवामी लीग सरकार के दौरान रद्द कर दिया गया था। हालांकि, उच्चतम न्यायालय के फैसले में इस प्रणाली को धीरे-धीरे लागू करने की बात कही गई है। शीर्ष अदालत ने कहा कि यह योजना 13वें संसदीय चुनावों पर लागू नहीं होगी, जिससे अब प्रतिबंधित हो चुकी अवामी लीग चुनाव की दौड़ से बाहर हो जाएगी। बांग्लादेश में अंतरिम सरकार प्रणाली की शुरूआत 1996 में हुई थी और उसके बाद दो सेवानिवृत्त प्रधान न्यायाधीशों की निगरानी में हुए दो चुनावों में 90 दिनों के भीतर विजेता को सत्ता हस्तांतरित कर दी गई।

फैसले के अनुसार, मुहम्मद यूनुस की मौजूदा अंतरिम सरकार फरवरी में प्रस्तावित चुनाव की देखरेख करेगी, जबकि उसके बाद का चुनाव बहाल की गई कार्यवाहक सरकार प्रणाली के तहत होगी।

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच सहयोग के सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय विस्तार

नई दिल्ली, एजेंसी

- ऑस्ट्रेलियन समकक्ष पेनी वॉन्ग के साथ बैठक में बोले जयशंकर

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच सहयोग के सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है, जिनमें व्यापार तथा निवेश, रक्षा तथा सुरक्षा, शिक्षा तथा कौशल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष तथा ऊर्जा शामिल हैं। जयशंकर ने ऑस्ट्रेलिया की अपनी समकक्ष पेनी वॉन्ग के साथ यहां 16वीं भारत-ऑस्ट्रेलिया विदेश मंत्रियों की रूपरेखा वार्ता की अध्यक्षता की।

जयशंकर ने अपने प्रारंभिक वक्तव्य में कहा, हम अपने प्रधानमंत्रियों को जो सिफारिशें देंगे, वे उनके लिए महत्वपूर्ण होंगी, जिन्हें वे शीघ्र ही मिलने पर संज्ञान में रखेंगे। जयशंकर की यह टिप्पणी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दक्षिण अफ्रीका द्वारा आयोजित 20वें जी-20 समूह के नेताओं के शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 21 से 23 नवंबर तक जोहान्सबर्ग की यात्रा पर रहेंगे। इसके अलावा, ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज की वेबसाइट पर जारी एक बयान के अनुसार वह 20 से 22 नवंबर तक जी-20 समूह के नेताओं के वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग की यात्रा करेंगे। कहा गया है कि दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए, अल्बनीज ऑस्ट्रेलिया के आर्थिक और रणनीतिक हितों को आगे बढ़ाने के लिए विश्व के अन्य नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकें भी करेंगे।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 21 नवंबर, शुक्रवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- मार्गशीर्ष, पक्ष-शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा 14.47 तक तत्पश्चात द्वितीया।

आज का पंचांग

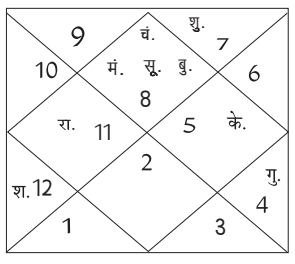

दिशाशूल- पश्चिम, **ऋतु**- हेमंत।
चन्द्रबल-वृषभ, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुंभ।
ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र-अनुराधा 13.56 तक तत्पश्चात ज्येष्ठा।

मेष — आज व्यर्थ के कार्यों में धन खर्च हो सकता है। अनावश्यक बातों पर त्वरित प्रतिक्रिया न दें। कार्यक्षेत्र को लेकर थोड़े तनाव में हो सकते हैं। अपनी बातों को अच्छी तरह रख नहीं पाएंगे। म्युचुअल फंड आदि में किया गया निवेश लाभकारी सिद्ध होगा।

वृष — आज सरकारी कार्यों में आपको सफलता मिलेगी। थोड़ी मेहनत से आपको अधिक अच्छे परिणाम मिल जाएंगे। पैतृक कारोबार में विस्तार हो सकता है। घर में किसी प्रकार के मांगलिक कार्यक्रम हो सकते हैं। रूठे मित्रों को मनाने के लिए दिन अनुकूल है।

मिथुन — आज आयात-निर्यात संबंधी कारोबार में वृद्धि होगी। अधिकारी आपसे अप्रसन्न हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। परिजन आपकी बातों का गलत मतलब निकाल सकते हैं। कार्यक्षेत्र में किसी महिला सहकर्मी से झगड़ा हो सकता है।

कर्क — आज व्यवसाय में नए अनुबंध करने को लेकर सावधानी रखें। प्रेमी जन से अपने दिल की बात शेयर कर सकते हैं। उच्च शिक्षा में उत्तम परिणाम मिलने से मन उत्साहित रहेगा। आयात-निर्यात से जुड़े व्यवसाय में बड़ा धन लाभ होगा। बच्चे अपनी गलतियों में सुधार करेंगे।

सिंह — आज अनजाने लोगों से ऑनलाइन लेनदेन सावधानी पूर्वक करें। गूढ़ आध्यात्मिक चर्चाओं में सम्मिलित हो सकते हैं। छोटे उद्योगों में घाटा हो सकता है। होटल कारोबारियों के व्यापार में कमी होने की आशंका है। दूसरों के मामलों में टांग न अड़ाएं।

कन्या — आज आपके सम्मान में वृद्धि होगी। रुके हुए कार्यों के शुरू होने से आपकी उन्नति होगी। आय के वैकल्पिक स्रोत विकसित कर सकते हैं। व्यवसाय में आपके कारोबार में स्थिरता रहेगी। बुजुर्ग लोग पुराने अनुभवों का स्मरण कर प्रसन्न रहेंगे।

तुला — आज उटपटांग कार्यों में आपका मन उलझेगा। बेरोजगार लोगों को नौकरी की चिंता हो सकती है। कारोबार को स्थिर रखने के लिए उधार लेना पड़ सकता है। आपकी सामाजिक छवि काफी अच्छी रहेगी। तनाव युक्त परिस्थितियों से बचें।

वृश्चिक — आज का दिन कला जगत से जुड़े लोगों के लिए विशेष रहेगा। कार्यक्षेत्र में परिस्थितियां अनुकूल रहेंगी। वित्तीय स्थिति मजबूत रहेगी। परिजनों के साथ अच्छा समय बिताएंगे। लव लाइफ काफी रोमांटिक रहने वाली है।

धनु — आज स्वभाव में विनम्रता का भाव बनाकर रखें। कमर से निचले भाग में दर्द की शिकायत हो सकती है। विवाहेतर संबंधों को लेकर थोड़े आकर्षित हो सकते हैं। आपका विवेक सदैव आपके पक्ष में रहेगा। पर्यटन के लिए यात्रा करने से बचें।

मकर — आज रुके हुए कार्य तेजी से पूर्ण कर लेंगे। नौकरी को लेकर इंटरव्यू में सफलता मिल सकती है। लोग आपकी विचारधारा से बहुत जल्दी प्रभावित हो जाएंगे। बड़े भाई-बहनों के जीवन में कुछ सकारात्मक परिवर्तन आ सकते हैं।

कुंभ — आज आर्थिक समस्याओं का निराकरण होगा। निर्माण कार्यों में गति आएगी। दिनचर्या काफी अच्छी रहेगी। अधीनस्थ कर्मचारियों पर अधिक विश्वास न करें। स्वादिष्ट भोजन का आनंद उठाएंगे। व्यवसाय में सहयोगियों से सहायता ले सकते हैं।

मीन — आज महिलाओं को अत्यधिक प्रशंसा मिलेगी। विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। पिता और गुरुओं का मार्गदर्शन लेना उत्तम होगा। अपनी योग्यता को सिद्ध करने का अवसर मिलेगा। भाग्य आपका साथ देगा।

सुडोकू-167

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

1								
				1				
						3		
	7							
		9						
					3		2	
		8						
				7				
						9		

सुडोकू - 166 का हल

1	6	5	2	9	8	7	3	4
4	9	8	5	3	7	1	6	2
7	2	3	4	6	1	9	8	5
3	1	2	7	8	4	5	9	6
5	7	6	3	2	9	4	1	8
8	4	9	6	1	5	2	7	3
9	8	4	1	5	3	6	2	7
2	3	7	9	4	6	8	5	1
6	5	1	8	7	2	3	4	9

हम अब भी भारत में खेल रहे हैं। हम इस तरह की सतहों पर खेलते हुए बड़े हुए हैं। हां, गुवाहाटी अलग हो सकता है लेकिन मिट्टी भारत में ही कहीं से आई होगी। हम इन हालात को जानने या इन हालात में बहुत तेजी से ढलने के लिए खुद पर विश्वास करना और उनका समर्थन करना चाहेंगे।

-आकाश चोपड़ा

स्टेडियम

मुरादाबाद, शुक्रवार 21 नवंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

गोल्फर दीक्षा डागर ने स्वर्ण पदक जीता

टोक्यो : भारतीय गोल्फर दीक्षा डागर ने आखिरी दौर में 11 अंडर स्कोर करके बृहस्पतिवार को बधिर ओलंपिक में स्वर्ण पदक बरकरार रखा । चौबीस वर्ष की दीक्षा ने 2017 बधिर ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व करके रजत पदक जीता था जब पहली बार खेलों में गोल्फ को शामिल किया गया था । इसके बाद 2021 में उन्होंने स्वर्ण पदक जीता था । दीक्षा ने पहले दिन चार अंडर 68 स्कोर किया जिसके बाद 65 और 72 स्कोर रहा । जकार्ता में 2018 एशियाई खेलों में भाग लेने वाली दीक्षा इसके एक साल बाद 18 वर्ष की उम्र में लेडीज यूरोपीय टूर पर जीत दर्ज करने वाली अदिति अशोक के बाद दूसरी गोल्फर बनी थी । तोक्यो ओलंपिक में अंतरराष्ट्रीय गोल्फ महासंघ (आईजीएफ) से खेलने का अचानक न्योता पाने वाली दीक्षा ने 54 होल में 26 अंडर स्कोर किया ।

प्रणवी ने आईजीपीएल खिताब जीता

मुंबई : प्रणवी उर्स बृहस्पतिवार को यहां आईजीपीएल टूर में इतिहास रचते हुए पुरुष खिलाड़ियों के साथ खेलते हुए पेशेवर टूर्नामेंट जीतने वाली पहली भारतीय महिला गोल्फर बनीं। प्रणवी ने आईजीपीएल आमंत्रण मुंबई में अंतिम दौर में आठ अंडर 60 का हफ्ते का सर्वश्रेष्ठ स्कोर बनाया। प्रणवी का कुल स्कोर 18 अंडर रहा। कल तक शीर्ष पर चल रहे करणदीप कोच्चर अंतिम दौर में 64 के स्कोर से कुल 12 अंडर के स्कोर के साथ दूसरे स्थान पर रहे।

इटली डेविस कप सेमीफाइनल में

बोलोगना (इटली) : दो बार की गत चैम्पियन इटली ने आस्ट्रिया को 2 . 0 से हराकर डेविस कप टेनिस सेमीफाइनल में जगह बना ली जहां उसका सामना बेल्जियम से होगा । इटली के लिये फ्लावियो कोबोली ने फिलिप मिसोलिच को 6 . 1, 6 . 3 से हराकर दूसरा मुकाबला जीता । इससे पहल मातेओ बेरेटिनी ने जुरिज रोडियोनोव को 6 . 3, 7 . 6 से मात दी थी । इटली लगातार 12 डेविस कप मुकाबला जीत चुका है । आखिरी बार उसे 2023 में कनाडा ने ग्रुप चरण में हराया था । अन्य मुकाबलों में स्पेन का सामना चेक गणराज्य से होगा जबकि जर्मनी की टक्कर अर्जेंटीना से होगी ।

रेयान विलियम्स को मिली फीफा की स्वीकृति

नई दिल्ली : अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने कहा कि रेयान विलियम्स भारतीय टीम में चयन के लिए आधिकारिक रूप से पात्र हैं क्योंकि उन्हें अपनी ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता छोड़ने के बाद सदस्य संघ बदलने के लिए खेल की वैश्विक संचालन संस्था फीफा की मंज़ूरी मिल गई है। पर्थ में जन्मे 32 साल के फारवर्ड विलियम्स ने हाल ही में भारतीय नागरिक बनने के लिए अपना ऑस्ट्रेलियाई पासपोर्ट छोड़ दिया था। विलियम्स इंडियन सुपर लीग की टीम बेंगलुरु एफसी के लिए खेलते हैं। एआईएफएफ ने कहा फीफा के प्लेयर्स स्टेटस चैंबर ने 19 नवंबर 2025 को अपना आखिरी फैसला जारी किया जिसमें रेयान विलियम्स के संघ बदलने के अनुरोध को मंज़ूरी दी गई जिससे वह भारतीय राष्ट्रीय टीम का प्रतिनिधित्व करने के लिए आधिकारिक रूप से पात्र हो गए।

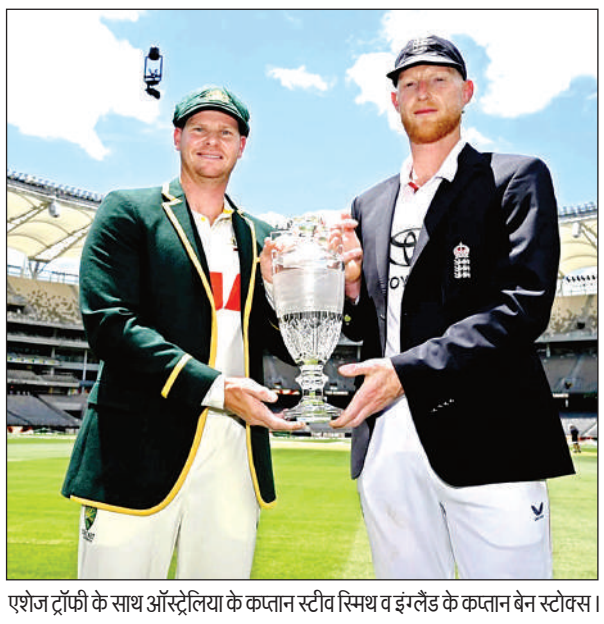

एशेज ट्रॉफी के साथ ऑस्ट्रेलिया के कप्तान स्टीव स्मिथ व इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स।

ऑस्ट्रेलिया में एशेज खिताब का सूखा खत्म करने उतरेगा इंग्लैंड

पर्थ, एजेंसी

ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच शुक्रवार से शुरू हो रही एशेज शृंखला से पहले यक्षप्रश्न यह है कि क्या इंग्लैंड ऑस्ट्रेलियाई सरजमीं पर खिताब का सूखा खत्म कर सकेगा।

ऑस्ट्रेलिया में पिछले 15 टेस्ट में से इंग्लैंड ने 13 गंवाये और दो ड्रॉ खेले हैं जबकि एक भी जीत नहीं मिल सकी। आखिरी बार 2010-11 में इंग्लैंड ने आस्ट्रेलिया को 3-1 से हराया था। अगले सात सप्ताह तक पांच शहरों में चलने वाली एशेज शृंखला से पहले कई बड़े सवाल खड़े हैं। क्या उम्मदराज और प्रमुख खिलाड़ियों के बिना खेलने जा रही आस्ट्रेलियाई टीम अपनी सरजमीं पर 2010-11 से चला आ रहा अपराजेय अभियान बरकरार रख सकेगी। क्या बेन स्टोक्स इंग्लैंड को आस्ट्रेलियाई सरजमीं पर लंबे अर्से बाद एशेज दिला सकेंगे।

ऑस्ट्रेलियाई कप्तान पैट कमिंस और तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड चोटों के कारण पहला टेस्ट नहीं खेल सकेंगे। ऐसे में तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क और आफ स्पिनर नाथन लियोन पर जिम्मेदारी बढ जाएगी। ब्रेंडन डोगेट तेज गेंदबाज स्कॉट बोलैंड के साथ टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण कर सकते हैं जिससे आस्ट्रेलियाई पुरूष टेस्ट एकादश में पहली बार दो देशी खिलाड़ी होंगे। कैमरन ग्रीन हरफनमौला की तरह खेलेंगे।

मार्नस लाबुशेन व एंड्रू मैकडोनाल्ड।

ऑस्ट्रेलिया सलामी बल्लेबाज जैक वेदराल्ड को भी 31 साल की उम्र में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने का मौका मिल सकता है। मार्नस लाबुशेन तीसरे और कार्यवाहक कप्तान स्टीव स्मिथ चौथे नंबर पर उतरेंगे। इंग्लैंड के कप्तान स्टोक्स ने कहा मुझे पता है कि यह कितनी बड़ी सीरीज है। मैं जनवरी में यहां से रवाना होते समय उन भाग्यशाली कप्तानों में नाम दर्ज कराना चाहता हूं जिन्होंने आस्ट्रेलिया में एशेज सीरीज जीती है। इतिहास के बारे में काफी बातें होती है लेकिन अब हमारे पास अपना इतिहास रचने का मौका है। इंग्लैंड टीम में जोफ्रा आर्चर तेज गेंदबाजी का दारोमदार संभालेंगे जिनका साथ देने के लिये मार्क वुड हैं। स्टोक्स खुद गेंदबाजी करेंगे और तेज गेंदबाज ब्राइडन कार्स तथा गुस एटकिंसन को भी मौका मिल सकता है ।

टीमें

ऑस्ट्रेलिया : स्टीव स्मिथ (कप्तान), जैक वेदराल्ड, मार्नस लाबुशेन, ट्रेविस हेड, कैमरन ग्रीन, एलेक्स कारी, मिचेल स्टार्क, नाथन लियोन, ब्रेंडन डोगेट, स्कॉट बोलैंड, उस्मान ख्वाजा

इंग्लैंड : बेन स्टोक्स (कप्तान), जाक क्राउली, बेन डकेट, ओली पोप, जो रूट, हैरी ब्रूक, जैमी स्मिथ, ब्राइडन कार्स, गुस एटकिंसन, जोफ्रा आर्चर, मार्क वुड, शोएब बशीर।

गिल नहीं खेल पाएंगे गुवाहाटी टेस्ट, पंत करेंगे कप्तानी

गले में ऐंठन दोबारा न हो, इसलिए कप्तान को दी गई और आराम की सलाह, अब वनडे सीरीज पर भी पड़ेगा असर

गुवाहाटी, एजेंसी

शुभमन गिल पिछले हफ्ते कोलकाता में पहले टेस्ट के दौरान लगी गर्दन की चोट से पूरी तरह ठीक नहीं हो पाने के कारण शनिवार रिपीट शनिवार को गुवाहाटी में शुरू होने वाले दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ भारत के दूसरे टेस्ट से बाहर हो जाएंगे। उप कप्तान ऋषभ पंत उनकी जगह कप्तान होंगे।

माना जा रहा है कि मेडिकल सलाह के अनुसार, अगर गिल इतनी जल्दी खेलते हैं तो उनकी गर्दन में ऐंठन दोबारा होने का खतरा ज्यादा है। उन्हें और आराम करने की सलाह दी गई है। इस बात का असर 30 नवंबर से दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शुरू होने वाले तीन मैचों के लिए वनडे टीम में उनके सिलेक्शन पर भी पड़ सकता है। उस सीरीज के लिए टीम 23 नवंबर को चुने जाने की उम्मीद है। गिल के बाहर होने की वजह से, इंडिया को उनकी जगह साई सुदर्शन, देवदत्त पडिक्कल और नीतीश कुमार रेड्डी में से किसी एक को चुनना होगा। कोलकाता टेस्ट के दूसरे दिन गिल को हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था, जब भारत की पहली पारी में सिर्फ तीन बॉल खेलने के बाद रिटायर्ड हर्ट होने का फैसला किया गया था। तीसरे दिन बीसीसीआई ने कहा वह टेस्ट में हिस्सा नहीं लेंगे।

अभ्यास सत्र के दौरान ऋषभ पंत, रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव और जसप्रीत बुमराह। एजेंसी

शुभमन का आज होगा फिटनेस टेस्ट

गुवाहाटी : दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टेस्ट के दौरान गर्दन में ऐंठन के शिकार हुए भारतीय कप्तान शुभमन गिल का फिटनेस टेस्ट शुक्रवार को होगा। भारत के बल्लेबाजी कोच सितांशु कोटक ने अभ्यास सत्र से पहले कहा वह तेजी से फिट हो रहा है क्योंकि मैं उससे कल ही मिला था। उसे एक मैच के लिये और आराम दिया जाएगा। शुभमन जैसा खिलाड़ी और वह कप्तान भी है तो टीम को उसकी कमी खलेगी। हमारे पास कई अच्छे खिलाड़ी हैं। वे पेशेवर हैं और टीम के लिये अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं । हम उम्मीद करते हैं कि शुभमन खेलेगा लेकिन नहीं भी खेलता है तो हमारे पास विकल्प हैं।

दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज कगिसो रबाडा के खेलने पर असमंजस कायम

गुवाहाटी : दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजी कोच पीट बोथा ने भारत के खिलाफ शनिवार से शुरू हो रहे दूसरे टेस्ट में कगिसो रबाडा के खेलने की संभावना से इन्कार नहीं किया, लेकिन इस मुख्य तेज गेंदबाज ने बृहस्पतिवार को ट्रेनिंग में हिस्सा नहीं लिया। दुनिया के सबसे अच्छे तेज गेंदबाजों में से एक और दक्षिण अफ्रीकी तेज गेंदबाज आक्रमण का अहम हिस्सा रबाडा मैच से पहले ट्रेनिंग सत्र के दौरान पसलियों में चोट लगने के कारण कोलकाता में पहला टेस्ट नहीं खेल पाए थे। बोथा ने दूसरे टेस्ट में इस तेज गेंदबाज के खेलने की संभावना पर कहा हम कागिसो रबाडा पर नजर रख रहे हैं और अगले 24 घंटे में फैसला करेंगे। गुवाहाटी पहली बार टेस्ट मैच की मेजबानी कर रहा है और बरसापारा स्टेडियम की पिच से दोनों टीम अनजान हैं। बोथा ने पिच के बारे में कहा हमें बताया गया है कि विकेट (गुवाहाटी में) बल्लेबाजी के लिए अच्छा है। लेकिन आप घास रखते हैं या नहीं, इससे बहुत फर्क पड़ता है। दो दिन बचे हैं, हमें यह देखने के लिए इंतजार करना होगा कि क्या यह समय से पहले टर्न लेना शुरू करती है। दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजी कोच को उम्मीद है कि ईडन गार्डन्स में पहले टेस्ट में मेहमान टीम की यादगार जीत के नायकों में से एक ऑफ स्पिनर साइमन हार्मर अंतिम मैच में भी भारतीय बल्लेबाजों को चित्त कर देंगे। साथ ही उनकी फिटनेस को लेकर किसी भी तरह की दिक्कत से भी इनकार किया। बोथा ने कहा साइमन हार्मर के कंधे में कोई दिक्कत नहीं है। अगर गेंद कोलकाता की तरह जल्दी टर्न होने लगे तो बल्लेबाजी क्रम में इतने सारे बाएं हाथ के बल्लेबाज होने पर वह खतरनाक हो जाएंगे। उन्होंने कहा(हमने) आज सुबह इसे देखा। अभी दो दिन बाकी हैं इसलिए यह अंदाजा लगाना मुश्किल है कि वे असल में और घास काटेंगे या नहीं। इससे जाहिर तौर पर फर्क पड़ेगा।

भारत के लिए हर प्रारूप खेल पाना आसान नहीं: कुलदीप

गुवाहाटी : भारत के बाएं हाथ के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव ने स्वीकार किया कि भारत में हर प्रारूप में खेलने का मौका मिलना आसान नहीं है लेकिन कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच आक्रामक मानसिकता से वह अपनी जगह बनाये हुए हैं। कुलदीप आस्ट्रेलिया में पांच मैचों की टी-20 शृंखला के बीच से दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ घरेलू टेस्ट शृंखला खेलने स्वदेश लौट आए थे। उन्होंने पहले टेस्ट में चार विकेट लिए हालांकि भारत 30 रन से हार गया था।

सभी प्रारूप मिलाकर 342 विकेट ले चुके कुलदीप ने जियो स्टार के ' फॉलो द ब्लूज' कार्यक्रम में कहा निश्चित तौर पर आप तीनों प्रारूप खेलना चाहेंगे, लेकिन टेस्ट खेलने में मजा आता है । भारत में सभी प्रारूपों में खेल पाना आसान नहीं है। उन्होंने कहा हर किसी को टेस्ट क्रिकेट पसंद है। सभी को इसमे मजा आता है, लेकिन यह काफी चुनौतीपूर्ण भी है । अगले चार पांच साल टेस्ट क्रिकेट में मेरे लिए काफी अहम हैं तो मैं अपनी फिटनेस बनाए रखने और इसी तरह से खेलने पर फोकस करूंगा। उन्होंने कहा कि अपनी भूमिका को लेकर वह स्पष्ट है और टीम प्रबंधन के सहयोग से वह आक्रामक मानसिकता के साथ खेल पाते हैं । कुलदीप ने कहा एक आक्रामक बल्लेबाज के तौर पर मैं काफी स्पष्ट हूं। मुझे अपनी भूमिका पता है।

गुवाहाटी के बरसापारा स्टेडियम में पिच का निरीक्षण करते भारतीय खिलाड़ी।

अगर वे घास काटेंगे तो फर्क पड़ेगा : बोथा

गुवाहाटी, एजेंसी

दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजी कोच पीट बोथा को लगता है कि बरसापारा स्टेडियम का विकेट बल्लेबाजी के लिए काफी बेहतर होगा, लेकिन वह यह जानना चाहते हैं कि क्या भारतीय क्यूरेटर लाल मिट्टी वाली पिच से घास हटा देंगे। दूसरा और आखिरी टेस्ट शनिवार से यहां शुरू हो रहा है।

बोथा ने दूसरे टेस्ट से पूर्व संवाददाताओं से बात करते हुए कहा जहां तक पिच का सवाल है तो मैंने आज सुबह इसे देखा। अभी दो दिन बाकी हैं इसलिए यह अंदाजा लगाना मुश्किल है कि वे असल में और

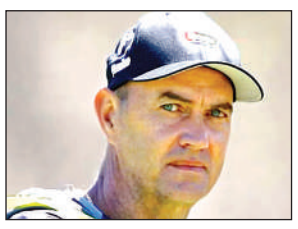

घास काटेंगे या नहीं। इससे जाहिर तौर पर फर्क पड़ेगा।

प्रथम श्रेणी में 217 विकेट चटकाने वाले बोथा ने कहा लेकिन हमने जो सुना है उसके हिसाब से यह बल्लेबाजी के लिए अच्छा विकेट होगा और स्पिन की भूमिका बाद में बनेगी। लेकिन हमें इंतजार करना होगा और देखना होगा कि शायद स्पिन पहले होने लग जाए जैसे पिछले टेस्ट में हुआ था। बोथा का मानना था कि भारत में सामान्य समय से आधा घंटा पहले सुबह नौ बजे मैच शुरू होने से नमी की वजह से नई गेंद की बड़ी भूमिका होगी। उन्होंने कहा, ''मैच नौ बजे शुरू हो रहा है, ज़ाहिर है यह थोड़ा ठंडा होगा। रात में काफी गर्मी होती है लेकिन ज़ाहिर है थोड़ी अधिक नमी होगी इसलिए मुझे लगता है कि पहले घंटे में नई गेंद की भूमिका होनी चाहिए। बोथा ने कहा अगर विकेट बल्लेबाजी के लिए अच्छा है तो पहले बल्लेबाजी करना एक अच्छा विकल्प है लेकिन अगर विकेट कोलकाता जैसा है तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

घर में खेलने का फायदा नहीं छीना जा सकता : आकाश

बेंगलुरु, एजेंसी

भारत और दक्षिण अफ्रीका दोनों गुवाहाटी की पिच से अनजान हैं लेकिन पूर्व सलामी बल्लेबाज आकाश चोपड़ा का मानना है कि ऐसी पिच पर खेलने के अपने पहले के अनुभव के कारण घरेलू टीम अब भी थोड़े फायदे की स्थिति में है।

कोलकाता टेस्ट 30 रन से हारने के बाद भारत की नजरें दो मैच की सीरीज को बराबर करने पर टिकी हैं, लेकिन पहली बार टेस्ट की मेजबानी कर रहे एसीए स्टेडियम में खेलना उसके लिए नई चुनौती होगी। चोपड़ा ने कहा किसी को भी नहीं पता कि गुवाहाटी में क्रिकेट कैसे खेला जाएगा क्योंकि यह एक नया टेस्ट स्थल है। उन्होंने कहा अगर आप वहां पहली बार खेल रहे हैं तो पिच शुभमन गिल या साई सुदर्शन या ऋषभ पंत के लिए उतनी ही अच्छी है जितनी तेम्बा बावुमा या रेयान रिकेलटन के लिए है। इसलिए यह दोनों टीम के लिए एक चुनौती है। भारत के पूर्व बल्लेबाज को कोई शक नहीं कि भारत को घरेलू मैदान पर खेलने का फायदा मिलेगा।

सात्विक-चिराग, लक्ष्य व आयुष क्वार्टर फाइनल में, प्रणय और श्रीकांत बाहर

सिडनी,एजेंसी

भारतीय शटलर आयुष शेट्टी और लक्ष्य ने गुरुवार को शानदार प्रदर्शन करते हुए ऑस्ट्रेलियन ओपन 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट में एकल वर्ग के मुकाबलों में जीत दर्ज करते हुए क्वार्टरफाइनल में जगह बना ली। वहीं पुरुष युगल मुकाबले में सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी-चिराग शेट्टी ने चीनी ताइपे की जोड़ी सु चिंग-हेंग और वू गुआन-शुन को हराकर टूर्नामेंट के अगले दौर में प्रवेश किया।

आज यहां पुरुष एकल वर्ग में 32वें नंबर के खिलाड़ी आयुष शेट्टी ने एक घंटे आठ मिनट तक चले मुकाबले में उलटफेर करते हुए जापान के नाराओका को 21-17, 21-16 से हराकर अंतिम आठ में जगह बनाई। आयुष शेट्टी शुक्रवार को क्वार्टर-फाइनल में लक्ष्य सेन से मुकाबला करेंगे। पुरुष युगल बैडमिंटन रैंकिंग में तीसरे नंबर की सात्विक और चिराग की जोड़ी ने 50वीं रैंक वाली चीनी ताइपे की जोड़ी सु चिंग-हेंग और वू गुआन-शुन की जोड़ी को 37 मिनट तक चले मुकाबले में 21-18, 21-11 से हराया।

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों ने सिडनी के ओलंपिक बुलेवार्ड के क्वेसेंटर में धीमी शुरुआत की। वे सु चिंग-हेंग और वू गुआन-शुन के खिलाफ शुरुआती गेम में 15-9 से पीछे चल रहे थे। इसके बाद सात्विक-चिराग ने तेजी दिखाते हुए बढ़त बना ली और पहला गेम 21-18 से अपने नाम कर लिया। दूसरा गेम एकतरफा रहा।

सात्विक-चिराग की जोड़ी शुक्रवार को शीर्ष आठ में इंडोनेशिया के पांचवें सीड मुहम्मद शोहिबुल फिकरी और फजर अल्फियन से मुकाबला करेंगे। इस बीच, पेरिस 2024 के सेमीफाइनलिस्ट लक्ष्य सेन ने एक घंटे से अधिक देर तक चले मुकाबले संघर्षपूर्ण मुकाबले में चीनी ताइपे के 27वें रैंक वाले ची यू-जेन को 21-17, 13-21, 21-13 से हराया। भारत के दुनिया के 35वें नंबर के एचएस प्रणय इंडोनेशिया के अल्वी फरहान से 21-19, 21-10 से हारकर मुकाबले से बाहर हो गए। पूर्व वर्ल्ड नंबर वन किदांबी श्रीकांत को भी हार का सामना करना पड़ा।

ऑस्ट्रेलियन ओपन

सात्विक-चिराग। फाइल फोटो

विश्व मुक्केबाजी कप | भारतीय महिलाओं ने देश के लिए ऐतिहासिक दिन बनाया, 2028 ओलंपिक के लिए बढ़ेगा आत्मविश्वास

नूपुर, मीनाक्षी, प्रीति और अरुंधति ने स्वर्ण पदक जीते

ग्रेटर नोएडा, एजेंसी

भारत की महिलाओं ने विश्व मुक्केबाजी कप फाइनल्स 2025 में देश के लिए उस समय एक ऐतिहासिक दिन बनाया, जब मीनाक्षी (48 किग्रा), प्रीति (54 किग्रा), अरुंधति चौधरी (70 किग्रा), और नूपुर (80 किग्रा) ने शहीद विजय सिंह पथिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में खचाखच भरे स्टेडियम के सामने स्वर्ण पदक जीते।

उनकी जीत कई खास डिवीजन में हुई जो 2028 ओलंपिक गेम्स में शामिल होंगे, जहां बॉक्सिंग पूरी तरह से जेंडर बराबरी की ओर बढ़ रही है और जो लॉस एंजेलिस की राह पर भारत की बढ़ती कॉम्पिटिटिव ताकत को दिखाता है। उनके शानदार प्रदर्शन ने मेजबान देश के लिए एक शानदार कैंपेन को खत्म

नूपुर

अरुंधति चौधरी

प्रीति।

किया, जिसमें जदुमणि सिंह, पवन बर्तवाल, अभिनाश जामवाल और अंकुश फंगल ने भी रजत पदक जीते, जिससे पुरुषों और महिलाओं दोनों की ओलंपिक-क्लास वेट कैटेगरी में भारत का बढ़ता रुतबा दिखा। सेशन 7 में सात और भारतीय स्वर्ण पदक के लिए लड़ेंगे, जिनमें मौजूदा वर्ल्ड चैंपियन जैस्मीन लैम्बोइरा, दो बार की पूर्व वर्ल्ड चैंपियन निकहत ज़रीन और दो बार के वर्ल्ड बॉक्सिंग कप मेडलिस्ट हितेश गुलिया शामिल हैं। मीनाक्षी ने मौजूदा एशियन चैंपियन फरज़ोना फोज़िलोवा पर लगभग बिना किसी गलती के 5:0 से जीत हासिल करके दिन का माहौल बनाया, और शुरुआती घंटी से ही अपना ट्रेडमार्क आक्रामकता दिखाई। वर्ल्ड चैंपियन ने स्पीड के साथ बहुत तेज एक्यूरेसी का मेल किया, राउंड 1 में ज़बरदस्त लेफ्ट-राइट कॉम्बिनेशन से बाउट शुरू किया और ज़ोरदार जैब, क्लीन काउंटर और एयरटाइट डिफेंस के जरिए पूरा कंट्रोल बनाए रखा। प्रीति ने एक और जबरदस्त 5:0 का परफॉर्मेंस दिया, जिसमें उन्होंने इटली की वर्ल्ड चैंपियनशिप मेडलिस्ट सिरिन चर्राबी पर लगातार दबाव बनाया।

अरुंधति ने अजीजा को 5-0 से हराया

अरुंधति चौधरी ने दिन का सबसे बेहतर प्रदर्शन किया, जिसमें उन्होंने उज्बेकिस्तान की अजीजा जोकिरोवा को 5-0 से हराया। 18 महीने बाद वापसी करते हुए, उन्होंने तेज अटैक और अनुशासित डिफेंस का मिक्सचर किया, डिसाइसिव जैब से खूब स्कोर किया और तीनों राउंड में पूरा टैक्टिकल कंट्रोल बनाए रखा। स्वर्ण पदक की बढ़त तब जारी रही जब नूपुर ने एक टेंशन भरे, टैक्टिकल मुकाबले में उज़्बेकिस्तान की सोटिम्बोएवा ओल्टिनोय को 3 :2 से हराया। पुरुषों के फाइनल में, भारत ने अपनी गिनती में चार रजत पदक जोड़े। जदुमणि सिंह (50) ने दिल से मुकाबला किया लेकिन उज़्बेकिस्तान के असिलबेक जलीलोव से 1 :4 से हार गए।